सूर्य तेजस विशेषांक

दिसम्बर 2022
वर्ष – 13

मूल्य : 40/-
अंक – 04

निखिल-मंत्र-विज्ञान

हिरण्यगर्भाय नमः

पुष्णे नमः

मरीचये नमः

खगाय नमः

आदित्याय नमः

भानवे नमः

सवित्रे नमः

सूर्याय नमः

अर्काय नमः

रवये नमः

भास्कराय नमः

मित्राय नमः

अनंग रति सिद्धि

सरस्वती जीवन आधार

भद्रकाली उच्चाटन साधना

सूर्य सम्मोहन साधना

गुरु मेरे हृदय में : मैं गुरु के हृदय में

चिदानन्द सम्भूति गुरुत्व महादीक्षा

साधना और दीक्षा से ही जीवन गतिशील

प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री, दीक्षा, भेंट आदि की न्यौछावर
आप सीधे ''निखिल मंत्र विज्ञान, जोधपुर'' के SBI Bank A/c. 32677736690
में QR Code Scan कर जमा करवा सकते है -

Nikhil Mantra Vigyan
SBI Bank A/c. - 32677736690
IFSC Code - SBIN0000659

इसके अतिरिक्त आप निखिल मंत्र विज्ञान के

Union Bank of India
A/c. 310001010036403
IFSC Code - UBIN0531006

में भी जमा करवा सकते है।

निखिल मंत्र विज्ञान, जोधपुर कार्यालय को भेजे गये न्यौछावर की जानकारी
WhatsApp 9602334847 पर अवश्य भेजे।

शिविर, दीक्षा, साधना सामग्री, विधान, पूजन आदि की जानकारी हेतु
निखिल मंत्र विज्ञान जोधपुर के गुरु भाईयों से सम्पर्क करें -
रविशंकर - 9799988915, संजय निखिल - 9799988930
मान सिंह - 9799988937/9799988938

निखिल मंत्र विज्ञान के दिल्ली कार्यालय में मनोज भारद्वाज - 9799988970 से सम्पर्क करें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

वर्ष 13 | दिसम्बर 2022

मूल्य मासिक रुपये 40/- | मूल्य वार्षिक रुपये 405/-

निखिल आलेख

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

अंक 04 | पृष्ठ 68

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

संयोजक
श्री राम चैतन्य शास्त्री
मनोज भारद्वाज

व्यवस्थापक मण्डल
संजय 'निखिल'
रविशंकर सिंह

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
नन्द किशोर श्रीमाली
निखिल मंत्र विज्ञान
द्वारा
सालासर ईमेजिंग सिस्टम,
ए-97, सेक्टर-58
नोएडा (उ.प्र.) - 201301
से मुद्रित तथा
निखिल मंत्र विज्ञान,
14 A मेन रोड
हाईकोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर से प्रकाशित

निखिल सम्यक्

साधनाएं

निखिल विचार प्रवाह

14 A, मेन रोड हाईकोर्ट कॉलोनी, सेनापति भवन के पास, जोधपुर, फोनः 9799988915, 9799988930, SMS & WhatsApp 9602334847
आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेंन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोनः 011-27029044, 011-27029045, 9799988970
www.nikhilmantravigyan.org E-mail – nmv.guruji@gmail.com facebook.com\nikhilmantravigyan.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'निखिल मंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायं, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर–न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय द्वारा किसी भी सामग्री का विक्रय नहीं किया जाता, केवल उस पर मंत्र साधना, यज्ञ इत्यादि सम्पन्न किया जाता है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। **पत्रिका में प्रकाशित आलेखों को किसी भी प्रिन्ट या डिजिटल माध्यम से प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक/सम्पादक कार्यालय से स्वीकृती अवश्य प्राप्त कर लें।**

☆ प्रार्थना ☆

सन्मञ्जुलं भवति तद् ननु सुप्रभातं,
भास्वानुदेति हसति नवमञ्जुलस्यं।
सौभाग्य मञ्जुलमयं गुरुपाद पंकजं;
सेवामयं सकल मंगल मातनोति।।

सुप्रभात समस्त मञ्जुल भावों का प्रतीक है, जब सूर्य उदित होता हुआ प्रसन्नता से पूरे विश्व में मञ्जुल महोत्सव को आविर्भूत करता है, शिष्य के हृदय स्थल में स्थापित गुरु चरण कमल (नवमंजुल) नवोदित सौभाग्य का जनक है, जो सेवा के माध्यम से साधक के समस्त जीवन क्रम को मंगलमय बना देते हैं, उन्हीं चरणों में मेरा शत् शत् नमन अर्पित हो।

☆ मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र - धैर्य ☆

जीवन में प्रगति का एकमात्र मुख्य साधन है, **'अटल धैर्य'। जिसके पास धैर्य है, उसके पास संसार का हर सुख, शांति, आनंद, यश, कीर्ति और ऐश्वर्य है और वे ही व्यक्ति जीवन में सफल भी हुए हैं।** धैर्य शब्द का अर्थ है, किसी भी कठिन समय में विचलित न होने वाली शक्ति। इसलिए **मनुस्मृति के छठे अध्याय में जो दस लक्षण बताए गए हैं, उनमें सर्वप्रथम लक्षण धैर्य ही है। मनुस्मृति में धैर्य को 'धृति' के नाम से कहा गया है। धृति माने धारण करना, रोके रखना। धैर्य ही मानव को मानव बनने की प्रेरणा देता है।**

बहुत गई थोड़ी रही, व्याकुल मन मत हो।
धीरज सबका मित्र है, करी कमाई मत खो

अर्थात्– **धैर्य मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र है, जिसने इससे दोस्ती की, उसे जीवन की सारी खुशियाँ हासिल हो सकती हैं। मनुष्य का जो पहला धर्म है, वह अपने धैर्य को कायम रखना। किसी भी परिस्थिति में अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए। जीवन में रात आती है, दिन आता है, रोग आता है, आरोग्य आता है, सुख आता है, दुःख आता है, परंतु किसी भी स्थिति में हमें विचलित नहीं होना चाहिए। जिसके पास धैर्य रूपी पारसमणि है, वही व्यक्ति अपने जीवन में सफल होता है।**

इसीलिए कहा भी जाता है–

धैर्य धरो आगे बढ़ो, पूरन हो सब काम।
उसी दिन ही फलते नहीं, जिस दिन बोते आम।

अपनों से अपनी बात...

मेरे प्रिय साधकों,
शुभाशीर्वाद,

एक बात तो निश्चित है कि आपमें गुरु प्रेम भरपूर है और आपने गुरु मार्ग में चलने का निश्चय कर दिया है उस पर तीव्र गति से गतिमान हो। छत्तीसगढ़ के शिविर में मैंने यह विशेष बात देखी थी कि किस प्रकार प्रत्येक शिष्य अपने-अपने स्थान पर कार्य कर रहा है और इस बार तो उत्साह अपार था। कोराना का भूत उतर चुका है और आपका उत्साह सौ गुना हो गया है। गुरु शिष्य प्रत्यक्ष मिलन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई है इसीलिये आप हर महीनें जोधपुर आते है, दिल्ली आते है। तीन दिन तक ऐसा लगता है कि एक छोटा मिनी शिविर हो रहा है। आईये, गुरु के हृदय में और गुरुधाम - आरोग्यधाम में, निखिल कुंज में आपका स्वागत है।

आज मेरी एक बात सुनो, आपके घर में भी बगीचा होगा, उसकी आप देखभाल करते हो। अभी मैं दिल्ली में जा रहा था देखा कि सड़क के किनारे बढ़ने वाले प्रकृति के वरदान पेड़ों को कांट-छांट कर एक रुप दिया जा रहा था। जिससे वे और अधिक अच्छे लगे, लोग कहते है कि Haze बनायें ताकि सारे पौधें अच्छे दिखें। यहां तक की कभी कांट कर जानवर का रूप देते है, कभी और कोई रुप। ये देखकर मुझे मन में एक विचार आया कि यह कांट-छांट की क्रिया क्यों करते है? स्वभाविक रूप से उन्हें बढ़ने क्यों नहीं देते? ईश्वर कहता है कि मैं प्रकृति में तुम्हें वृक्ष प्रदान कर रहा हूं, जिससे वे छाया दे, फल दे, वर्षा का कारण बनें, पक्षियों को आश्रय मिलें और हम मनुष्य ईश्वर की इस लीला में छेड़छाड़ कर अपनी निगाहों से उसे आकार देना चाहते है।

खैर, यह तो पौधों की बात हुई, पेड़ों की बात हुई। घर-परिवार में हम क्या करते है? सबको अपने अनुसार चलाना चाहते है, कांट-छांट करना चाहते है। शायद इसके मूल में आपके मन में शासन की भावना है। कहने को आप कहते है कि मैं अपने बच्चों को व्यवस्थित कर रहा हूं, उन्हें जीवन के कठोर मार्ग पर चलने के लिये तैयार कर रहा हूं। इसलिये आप कांट-छांट करते रहते हो। पर क्या आपने सोचा है कि आप अपने बच्चों की स्वभाविक प्रवृत्ति, स्वभाविक गुणों के विकास को रोकने की कोशिश नहीं कर रहे है? ईश्वर ने प्रत्येक बालक को, प्रत्येक व्यक्ति को स्वभाविक गुण प्रदान किये है। इसी कारण प्रकृति में और मनुष्य जगत में इतनी विविधता है। सोचों यदि भगवान सारे फूल लाल ही बनाता या सफेद ही बनाता तो क्या आपको आनन्द आता? ईश्वर तो जीवन में सारे रंग भरता है। तो फिर हम क्यों अपना शासन चलाना चाहते है?

देखों, शासन और अनुशासन में बड़ा अन्तर है। शासन में आप चाहते है कि दूसरा आपकी आज्ञा को स्वीकार करें और उसी के अनुसार चले। जबकि अनुशासन का अर्थ है आप उसे वह अवसर प्रदान करें, जिससे वह स्वयं संयमित और स्वभाविक गुणों से भरपूर व्यक्तित्व बनें।

जब संतान घर में जन्म लेती है तो आप समझते है, मेरा पुत्र है, मेरी पुत्री है। इसे मैं यह बनाऊंगा, वह बनाऊंगा बहुत अच्छा विचार है। पर इसमें धीरे-धीरे आपकी अधिकार की भावना बढ़ती जाती है। यह सोचों संतान आपके घर में आई है तो यह ईश्वर का वरदान है। उस वरदान की रक्षा करना, उससे मोह करना आवश्यक है तो इसके साथ यह भी आवश्यक है कि ईश्वर का यह वरदान स्वभाविक रूप से वृद्धि करे। वह अपने गुणों का विस्तार करे, उसमें व्यर्थ कांट-छांट टोका-टाकी का प्रयत्न नहीं करे।

क्या है, दुनिया में सबको प्यार से समझाया जा सकता है। आपका संतान के प्रति मोह विशेष है लेकिन जब धीरे-धीरे यह मोह - प्रेम आज्ञा में बदल जाता है, हर बात में टोका-टाकी में बदल जाता है तो निश्चित रूप से बालक का मन विद्रोही हो जाता है और विद्रोही मन से क्या होता है? आप जो कहते हो उसका उल्टा करने लग जाता है। आपकी आज्ञा को दरकिनार करना शुरु कर देता है। इसीलिये परिवारों में कलह की स्थिति बन जाती है।

एक बात शांत मन से सोचना ईश्वर ने आपको पति बनाया, पत्नी बनाया, संतान दी, माता-पिता दिये, एक परिवार बनाया बिल्कुल शिव परिवार की तरह। जिसमें शिव भी है, शक्ति भी है, गणेश भी है, कार्तिकेय भी है। सब है तो निश्चित रूप से ईश्वर ने कुछ सोच समझकर आपके परिवार की यह इकाई बनाई है। इस इकाई में ही आपको जीवन जीना है। अब घर परिवार में आप प्रेम और स्नेह की बरसात करे या क्रोध और शासन की धूप खिलाएं, यह आपकी इच्छा है। ईश्वर आपके जीवन क्रम में कोई दखल नहीं करता है। यह आपका प्रयत्न होना चाहिये कि **मैं ईश्वर द्वारा प्रदत्त इतने अधिक उपहारों को किस प्रकार से संभालूं और उन्हें विकसित करूं। जिन परिवारों ने आपसी स्नेह, सौहार्द और समभाव का वातावरण होता है, एक दूसरे के बात को ध्यान से सोचने-समझने और ऐडजेस्ट करने की भावना होती है उन परिवारों में अपने आप ईश्वरीय कृपा बरसती है।** ईश्वरीय कृपा कहां बरसेगी? जहां प्रेम होगा। प्रेम के वशीभूत सारे देवता है, अवश्य ही आपके आकर्षण में आयेंगे और आपकी सारी प्रार्थनाएं, आपके सारे प्रयत्न अवश्य सफल होंगे।

आपके पास मन है और यह मन इस शरीर में रोम-रोम में स्थापित है और शास्त्र जिसे आत्मा कहते है वह मूल रूप से परमात्मा की ज्योति है निर्माणकर्त्ता ब्रह्म की ज्योति है जो आपके भीतर प्रज्जवलित हो रही है। इस परमात्मा की ज्योति को तुम्हारा शरीर मिला है और इस शरीर के माध्यम से सबसे पहला काम यह करना है कि यह ज्योति निरन्तर प्रज्जवलित रहनी चाहिये। इसे आरोग्य द्वारा हम सुरक्षित रख सकते है। इस ज्योति को कर्म द्वारा तीव्र कर सकते है। जब यह ज्योति तीव्र रहेगी तो आप स्वयं आभावान हो जायेंगे क्योंकि परमात्मा आभा स्वरूप है।

और यदि आपने स्वयं अपने मन पर, शरीर पर निरन्तर अत्याचार किया, उसका ध्यान नहीं रखा तो क्या होगा? तो क्या वह ज्योति पूर्ण रूप से आभावान रह सकती है, बिल्कुल नहीं। यह ज्योति मंद हो गई तो जीवन में तुम्हें निराशा दिखाई देगी और इस निराशा में तुम्हारे मन में बार-बार यह विचार आयेगा कि सांसारिक नियमों के अनुसार मैं सफल नहीं हूं, मैं खुश नहीं हूं।

देखो भाई, आप तो आज से ही प्रसन्न और खुश रहने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दीजिये। खुशी में ज्योति है और फिर चाहे जीवन में कितना ही अंधकार पूर्ण मार्ग आ जाये अपनी इस ज्योति को जो मूल रूप से परमात्मा की ज्योति है मार्ग अवश्य मिल जायेगा। जो वर्तमान में प्रसन्न है वह भविष्य में भी प्रसन्न रहेगा।

गुरु का सान्निध्य इसलिये आवश्यक है कि तुम्हारा आत्मप्रकाश मंद नहीं हो, इसलिये गुरु उसमें अपने ज्ञान की धारा प्रवाहित करते रहते है। ज्ञान से ही जीवन में आभा है, प्रकाश है। ज्ञान से ही शक्ति है।

व्यर्थ की कांट-छांट छोड़ों, स्वभाविक रूप से गतिशील रहो, गुरु सदैव आपके साथ है..।

नन्द किशोर श्रीमाली

यह प्रकृति तुमसे निरन्तर काम तो करवाती रहेगी, बिना कर्म के तो किसी भी प्रकार की गति नहीं है तो फिर क्यों न हम ऐसे श्रेष्ठ कर्म करें, जिससे हमारी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और आध्यात्मिक उन्नति हो। क्यों न हम उस श्रेष्ठ मार्ग का चयन करें जिस मार्ग पर चलने से हमें सन्तुष्टि प्राप्त होती हो, श्री और यश में वृद्धि होती हो।

नववर्ष के ऊषा काल में देव दिव्य भूमि आरोग्यधाम में सद्गुरुदेव द्वारा साधकों को एक विशेष संदेश प्रवाहित किया जाता है जो साधक के लिये वर्ष पर्यन्त अमृत समान होता है। गुरुवाणी का प्रत्येक शब्द गहरा भाव लिये होता है। गुरु वचन मूलतः शिष्य की आत्मा के वचन ही होते है।

गुरु और शिष्य का मिलन उपनिषद् है। जहां गुरु द्वारा शिष्य की प्राण चेतना के तारों को झंकृत किया जाता है। जिससे शिष्य स्व प्रकाश में अपने आप को देख सके, अनुभव कर सके और अपने जीवन का सन्मार्ग स्वयं निश्चित कर सके।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारि ।।

कलाओं से परे, कल्याण स्वरूप, प्रलय करने वाले, सज्जनों को सदा आनंद देने वाले, त्रिपुरासुर के शत्रु, सच्चिदानन्दघन, मोह को हरने वाले, मन को मथ डालनेवाले हे प्रभो, प्रसन्न होइए, प्रसन्न होइए।

इस जगत की यह विशेषता है कि यह स्वयं की ऊष्मा, ऊर्जा से संयुक्त है और जहां ऊष्मा, ऊर्जा होती है वहां ताप तो अवश्य ही होगा इसीलिये संसार के प्राणी त्रिविध तापों से युक्त होते है। कोई अधिआध्यात्मिक अर्थात् दैहिक ताप से ग्रस्त है। कोई अधिभौतिक अर्थात् धन-धान्य, सम्पत्ति के ताप से संतप्त है। तो कोई अधिदैविक अर्थात् अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूस्खलन से संतप्त होता है। क्या कारण है? मनुष्य संतप्त क्यों है? सबसे पहले शरीर पर विचार करते है तो मनुष्य त्रिविधदोष वात, पित, कफ से ग्रस्त है।

इसी जगत में जब दोष दूर होते है तो त्रिगुण जीवन में आते है और त्रिगुण है - सत्, चित् और आनन्द। कैसे प्राप्त हो यह सत् चित् आनन्द और कैसे समाप्त हो त्रिदोष? तो साधक के लिये इसी जगत में है त्रिशक्ति - महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली। साधक के लिये है त्रिदेव - ब्रह्मा, विष्णु और महेश। संरचना, पालन और संहार के देव।

सबसे बड़ा प्रश्न है कि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य क्या है? परम लक्ष्य है आनन्द की प्राप्ति और यह परमानन्द

केवल एक छोटी सी बात से प्राप्त हो सकता है। जब मनुष्य मोह और विमोह का भेद करना सीख जाता है। किस चीज का मोह रखें और किस चीज से विमोह रखें यह प्रश्न प्रत्येक मनुष्य को त्रिशंकु की तरह संसार में लटका कर रखता है। कभी वह मोह जाल के मकड़ जाल में अपने आपको स्वयं कैद कर लेता है और कभी वह समस्त मोह छोड़कर पलायनवादी बन जाता है।

यह संसार विचित्र नहीं है, ब्रह्म ने, ईश्वर ने तो संसार बहुत ही सरल और सत् चित् आनन्द से युक्त बनाया। मनुष्य ने ही इसे मोह से अपने आपको जकड़ा और दूसरों को भी जकड़ने के प्रयास में निरन्तर रत रहता है और यह कहता है कि मोह के बिना संसार में आनन्द कहां? भौतिकता को उसने मोह मान लिया, वास्तव में भौतिकता और आध्यात्मिकता का देव के साथ सहयोग ही चिदानन्द की प्राप्ति है। जीवन में भौतिक भाव हो, आध्यात्मिक भाव हो और देव तत्व हो।

इस भौतिक मार्ग पर तो सभी चल रहे है लेकिन साधक और शिष्य तो व्यक्तित्व ही अलग होता है। वह जीवन में एक स्थिति में यह जान लेता है कि –

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्य

केवल धन धान्य से मनुष्य को अन्तिम तृप्ति चिदानन्द प्राप्त नहीं हो सकता।

तवैव राजन् मानुषं वित्तम्

केवल धन ही अन्तर्मन की बेचैनी को दूर नहीं कर सकता है तो उसकी आत्मा से आवाज उठती है –

अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन

वित्त से शायद सारे सुख प्राप्त हो सकते है लेकिन अमृत्व चिदानन्द प्राप्त नहीं हो सकता।

चिदानन्द का स्वरूप है महादेव, शिव और यह हर मनुष्य में स्थित है। जो हर समय आनन्द की स्थिति में रहते है वही अपने शिवत्व को, चिदानन्द को प्रतिपल अनुभव कर सकते है।

यह यात्रा मुश्किल नहीं है। कष्टप्रद भी नहीं है। भौतिक सुखों को छोड़ने की प्रवृत्ति भी नहीं है। यह तो गुरु के सान्निध्य में अपने आप जाग्रत हो जाती है और एक विचार आ जाता है कि अब बस बहुत हो गया। मुझे अपने परम तत्व, अपने परमानन्द, अपने अमृत्व, अपने चिदानन्द को अनुभव करना है। उससे ही प्रतिक्षण अनुभूत रहना है।

यो गुरुः स शिवः प्रोक्तो यः शिवः स गुरुः स्मृतः।

यह तो चिदानन्द स्वरूप शिव स्वयं शक्ति को कह रहे है। हे पार्वती! सद्गुरु की सम्भूति के बिना न सत् चित् आनन्द प्राप्त हो सकता है, न ही चिदानन्द प्राप्त हो सकता है। चिदानन्द है, अमृत और अमृतरस का पान किये बिना आनन्द की अनुभूति नहीं हो सकती है और तो और जीवन में संतोष और शांति भी प्राप्त नहीं हो सकते है।

जीवन में हर स्थिति में भक्ति, श्रद्धा और समर्पण का समावेश होना आवश्यक है।

कार्य की पूर्णता के लिये, उस कार्य में आपकी पूर्ण भक्ति होनी चाहिए। ऐसी भक्ति कि आप अपने आपको भूल जाओ, जिस प्रकार भक्त अपने इष्ट का ध्यान करते-करते निमग्न हो जाता है। वह भक्ति रस में डूब जाता है, उसी प्रकार कार्य के लिये भी पूर्ण भक्ति चाहिए....

और यह भक्ति पूर्ण समर्पण और पूर्ण श्रद्धा से युक्त होनी चाहिए।

यदि जीवन में पूर्णता प्राप्त करनी है, अपने अधूरे कार्य पूर्ण करने हैं तो पूर्ण भक्ति, पूर्ण श्रद्धा, पूर्ण समर्पण आवश्यक है...

– सद्गुरुदेव नन्द किशोर श्रीमाली

काल खण्ड में कुछ क्षण ऐसे होते हैं जो अमर होते हैं, ऐतिहासिक होते हैं और जब ये घट जाते हैं तब समय भी अपनी दिशा बदल देता है। ऐसा ही एक ऐतिहासिक क्षण आरोग्यधाम की पावन भूमि पर 24-25 दिसम्बर को निखिल शिष्यों के लिए गुरुदेव के असीम अनुकम्पा से रचा जा रहा है। जो भाग्यशाली साधक हैं, वे इस अविस्मरणीय अनुभव को आत्मसात कर लेंगे, क्योंकि जीवन में भाग्योदय के क्षण तो आते हैं, पर अपने भाग्य के पुनः लेखन का अवसर नहीं आता है। आरोग्यधाम की दिव्य भूमि पर ''चिदानन्द सम्भूति गुरुत्व दीक्षा'' प्रदान करेंगे।

आप 24-25 दिसम्बर 2022 को ''चिदानन्द सम्भूति गुरुत्व महादीक्षा महोत्सव'' में सम्मिलित होने आरोग्यधाम, नई दिल्ली आ जाइए...
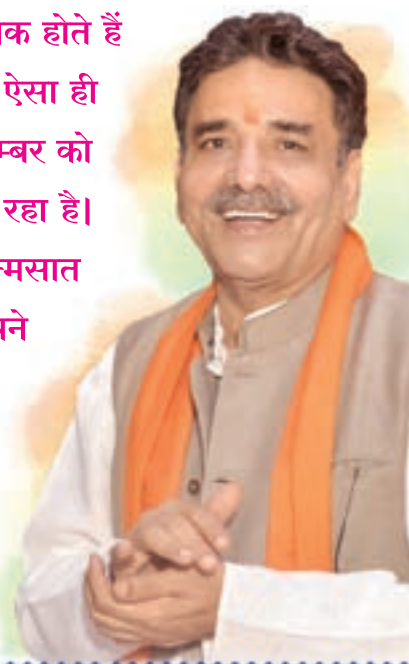
हर समय व्यग्रता, हर समय द्वंद्व, हर समय प्राप्ति की लालसा जीवन में चिदानन्द रूपी अमृत को सुखा देते है और जब भीतर का अमृत कुण्ड ही शुष्क हो जाता है तो फिर त्रिविध ताप उत्पन्न होते है। शरीर की पीड़ा, मन की पीड़ा, व्याधि, जरा, आभाहीनता, अकर्मण्यता और विचारों के भंवरजाल में मन उलझ कर रह जाता है।

मनुष्य को क्या चाहिये?

चतुर्वर्ग है - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। साधक के जीवन में केवल काम की भूख नहीं है वह तो क्षणिक है। साधक के जीवन में धन की अतिभूख नहीं है। वह तो जगत के व्यापार को चलाने के लिये उसे चाहिये। जिसका वह सदुपयोग कर सके। साधक के जीवन में केवल यश, प्रतिष्ठा की क्षुधा नहीं है कि मुझे इसे जीवन में येन-केन प्रकारेण यश, प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाये।

विचारणीय बात है तो फिर मनुष्य किस लिये दौड़ रहा है, क्यों वह अपना मार्ग प्राप्त नहीं कर रहा है? शांत मन से विचार करें तो मनुष्य के जीवन में सबसे बड़ी कामना, इच्छा, क्षुधा, विचार है मेरे जीवन में शांति हो। जहां शांति है वहां सत् चित् आनन्द है। जहां शान्ति है वहां चिदानन्द है।

इसीलिये प्रत्येक यज्ञ में, प्रार्थना में, साधना में अपने दोनों हाथ आकाश की ओर उठाकर साधक ईश्वरीय शक्ति से प्रार्थना करता है -

ओम्।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।

हे परमेश्वर, मेरे लिए द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथ्वी, जल, औषधियां, वनस्पतियां, विश्वदेव, ब्रह्म सभी शान्तिकारक हों। मुझे प्रकृति की शान्ति प्राप्त हो। शान्ति की शान्ति प्राप्त हो। वास्तविक शान्ति प्राप्ति हो।

अब यह तो बात स्पष्ट है कि दौड़ भौतिक सुख के लिये नहीं है, दौड़ शांति के लिये है। यदि जीवन में सत् चित् आनन्द नहीं है, चिदानन्द नहीं है, गुरु सम्भूति नहीं है तो जीवन मृग मरीचिका है, मृग तृष्णा है। भाग रहे है लेकिन लक्ष्य क्या है कुछ पता नहीं।

कस्तूरी कुण्डली बसै, मृग ढूंढै बन मांहि...

गुरु जब जीवन में आते है तब वे अपने शिष्य के जीवन के आर-पार देखते है और उसे बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी बनाते है। वे ज्ञान देते है कि तुम्हें अपनी प्रवृत्तियां अन्तर्मुखी करनी है। तब साधक प्रवृत्ति से निवृत्ति के मार्ग की ओर अग्रसर होता है। बाह्य संसार में बिखरा हुआ, भौतिक सुख उसे लोलुप नहीं बनाता। उसकी लालसाओं में वृद्धि नहीं करता। गुरु सम्भूति उसे आत्मानन्द की ओर ले जाती है। इसीलिये गुरु कहते है -

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत। क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्ग पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

उठो, जागो, जिन शान्तात्मा महात्माओं को परमात्मा का वरदान मिल चुका है उनकी शरण में पहुंचों और उनसे ब्रह्म विद्या का बोध प्राप्त करो। यह मार्ग तेज किये हुए छुरे की धार के समान लांघना कठिन है। कवि लोग कहते हैं कि वह मार्ग दुर्गम है।

मनुष्य को लगता है कि यह मार्ग कठिन है लेकिन जो साधक, जो शिष्य गुरु की सम्भूति में आ जाता है उसके लिये यह मार्ग हरी घास पर चलने के समान है क्योंकि गुरु अपने किसी भी शिष्य को कष्ट में नहीं देख सकते। वे सदैव और सदैव जाग्रति के द्वारा, चेतना के द्वारा, ज्ञान के द्वारा, शिष्य को अमृत्व के मार्ग, चिदानन्द के मार्ग पर अपने साथ ले चलते है। जहां उसकी आत्मा से, उसके मन से वाणी गुंजरित होने लगती है **''चिदानन्द रूप शिवोऽहम्... शिवोऽहम्... ''**

गुरु का अर्थ है ज्ञान और जब गुरु का शक्तिपात होता है तो वे अपनी चेतना से शिष्य को प्रकाशित करते है और उसे चेतन्य बनाकर उसमें बीज रूप में यह ज्ञान आरोपित कर देते है कि हे साधक!, हे शिष्य! तुम स्व प्रकाशित हो, तुम्हारी आत्मा की ज्योति प्रकाशित है और यह आत्मा की ज्योति जगत की भूल-भूलैया में तुम्हें सदैव विशुद्ध मार्ग, ज्ञान मार्ग और आनन्द की ओर ही दिशा निर्देशित करती रहेगी। जीवन के घने अंधकार में भी तुम कभी विचलित नहीं होंओगे, कभी दिग्भ्रमित नहीं होंओगे, कभी भटकोगे नहीं।

सद्गुरुदेव ने कुछ काल पहले ही शिष्यों को कहा कि - प्रिय शिष्य तुम्हें संसार में सुख के लिये, आनन्द के लिये किसी दूसरे की आवश्यकता क्यों है? तुम्हारे भीतर ही सुख और आनन्द का असीम भण्डार है। जिस दिन तुम सद्गुरु की सम्भूति में, सद्गुरु के सान्निध्य में सत् चित् आनन्द के मार्ग की ओर ज्ञान के साथ अपने आपको जोड़ लोगे उस दिन चिदानन्द की अनुभूति प्रारम्भ होगी। अमृत की अनुभूति होगी और यह शाश्वत् अनुभूति सदैव रहेगी।

जगत के सुख और जगत् की अनुभूतियां क्षणिक है। सुख-दुःख क्षणिक है, धूप-छांव है। इनसे विचलित होना शिष्य का धर्म नहीं है।

सद्गुरु वचन है - **चिदानन्द चिदानन्द ही पूर्णमद पूर्णमिदं का मार्ग है। जहां कुछ भी अपूर्ण नहीं, सबकुछ पूर्ण।**

यह अनुभूति, यह ज्ञान, यह चेतना और उस चेतना का विकास गुरु सान्निध्य में, गुरु सम्भूति में ही संभव होता है। गुरु जो बीजारोपरण करते है उसे अपने भीतर कल्पवृक्ष की भांति विकसित करना शिष्य का कर्त्तव्य है।

गुरु है स्वयं आनन्द का स्वरूप, आनन्द प्रदाता। इसीलिये गुरु प्रार्थना में कहा गया है -

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं द्वंद्वातीतं गगनसदृशं तत्वमसयादिलक्ष्यम्। एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षि भूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।

ब्रह्मानन्द में निमग्न, शिष्यों को आनन्दित करने वाले, ज्ञान स्वरूप, सुख-दुःख आदि द्वंद धर्मों से परे, आकाश के समान निर्मल, तत्वमसि आदि वाक्यों के लक्ष्यभूत, अद्वितीय, नित्य, परम पवित्र, सदैव स्थिर, सभी साधकों के मन की वृत्तियों को जानने वाले, सत, रज, तम आदि गुणों से रहित, परम पावन चिन्मय स्वरूप, आनन्द-घन, नित्य, निर्मल, सच्चिदानन्द स्वरूप समस्त दिव्य भावों से युक्त गुरुदेव को मैं श्रद्धायुक्त हृदय से नमन करता हूं।

गुरु का हृदय द्वार तो प्रत्येक शिष्य के लिये खुला है लेकिन प्रथम क्रिया - उत्तिष्ठ! जाग्रत होने की क्रिया, जो शिष्य को स्वयं ही करनी पड़ती है। जो अपने जीवन में स्थिर हो जाता है वह ज्ञान के मार्ग पर नहीं चल सकता। गुरु जड़ से चेतन और चेतन से आत्मसुख की ओर ले जाने की क्रिया सम्पन्न करते है। यही सद्गुरु का शक्तिपात होता है।

दिनांक - 24-25 दिसम्बर 2022

चिदानन्द सम्भूति गुरुत्व महादीक्षा

पांच मित्रों के नाम :-

1. नाम ....

पूरापता ....

.... मोबाइल नं. ....

2. नाम ....

पूरापता ....

.... मोबाइल नं. ....

3. नाम ....

पूरापता ....

.... मोबाइल नं. ....

4. नाम ....

पूरापता ....

.... मोबाइल नं. ....

5. नाम ....

पूरापता ....

.... मोबाइल नं. ....

यशस्वी साधक का नाम, जिसने पांच सदस्य बनाकर दीक्षा में भाग लेने की पात्रता प्राप्त की है।

सदस्य सं. .... मोबाइल नं. ....

नाम ....

पूरापता ....

- जो साधक स्वयं आरोग्यधाम दिल्ली नहीं आ सकते है वे साधक चिदानन्द सम्भूति गुरुत्व महादीक्षा प्राप्त करने हेतु अपना नवीनतम फोटो WhatsApp 9602334847 के माध्यम से जोधपुर कार्यालय भेज दें।
- दीक्षा न्यौछावर 2100/- रुपये आप 'निखिल मंत्र विज्ञान' के SBI A/c. No. - 32677736690 अथवा UBI A/c. No. - 310001010036403 में जमा करा कर Pay-In-Slip की छाया प्रति जोधपुर कार्यालय को WhatsApp कर दें।
- दीक्षा के सम्बन्ध में विशिष्ट निर्देश आपको व्यक्तिगत रूप से जोधपुर कार्यालय (9799988915, 9799988930) और दिल्ली कार्यालय (9799988970) द्वारा प्रदान किये जाएंगे।

वसन्त पंचमी - सरस्वती जयन्ती - 25 जनवरी 2023

ज्ञानं परमं बलम्
ज्ञान सबसे बड़ा बल है

योगः कर्मसु कौशलम्
परिश्रम, उत्कृष्टता का मार्ग है

सफलता पूर्ण जीवन का आधार

विद्याप्रदायिनी सरस्वती

विद्ययाऽमृतमश्नुते
विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है

तेजस्वि नावधीतमस्तु
हमारा ज्ञान तेजवान बने

सृष्टिकाल में ईश्वर की इच्छा से आद्याशक्ति ने अपने को पांच भागों में विभक्त कर दिया। राधा, पद्मा, सावित्री, दुर्गा और सरस्वती।

श्रीकृष्ण के कण्ठ से उत्पन्न होने वाली देवी का नाम सरस्वती हुआ। ऋग्वेद में भी सरस्वती का वाग्देवी के रूप में विवेचन आया है। ऋग्वेद के 10/125 सूक्त के अष्टम् मंत्र के अनुसार वाग्देवी सरस्वती मनुष्यों को सौम्य गुणों की दात्री एवं वसु, रुद्र इत्यादि देवों की रक्षिका है। सृष्टि निर्माण का कार्य भी वाग्देवी का ही कार्य है। वे संसार की निर्मात्री और अधीश्वरी है।

वाग्देवी सरस्वती सर्वत्र व्याप्त है। इनका कोई स्वरूप नहीं है क्योंकि ये निर्लिप्त निरंजन और निष्काम है।

आदिग्रंथों में विवेचन आया है कि वाग्देवी ही ब्रह्मस्वरूपा, कामधेनु और समस्त देवों की प्रतिनिधि है। इन्हीं का स्वरूप विद्या, बुद्धि और सरस्वती है।

माघस्य शुक्लपञ्चम्यां विद्यारम्भदिनेऽपि च।
पूर्वेऽह्नि संयमं कृत्वा तत्राह्नि संयतः शुचिः।।

माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को सरस्वती जयन्ती के रूप में मनाया जाता है। इसे वागेश्वरी जयन्ती और श्रीपंचमी भी कहा जाता है।

वेदों में अमित तेजस्वी, अनन्त गुणशालीनी देवी सरस्वती की पूजा, आराधना के लिये माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि निर्धारित की गई है।

भगवती सरस्वती

इस संसार को गतिमान तो परब्रह्म परमात्मा ही कर रहा है। ब्रह्म की शक्ति ही सब प्राणियों में विद्यमान है। पर यह शक्ति जगत में प्रकट किस रूप में होती है। यह शक्ति जगत में विद्या, बुद्धि, ज्ञान और वाणी के रूप में प्रकट होती है। क्या किसी ऐसे जगत की कल्पना की जा सकती है जिसमें बुद्धि, ज्ञान और वाणी न हो। ऐसा संसार तो गूंगों, बहरों का अंधकारमय संसार हो जायेगा। जहां ज्ञान नहीं वहां जाग्रति नहीं, जहां जाग्रति नहीं वहां नवीनता नहीं, जहां नवीन अविष्कार नहीं वहां चैतन्यता नहीं, जहां चैतन्यता नहीं वहां जीवन पशुवत हो जाता है।

इसीलिये सरस्वती निरन्तर अक्षरों के रूप में ज्ञान अमृत की धारा प्रवाहित करती है। सरस्वती का स्वरूप ही **'शब्द ब्रह्म'** है। संसार में सबसे बड़ी शक्ति ही शब्द ब्रह्म है जिसके कारण ही जगत का व्यवहार चलता है। शब्द नहीं तो जगत में क्या है? शून्य और शून्य में कोई उत्पत्ति नहीं हो सकती। शून्य में कोई तरंगें प्रवाहित नहीं हो सकती। इसीलिये जगत में सरस्वती वाणी के रूप में प्रवाहित होती है। वाणी का गुण तो सभी प्राणियों में लेकिन जो व्यक्ति अपनी वाणी को, शब्द ब्रह्म को बुद्धि, विद्या और ज्ञान से युक्त कर लेता है उसके शब्द चैतन्य हो जाते है। विद्या, बुद्धि को चैतन्य कर देती है चैतन्य बुद्धि ज्ञान को प्रकाशित करता है और ज्ञान ही संसार में मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ बल है।

अधीत्येदं यथाशास्त्रं नरो जानाति सत्तमः।
धर्मोपदेशं विख्यातं कार्याऽकार्यं शुभाऽशुभम्।।
- चाणक्य

जो व्यक्ति शास्त्रों के नियमों का निरन्तर अभ्यास करके शिक्षा प्राप्त करता है उसे सही, गलत और शुभ कार्यों का ज्ञान हो जाता है, ऐसे व्यक्ति के पास सर्वोत्तम ज्ञान होता है और ज्ञानवान व्यक्ति ही जीवन में अपार सफलता को प्राप्त करते हैं।

इस विद्या की, ज्ञान की और शब्द की निरन्तर उपासना आवश्यक है और ज्ञान की प्रदात्री सरस्वती के लिये विख्यात श्लोक है -

सरस्वतीं शुक्लवर्णां सस्मितां सुमनोहराम्।।
कोटिचन्द्रप्रभामुष्टपुष्टश्रीयुक्तविग्रहाम्।
वह्निशुद्धां शुकाधानां वीणापुस्तकधारिणीम्।।
रत्नसारेन्द्रनिर्माणनवभूषणभूषिताम्।
सुपूजितां सुरगणैर्ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः।।
वन्दे भक्त्या वन्दितां च मुनीन्द्रमनुमानवैः।।

साधक यह ध्यान दे कि **सरस्वती की उत्पत्ति सत्व गुण से हुई है। महालक्ष्मी की उत्पत्ति रजो गुण से हुई है और महाकाली की उत्पत्ति तमोगुण से हुई है।** इसलिये सरस्वती की उपासना में श्वेत वस्तुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

सरस्वती की पूजा में अर्पण करने योग्य सांसारिक सामग्री है - दूध, दही, मक्खन, सफेद तिल के लडडू, श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत मिष्ठान्न, श्वेत शर्करा, श्वेत धान्य के अक्षर, नारियल, श्रीफल और ऋतु काल के अनुसार उत्पन्न, उद्‌भव हुए पुष्प और फल।

महार्षि वाल्मिकी, व्यास, वशिष्ठ, विश्वामित्र, शौनक इत्यादि ऋषि सरस्वती साधना से कृतार्थ हुए।

सरस्वती की उपासना से ही ऋष्यश्रृंग, भारद्वाज, देवल तथा जैगीषव्य आदि ऋषियों ने सिद्धि प्राप्त की।

जब महर्षि भगवान वेद व्यास ने, सरस्वती उपासना की तो सरस्वती प्रकट हुई और कहा हे व्यास! तुम मेरी प्रेरणा से रचित वाल्मिकी रामायण पढ़ो, मेरी शक्ति के कारण रामायण सभी काव्यों में सनातन बीज बन गया है।

पठ रामायणं व्यास काव्यबीजं सनातनम्।
यत्र रामचरितंत्र स्यात् तदहं तत्र शक्तिमान्।।

शब्द ब्रह्म है और शब्द सरस्वती का स्वरूप है। ज्ञान ब्रह्म है और ज्ञान सरस्वती का स्वरूप है और ज्ञान पुस्तक के रूप में ऋषियों द्वारा शब्दों के माध्यम से विवेचित किया गया है। इसलिये सदैव पुस्तक की पूजा करनी चाहिये, पुस्तक की पूजा ज्ञान की पूजा है, सरस्वती की पूजा है। अपने जीवन में जितनी पुस्तकें पढ़ सकते है, जितने मंत्र जप कर सकते है उतने अवश्य करने चाहिये।

अपनी वाणी को उचित रूप में प्रयोग लाने हेतु और उसे प्रभावशाली बनाने हेतु सरस्वती की साधना परम आवश्यक है। विद्या और बुद्धि से रहित जीवन अतिसाधारण जीवन है। ज्ञान, विद्या और बुद्धि से संयुक्त जीवन ही श्रेष्ठ मुनष्य जीवन है। इसीलिये संसार में ज्ञानियों की, बुद्धिमानों की और विद्या प्रदान करने वाले शिक्षकों की, गुरूओं की सर्वत्र पूजा की जाती है, उन्हें सम्मान दिया जाता है।

प्रथमं भारती नाम द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवी चतुर्थं हंसवाहिनी।।
पंचम जगती ख्याता षष्ठं वागीश्वरी तथा।
सप्तमं कुमुदी प्रोक्ता अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।
नवमं बुद्धिदात्री च दशमं वरदायिनी।
एकादशं चन्द्रकान्तिर्द्वादशं भुवनेश्वरी।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
जिह्वाग्रे वसते नित्यं ब्रह्मरूपा सरस्वती।।

ज्ञान प्राप्ति पर्व - सरस्वती जयन्ती

पर स्वयं भी धारण करें और अपने बच्चों को भी धारण करायें

'सरस्वती यंत्र'

विशुद्ध ज्ञान, विशुद्ध चेतना, विशुद्ध बुद्धि और विशुद्ध विवेक का प्रस्फुटन

सरस्वती जयन्ती साधकों में 'ऐं' बीज के बीजारोपण का दिवस है, सरस्वती का 'ऐं' बीज जब साधना-उपासना, मंत्र-जप, पूजन से साधक के मन मस्तिष्क में फलता-फूलता है।

'ऐं' बीज की परिपक्वता के स्वरूप सरस्वती अपने साधक को ज्ञान, चेतना, बुद्धि, वाणी आदि स्वरूपों में फल प्रदान करती है। सरस्वती की कृपा से प्राप्त विशुद्ध ज्ञान, चेतना से साधक जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

हे ईश्वर, हे सरस्वती हमें ऐसा जीवन दो जो ज्ञान और विज्ञान से परिपूर्ण हो। जीवन के अज्ञात पथ पर ज्ञान और विज्ञान के दीपक को अपने हाथों में रखकर हम उस यात्रा पर निशंक, भयरहित भाव से आगे बढ़ सके।

आधुनिक शास्त्र जिसे विज्ञान कहते है वही वेद कहते है कि ज्ञान में ही विज्ञान समाया हुआ है। जब तक साधक का विज्ञानमय कोष जाग्रत नहीं होता है तब तक उसे न तो शांति प्राप्त होती है, न सन्तुष्टि और न ही सफलता।

हर व्यक्ति इस सृष्टि में बालक ही है, जिसे नित्य प्रति जानकारी भी चाहिये और उस जानकारी का अपने जीवन में उपयोग भी चाहिये। गुरु अपने शिष्य को सदैव यह कहते है कि तुम पूरे जीवन विद्यार्थी बने रहो अर्थात् ज्ञान अर्जित करते रहो।

ज्ञान की अधिष्ठात्री है सरस्वती और जहां सरस्वती है वहां जीवन की सारी विज्ञान, ज्ञान की कलाएं समाहित हो जाती है। लक्ष्मी चंचला है और सरस्वती ब्रह्म स्वरूपिणी स्थायी है। इसलिये अपने जीवन को निष्कंटक बनाने के लिये नियमित रूप से सरस्वती साधना अवश्य करें और सरस्वती साधना से ही गुरुदेव द्वारा दिया गया चेतना मंत्र **'ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिराम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः'** सिद्ध होता है।

सरल शब्दों में कहा जाये तो बालक, युवा, वृद्ध सबके लिये सरस्वती साधना मन, प्राण और शरीर को चैतन्य करने की साधना है।

इस बार दिनांक **25 जनवरी 2023** को **सरस्वती जयंती** है, यह एक महाकल्प है। इस शुभ अवसर पर सरस्वती की साधना कर हम अपने जीवन को एक श्रेष्ठ आधार प्रदान कर सकते हैं। **पूरे परिवार के साथ सरस्वती-साधना सम्पन्न करें, जिससे परिवार में श्रेष्ठता, साहस, धैर्य एवं सतत् जिज्ञासा आये। बालकों को भी सरस्वती साधना सम्पन्न करवाने से उनके जीवन का आधार श्रेष्ठ बनता है और वे बड़े होकर अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में पूर्ण सफल होते हैं।**

सरस्वती यही तो कहती है कि आपके प्रयास बुद्धि और विवेक से युक्त होने चाहिए। इसी से सफलता स्थाई रहती है।

मैं जानता हूं कि दुःख के वक्त तुमने मेहनत की, बुद्धि का प्रयोग किया और दिमाग को सदा सतेज रखा था, अब जब सुख की घड़ी आयी है तो यह मत समझ लेना कि मेहनत करने की जरूरत नहीं या दिमाग को सक्रिय रखने की आवश्यकता नहीं।

सिद्धि प्राप्त होने के बाद बुद्धि की धार को सदा सतेज रखना ही पड़ता है क्योंकि सिद्धि प्राप्ति के बाद उसे खत्म या नष्ट करने के लिए कई तरह के दुश्मन नये-नये स्वांग रचकर आपके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं। चाहे यह सिद्धि आध्यात्मिक हो या पार्थिव।

एक बात विशेष रूप से ध्यान रखना - सुख के समय में जिसका विवेक और बुद्धि स्थिर रहती है, टिकी रहती है, वो ही जीवन के अंत तक सुगन्धित बना रह सकता है।

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

साधना विधान

सरस्वती साधना की पूर्णता हेतु सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न करें। इस हेतु अपने सामने एक बाजोट पर गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका स्थापित कर लें तथा दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव निखिल का ध्यान करें -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

निखिल ध्यान के पश्चात् गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका को जल से स्नान करावें -

ॐ निखिलम् स्नानम् समर्पयामि॥

इसके पश्चात् स्वच्छ वस्त्र से पौंछ लें और कुंकुम, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप-दीप से पूजन करें -

ॐ निखिलम् कुंकुम समर्पयामि।
ॐ निखिलम् अक्षतान समर्पयामि।
ॐ निखिलम् पुष्पम् समर्पयामि।
ॐ निखिलम् नैवेद्यम् निवेदयामि।
ॐ निखिलम् धूपम् आघ्रापयामि, दीपम् दर्शयामि। (धूप, दीप दिखाएं)

अब तीन आचमनी जल गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका पर घुमाकर छोड़ दें। इसके पश्चात् गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

इसके पश्चात् मूल पूजन निम्न प्रकार सम्पन्न करें। गुरु चित्र के समीप ही सरस्वती के चित्र को स्थापित करें और सरस्वती चित्र को अष्टगंध अथवा चंदन से तिलक लगायें।

अपने सामने एक थाली में सबसे पहले अष्टगंध से एक त्रिभुज बनाकर उसके बीच में 'ऐं' बीज मंत्र लिखें। तांत्रोक्त क्रिया में यह सरस्वती का विग्रह माना जाता है। इसके ऊपर पुष्प एवं अक्षत चढ़ाएं।

अब अंकित 'ऐं' बीज मंत्र पर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त, जो कि धारण करने योग्य, सरस्वती यंत्र है उसे स्थापित करें। परिवार के प्रत्येक बालक के लिये पृथक-पृथक सरस्वती यंत्र

आवश्यक हैं। इन सब यंत्रों को कुंकुम, अक्षत, पुष्प, चन्दन अर्पित करें। एक ओर घी का दीपक जलाएं तथा दूसरी ओर सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करें। सभी यंत्रों के लिए केवल एक ही दीपक और अगरबत्ती जलाना पर्याप्त है।

विनियोग

दांये हाथ में जल लेकर संकल्प करें -

ॐ अस्य श्री वाग्वादिनी-शारदा मंत्रस्य मार्कण्डेयक्ष्वलायनौ ऋषि स्त्रग्धरा-अनुष्टुपौ छन्दसी श्री सरस्वती देवता श्री सरस्वती प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

जल को जमीन पर छोड़ दें।

न्यासः

निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए विभिन्न अंगों को दांये हाथ से स्पर्श करें।

ॐ श्रीं नमः सहस्रादि। ॐ ऐं नमः भाले।
ॐ क्लीं नमो नेत्र-युगले। ॐ ऐं नमः कर्णद्वये।
ॐ सौं नमः नासापुटद्वये। ॐ नमो नाभौ।
ॐ ह्रौं नमः कंठे। ॐ श्रीं नमो हृदये।
ॐ ऐं नमो हस्त-युग्मे। ॐ क्लें नमः उदरे।
ॐ सौं नमः कट्यां। ॐ ऐं नमो गुह्ये।
ॐ क्लीं नमो जंघायुगे। ॐ ह्रौं नमो जानु-द्वये।
ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वांगे।

इसके बाद अलग पात्र में इन यंत्रों को कच्चे दूध से धोकर फिर जल से धोएं और पौंछकर, जिस थाली में सरस्वती यंत्र स्वरूप त्रिभुज अंकित कर ऐं बीज मंत्र लिखा था उस थाली में ही इन सभी यंत्रों को रख दें और उन पर अष्टगन्ध का तिलक करें, पुष्प चढ़ावें और दूध का बना प्रसाद समर्पित करें। इसके पश्चात् परिवार के सभी सदस्य दोनों हाथ जोड़कर निम्न प्रकार ध्यान करें।

ध्यान

मुक्त्र-कान्ति-निभां देवीं, ज्योत्स्ना-जाल-विकाशिनीम्।
मुक्ता-हार-युतां शुभ्रां, शशि-खण्ड-विमण्डिताम्।।
बिभ्रतीं दक्ष-हस्ताभ्यां, व्याख्यां वर्णस्य मालिकाम्।
अमृतेन तथा पूर्ण, घटं दिव्यं च पुस्तकम्।।

देवी सरस्वती आपकी देह-कान्ति मुक्ता की चमक के समान उज्ज्वल हैं, ज्योत्सना जैसा प्रकाश उससे निकल रहा है, वे मोतियों के हार से विभूषित हैं, शुभ्र-वर्णा हैं और अर्ध-चन्द्र से शोभायमान हैं। वागीश्वरी देवी चतुर्भुजा हैं। दांये हाथों में से एक में व्याख्या मुद्रा और दूसरे में वर्ण-माला धारण किए हुए हैं। बांये हाथों में एक में अमृत-पूर्ण कुम्भ है और दूसरे में पुस्तक है। ऐसे दिव्य स्वरूप को हृदय से नमन करता हूं, आप मेरे जीवन में ज्ञान रूप में सदैव स्थापित हों।

इसके बाद **सरस्वती मंत्र** की एक माला मंत्र-जप घर का मुखिया करे -

।। ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं वाग्देव्यै नमः।।

यदि घर के बालक मंत्र उच्चारण कर सकते हों तो उनसे वसन्त पंचमी साधना के दिन विशेष रूप से गुरु मंत्र का 21 बार उच्चारण अवश्य करवायें इसके साथ ही सरस्वती के मूल बीज मंत्र **'ॐ ऐं ॐ'** का भी 21 बार उच्चारण अवश्य करवायें।

इसके पश्चात् परिवार का मुखिया अपने हाथों में पुष्प ले और गुरुदेव के विग्रह, पादुका इत्यादि पर पुष्प अर्पण करें। अपने बालकों से भी यही क्रिया सम्पन्न करवाएं और प्रत्येक बालक को एक-एक **'सरस्वती यंत्र'** गुरुदेव के चित्र के स्पर्श कराकर उन्हें धारण करवा दें। इस दिन बालकों को उपहार स्वरूप पुस्तक, पेन इत्यादि अवश्य भेंट करें। प्रति वर्ष सरस्वती पूजन सम्पन्न कर नवीन सरस्वती यंत्र अवश्य धारण करायें तथा पुराने सरस्वती यंत्र को जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. प्रति सरस्वती यंत्र - 300/-

सरस्वती ज्ञान दीक्षा

बसन्त पंचमी 25 जनवरी 2023 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में आप स्वयं और अपने परिवार के अन्य सदस्यों विशेष रूप से बच्चों को गुरुदेव से सरस्वती दीक्षा अवश्य प्रदान करावें।

साधक को अपने सम्पूर्ण जीवन में चाहे वह बाल्यकाल हो अथवा वृद्धावस्था, नियमित रूप से सरस्वती ज्ञान दीक्षा अवश्य प्राप्त करनी चाहिए। ज्ञान ही वह आधार है, जिस पर धन रूपी वृक्ष फलता-फूलता है। सरस्वती के साधक का चहुंमुखी विकास होता है।

- सरस्वती ज्ञान दीक्षा से चित्त की चंचलता, उद्वेग, द्वंद्व समाप्त होते हैं।
- सरस्वती ज्ञान दीक्षा से मानसिक शक्ति, बौद्धिक शक्ति का विकास होता है।
- सरस्वती ज्ञान दीक्षा और सरस्वती साधना से व्यक्ति बहुआयामी हो जाता है, व्यक्ति केवल एक पहलू पर विचार न कर सभी पहलुओं, दिशाओं में विचार करता है।
- व्यक्ति के स्वयं के ज्ञान और विवेक में वृद्धि होती है।
- सरस्वती ज्ञान दीक्षा से अनिद्रा, सिरदर्द, तनाव इत्यादि रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है और चित् में शांति प्राप्त होती है।
- सरस्वती ज्ञान दीक्षा से स्मरण शक्ति तीव्र होती है।
- सरस्वती वाणी, विलास की अधिष्ठात्री देवी है। वाक् कला का विकास सरस्वती ज्ञान दीक्षा ग्रहण कर सरस्वती साधना से ही होता है।
- वाणी की मधुरता, मिठास श्रेष्ठ व्यक्ति के लक्षण हैं, ऐसे व्यक्ति के पास हर कोई बैठना चाहता है।
- जीवन में द्वंद्व आता रहता है, और विशेष रूप से मानसिक द्वंद्व तो सबके जीवन में है। किस समय कौन सा कार्य करें? कौन सा मार्ग उचित रहेगा? किस दिशा में प्रयास किया जाए? ऐसे पचासों द्वंद्व जीवन में नित्य प्रति आते रहते है।
  इन द्वंद्वों से ऊपर उठकर सही दिशा में कार्य करने की शक्ति सरस्वती साधना-दीक्षा से ही प्राप्त होती है।
- हर व्यक्ति को अपने जीवन में निरन्तर सीखने वाला अर्थात् विद्यार्थी बने रहना चाहिए। ज्ञान प्राप्ति की भूख निरन्तर रहनी चाहिए। सद्गुरु कृपा द्वारा प्राप्त सरस्वती ज्ञान दीक्षा से साधक को ज्ञान तत्व निरन्तर प्राप्त होता रहता है।

सरस्वती ज्ञान दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. 2100/-

सरस्वती की कृपा से ही जीवन में आध्यात्मिक और आर्थिक उन्नति प्राप्त होती है।

सरस्वती ज्ञान दीक्षा प्राप्त करने हेतु गुरु चादर ओढ़कर अपना नवीनतम फोटो WhatsApp 9602334847 के माध्यम से जोधपुर कार्यालय में भेज दें।

सारी शक्तियां आपके भीतर ही विद्यमान हैं। उन शक्तियों को आपकी सोच ने, आपके आसपास वातावरण ने, आपकी आदतों ने दबा दिया है...

गुरु आपके जीवन में, आपकी सोच को बदलने के लिये, आपकी शक्ति को जाग्रत करने के लिये ओर आपके नकारात्मक विचारों को हटाने के लिये ही आये है...

आशीर्वाद द्वारा आपके आज्ञा चक्र को स्पर्श कर शक्ति प्रदान करते हैं...

अक्सर स्कूल में छोटे बच्चों को एक निबंध लिखना पड़ता है कि वे बड़े होकर क्या बनेंगे? हर कोई अपने महत्वाकांक्षा के अनुसार इस निबंध का उत्तर लिखता है। परन्तु कोई यह नहीं लिखता है कि वह बड़ा होकर **'इन्द्र'** बनेगा। वैभव और प्रतिष्ठा का सर्वोच्च रूप इन्द्र हैं, महत्वाकांक्षा की पूर्णाहुति इन्द्रासन में होती है।

स्वर्ग के राजा इन्द्र के संबंध में हमारी अधिकांशाधिक जानकारी ऋग्वेद से आती है, जहां लगभग एक चौथाई सूक्त इन्द्र से सम्बन्धित हैं। वैदिक युगीन देवों में इन्द्र सबसे अधिक पूज्य हैं। ऋग्वेद में इन्द्र देवताओं के सेनानायक के रूप में प्रकट हुए है। उनके चरित्र में वैभव, पराक्रम, अहंकार, इच्छा, असुरक्षा के विविध रंग रूप दिखाई देते हैं।

लगभग ये सारी भावनाएं हर व्यक्ति के मन में बार-बार उठती है जब वह अपने लक्ष्य पाने के लिए क्रियाशील होता है। सफलता की पराकाष्ठा का स्वरूप इन्द्र, वास्तव में एक पदवी है, एक संबोधन बिल्कुल महाराज की भांति। यह संबोधन देवताओं में श्रेष्ठ के लिए प्रयोग किया जाता है।

प्रत्येक मन्वन्तर में एक नवीन इन्द्र होता है और वर्तमान समय के इन्द्र पुरन्दर है अर्थात कोई भी व्यक्ति अपने श्रेष्ठ कर्म के बल पर इन्द्र बन सकता है। यही कारण है कि जब भी कोई महान तपस्या करता है तो इन्द्र का सिंहासन डोलने लगता है।

देवताओं की परम्परा के अनुसार इन्द्र दानवीर हैं। पृथ्वी पर वर्षा कराने की जिम्मेदारी इन्द्र की है। अपनी प्रजा की रक्षा के लिए इन्द्र सदैव तत्पर रहते हैं। इन्द्र का मुख्य कार्य अग्नि, वरुण आदि देवताओं से मित्रवत् व्यवहार कर अपनी प्रजा की सम्पदा एवं सौभाग्य की रक्षा करना है।

ऋग्वेद में वर्णन आया है कि जिस प्रकार ग्वाला दुध दुहने के लिए गाय को बुलाता है, उसी प्रकार हम भी अपनी रक्षा के लिए सुन्दर कर्म करने वाले इन्द्र को प्रतिदिन बुलाते हैं।

परन्तु वही इन्द्र कभी-कभी कठोर और निर्मम भी दिखाई देते हैं जैसे विश्वरूप वध के समय इन्द्र ने न्याय को सम्बन्धों से अधिक महत्ता दी।

इन्द्र की उपलब्धियों में पणि से गौओं को बचाना, चोरी हो गई अग्नि को वापस लाना एवं वृत्रासुर का वध है। इन्द्र के इन सभी कार्यों में सबसे अधिक प्रभावशाली वृत्रासुर का वध है। वृत्रासुर वध के कारण इन्द्र सभी देवताओं में सर्वोत्तम बने, यदि कहा जाए तो इन्द्र बने तथा उन्हें उन्हें वृत्र नाशक का उपनाम प्राप्त हुआ।

माना गया है कि तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए लड़ा जाएगा। परंतु बहुत पहले, सभ्यता की शुरूआत ऋगवेद काल में इन्द्र और वृत्र टकराए थे, जिसमें इन्द्र ने वृत्रासुर को मारकर बंद जल धाराओं को मुक्त किया था।

वृत्रासुर कौन है?

यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न वृत्रासुर विश्वरूप के पुत्र थे जिन्होंने कुछ समय के लिए इन्द्र की गुरु पदवी भार लिया था। वृत्रासुर वध की पृष्ठभूमि विश्वरूप के अंत ने तैयार कर दी थी।

श्रीमद्‌भागवत के अनुसार अदिति और कश्यप के द्वादश पुत्र हुए जो द्वादश आदित्य कहलाए - इन पुत्रों के नाम विवस्वान, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, वरुण, मित्र, इन्द्र और त्रिविक्रम थे।

इन द्वादश आदित्यों में त्वष्टा ने दैत्यों की छोटी बहन रचना से विवाह किया था। रचना से विश्वरूप उत्पन्न हुए जो लघु अवधि के लिए इन्द्र के गुरु बने।

विश्वरूप के तीन सिर थे। वे एक मुंह से सोमरस दूसरे से सुरा और तीसरे से अन्न ग्रहण करते थे। विश्वरूप की माता दनुज कुल की थीं इस कारण वे असुरों के प्रति संवेदनशील थे। यज्ञ करते हुए वे जोर से बोलकर देवताओं को हवि देते एवं चुपचाप मन्द स्वर में असुरों को हवि देते थे। इन्द्र को जब विश्वरूप के इस छल का पता चला तो उन्होंने क्रोध में भरकर विश्वरूप के तीनों सिर काट दिए।

ऐसा माना गया है कि विश्वरूप का सोमरस पीने वाला सिर पपीहा, सुरापान करने वाला गौरेया एवं अन्न खाने वाला तीतर बन गया।

विश्वरूप की मृत्यु के बाद त्वष्टा ने इन्द्र से प्रतिशोध लेने के लिए यज्ञ किया। यज्ञ समाप्त होने पर अन्वाहार्य पचन (दक्षिणाग्नि) से एक बड़ा भयावह दैत्य प्रकट हुआ। वह ऐसा जान पड़ता था मानों लोकों का नाश करने के लिए प्रकट हुआ हो।

त्वष्टा के क्रूर भयावह पुत्र, वृत्रासुर से त्रिलोक डर कर कांपने लगा। श्रीमदभागवत में वृत्रासुर की भयावहता का जीवन्त चित्रण किया गया है। वृत्रासुर प्रतिदिन अपने शरीर के सब ओर बाण के बराबर बढ़ जाया करता था। वह जले हुए पहाड़ के समान काला था और बड़े डील डौल का था। उसके शरीर में संध्या कालीन बादलों के समान चमक थी।

वह उसके सिर के बाल और दाढ़ी-मूंछ तपे हुए तांबे के समान लाल रंग के तथा नेत्र दोपहर के सूर्य के समान प्रचण्ड थे। चमकते हुए तीन लोकों वाले त्रिशूल को लेकर जब वह नाचने, चिल्लाने और कूदने लगता था, उस समय पृथ्वी कांप उठती थी और ऐसा जान पड़ता था कि उस त्रिशूल पर उसने अन्तरिक्ष को उठा रखा है।

वह बार-बार जंभाई लेता था। इससे जब उसका कन्दरा के समान गम्भीर मुंह खुल जाता, तब जान पड़ता कि वह सारे आकाश को पी जाएगा, जीभ से सारे नक्षत्रों को चाट जाएगा और अपनी विशाल एवं विकराल दाढ़ों वाले मुंह से तीनों लोकों को निगल जायेगा। उसके भयानक रूप को देखकर सब लोग डर गये और इधर-उधर भागने लगे।

त्वष्टा के तमोगुणी पुत्र ने सारे लोकों को घेर लिया था। इसी से उस पापी और अत्यन्त क्रूर पुरुष का नाम वृत्रासुर पड़ा। वृत्रासुर ने पानी की धाराओं को रोक दिया और समस्त संसार में हाहाकार मच गया।

तब सभी लोग इन्द्र से विनती करने लगे कि वे वृत्रासुर का अंत करके इस संसार के कष्ट का विनाश करें।

ऋग्वेद में वर्णन आया है कि इन्द्र ने संसार में अंधकार फैलाने वाले वृत्रासुर को महाविनाशकारी वज्र द्वारा काटकर मारा था। जिस प्रकार कुल्हाड़ी से काटी हुई शाखा गिर पड़ती है, उसी प्रकार वृत्र धरती पर सोया हुआ था और उसके शरीर के ऊपर से जल की धारा बह रही थी।

वृत्रासुर का वध करके इन्द्र ने सभी के लिए जलधारा को मुक्त कर दिया। एक प्रकार से इन्द्र का यह कृत्य उनके द्वारा चेतावनी थी कि प्राकृतिक सम्पदा पर सबका बराबर का हक है और किसी एक व्यक्ति के द्वारा उस पर एकाधिकार स्थापित नहीं किया जा सकता है।

'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय...' के सिद्धान्त पालन का इससे अच्छा उदाहरण देखना मुश्किल है एवं शायद इस सिद्धान्त के पालन द्वारा हर व्यक्ति इन्द्र बनने के नजदीक पहुंच सकता है।

ग्रहाधिपति तो सूर्य ही है और सूर्य के चारों ओर सभी ग्रह परिभ्रमण करते है। इसीलिये वेदों में भी सूर्य को सबसे अधिक प्रधानता दी गई है।

चित्रं देवा ना मुद गादनीकं चक्षुर् मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आ प्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष गुंग सूर्य आत्मा जगतस् तस्थुषश्च।।

यह सूर्य ही समस्त जगत के जड़ चेतन की आत्मा है। सूर्य ही नेत्र स्वरूप है। सूर्य का बल मित्रदेव, वरुण देव और अग्नि देव है। सूर्य ही आकाश, पृथ्वी और अन्तरीक्ष लोक को धारण करने वाला ग्रहराज है और यह सर्वत्र व्याप्त है। यह सूर्य न कभी उदय होता है और न कभी अस्त होता है। हमारी पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। इसलिये हमें दिन और रात का अनुभव होता है। सूर्य तो स्थिर ग्रहराज है।

सूर्य को ज्योति स्वरूप ग्रह कहा गया है, स्वप्रकाशित। इसके प्रकाश से ही अन्य सारे ग्रह प्रकाशित होते है, हमें दृश्यवान होते है। सूर्य नहीं तो जगत में प्रलय, जगत की समाप्ति।

जिस प्रकार ब्रह्माण्ड में सूर्य ज्योति स्वरूप है और सूर्य को परमात्मा का स्वरूप कहा गया है, ब्रह्म का स्वरूप कहा गया है। ठीक वैसी ही ज्योति प्राणी के शरीर में, मनुष्य के शरीर में भी होती है और यह भी स्वप्रकाशित है। यह ब्रह्म की ज्योति उसे इस जगत में आलोकित करती है। प्रवाहवान बनाती है, आभावान बनाती है और इसका प्रत्यक्ष रूप हमारे नेत्र है। जिसके माध्यम से हम इस जगत को देखते है।

गुरु जब शिष्य को दीक्षा प्रदान करते है तब वे शिष्य के नेत्रों में देखते है। इसका अर्थ है, शिष्य के सूर्य के स्वरूप को दृष्टिपात करते हुए उसकी प्राण ज्योति, आत्मज्योति स्वरूप सूर्य को जाग्रत करते है। जिससे वह अपनी स्वयं की अग्नि से, प्राण ज्वाला से निरन्तर और निरन्तर प्रज्ज्वलित रहे और स्वयं अपने प्रयास से अपने विगत जीवन के कर्म दोषों को भस्मीभूत कर सके और इस जीवन में अपने स्वप्रकाश के द्वारा सृष्टि में अपना कार्य श्रेष्ठ रूप से सम्पन्न कर सके।

इसीलिये यह कहावत कहीं गई है - जब कोई व्यक्ति उन्नति करता है तो कहते है - आपके जीवन में तो सौभाग्य का सूर्य उदियमान हो गया है।

ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन का शास्त्र है और जिस प्रकार सूर्य समस्त ग्रहों के अधिपति है और उनका व्यवहार भी एक राजा के सदृश्य है।

मनुष्य और सूर्य के स्वभाविक गुण है - गंभीरता, दिव्यता, विशालता, उच्चता, बुद्धि में तेज और स्मरण शक्ति में प्रखर।

सूर्य व्यक्तित्व वाणी में गंभीरता लाता है, दृष्टि में निर्मलता, वार्तालाप में मधुरता।

सूर्य तेजस्वी स्वरूप है और जब सूर्य मनुष्य के व्यक्तित्व में उदियमान होता है तो उसके व्यक्तित्व में भी अग्नि तत्व जाग्रत होता है। निश्चित रूप से क्रोध भी एक ज्वाला है और यह ज्वाला सूर्य तत्व से ही जुड़ी हुई है।

ध्यान देने वाली बात यह है कि सूर्य तत्व प्रबल व्यक्तित्व अपने मन में जो एक बार निश्चय कर लेता है, उसे पूरा करके ही छोड़ता है। अपने किसी भी कार्य को आधा अधूरा नहीं छोड़ता है। इसलिये सूर्य को लक्ष्य सिद्धि ग्रह भी कहा गया है। यह सूर्य का स्वाभाविक स्वभाव है।

इसके साथ ही यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि सूर्य तत्व प्रधान होने पर मनुष्य के व्यक्तित्व में अपने शत्रुओं से प्रतिशोध लेने की भावना अत्यन्त तीव्र हो जाती है।

सूर्य तो मनुष्य के व्यक्तित्व में मजबूत हड्डियों वाला व्यक्तित्व बनाता है और अपनी स्वभावित प्रवृति के कारण श्वेत वस्त्रों से, श्वेत वस्तुओं से विशेष मोह होता है।

सूर्य है राजा और राजा तो पल में प्रसन्न और पल में अप्रसन्न हो जाता है। इसलिये सूर्य तत्व के व्यक्ति केवल अपने ही मन की बात सुनते है और उसी के अनुसार क्रिया करते है।

जिस प्रकार जंगल में सिंह आखेट करते समय किसी के भरोसे नहीं रहता, अपनी ही शक्ति से, अपने ही तेज से क्रियाशील रहता है उसी प्रकार प्रबल सूर्य व्यक्ति में तीक्ष्ण दृष्टि और स्वयं का कार्य स्वयं करना, किसी के भरोसे न रहना इसी में विश्वास करता है।

सूर्य क्या है?

एक ज्योति, प्रकाशपुंज और जब मनुष्य में सूर्य तत्व प्रबल होता है तो उसके चेहरे पर एक आभा, एक ओज, एक प्रकाश, एक Aura आता है। इसमें शरीर के कद, रूप, रंग का कोई स्थान नहीं है। आभावान व्यक्ति हजार व्यक्तियों में अलग दिखाई देता है क्योंकि उसके भीतर प्राण ज्योति, आत्म ज्योति सूर्य के समान प्रकाशित है।

आप अपने जीवन में देख लीजिये, जो व्यक्ति निर्बल होता है, डरा हुआ होता है, हर बात से आशंकित रहता है, उसके चेहरे पर कभी ओज नहीं आ सकता।

ठीक इसी प्रकार जब व्यक्ति किसी व्याधि, पीड़ा से ग्रस्त होता है तो सबसे पहले उसका चेहरा मुर्झा जाता है, उसकी नेत्र ज्योति मंद हो जाती है। वह निर्णय-अनिर्णय के अधर-झूल में झूलता रहता है क्योंकि उसकी सूर्य शक्ति, प्राण ज्योति मंद हो जाती है।

सब कुछ 'मैं' और 'मेरे' से प्रारम्भ होता है और सब कुछ 'मैं' और 'मेरे' से समाप्त हो जाता है...

तो फिर आपके लिये अच्छा कौन कर सकता है? आपकी भलाई कौन कर सकता है?

''यह केवल और केवल 'मैं' अर्थात् आप स्वयं ही कर सकते है''

जब जीने के लिये सांस आपको ही लेनी है तो इस जगत में सब कार्यों के लिये क्रिया भी आपको ही करनी है। इस जगत में आप ही अपना भला कर सकते हैं, आप ही अपना बुरा भी कर सकते हैं।

जिस दिन आपने अपने भले के लिये सोच लिया, उस दिन सब भला ही भला होने लग जाएगा।

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

आपके जीवन में पांच मुख्य आवश्यकताएं हैं जिन्हें आपको नित्य अवश्य पूरा करें -

1. **शारीरिक आवश्यकता - व्यायाम, भ्रमण, शारीरिक श्रम।**
2. **बौद्धिक आवश्यकता - अध्ययन, लेखन।**
3. **भावनात्मक आवश्यकता - परिवार के साथ श्रेष्ठ समय व्यतीत करना।**
4. **आजीविका आवश्यकता - अपनी आजीविका में श्रेष्ठता लाने हेतु और आजीविका के साधनों के बारे में विकास करने हेतु विचार करना।**
5. **आध्यात्मिक आवश्यकता - ध्यान, पूजा, मंत्र सम्पन्न करना, ईश्वरीय शक्ति का ध्यान करना।**

अपने विचारों को केवल विचार ही नहीं रहने दें, उन्हें अपने आत्मबल, आत्मनिश्चय और निर्भयता के साथ साकार रूप अवश्य दे दें।

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली
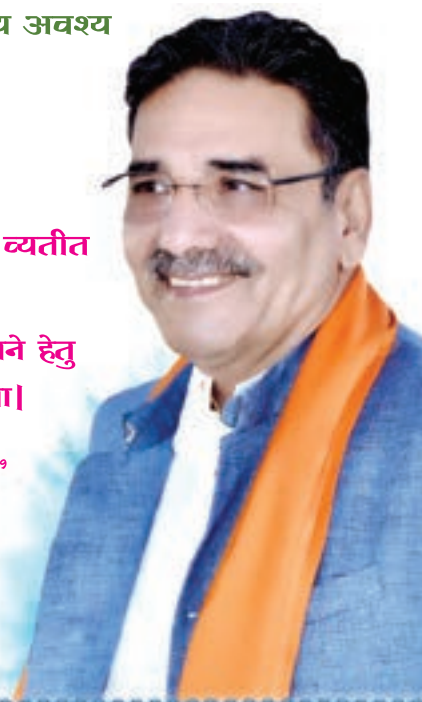
वेदों में उल्लेख आया है कि -

अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निर गुंग हसः
पिपृता निरवद्यात्।
तन्नो मित्रो वरुणो मा महन्ता मदितिः
सिन्धु पृथिवी उतद्यौः।।

हे सूर्यदेव! आज का सूर्योदय हमारे दोषों को नष्ट करें। हमारे अपयश को दूर करें और आपके सहयोगी मित्र वरुण, अदीति माता, सिन्धु, पृथ्वी, आकाश सभी हमारी रक्षा करें।

ध्यान देने वाली बात है कि सूर्य के सहयोगी ग्रह है वरुण देव और वरुण का अर्थ है जल। इसीलिये सूर्योदय के समय सूर्य को जल का अर्घ्य प्रदान किया जाता है और वह भी खुले आकाश में। धरती पर खड़े होकर जिससे पृथ्वी आकाश, सूर्य और वरुण का मिलन हो।

इसीलिये सूर्य ग्रहण के समय और मकर संक्रान्ति के दिन तीर्थों में स्नान करने का विशेष महत्व है। खगोल शास्त्री कहते है कि सूर्य इस दिन अपनी कक्षा में परिवर्तन कर दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करता है। इसीलिये इसे मकर संक्रान्ति कहा गया है। संक्रान्ति का सीधा अर्थ है - सूर्य जिस राशि में जाता है। उसे संक्रमण कहा गया है तो पूरे वर्ष में हर महीने की 14 तारीख के आस-पास संक्रमण काल आता है जब एक-एक कर राशियां सूर्य की कक्षा में भ्रमण करती है।

इस भ्रमण सिद्धान्त का विशेष आध्यात्मिक अर्थ है। मकर संक्रान्ति तो, सबसे महत्वपूर्ण पर्व है। क्योंकि इस दिन से ही यह माना जाता है कि अंधकार से प्रकाश की ओर परिवर्तन हो रहा है। मकर संक्रान्ति से ही दिन बड़े और रात्रि छोटी होने लगती है। निश्चित रूप से दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक होगा और रात्रि होने से अंधकार की अवधि कम हो जायेगी।

जितना अधिक सूर्य चमकेगा, प्राणी जगत में भी उसी अनुरूप में चेतनता और कार्य शक्ति में वृद्धि हो जाती है। आप सुबह जल्दी उठने लगते है। देर शाम तक कार्य कर सकते है। कर्म के सम्बन्ध में एक सिद्धान्त है। नेचुरल लाईट अर्थात् सन लाईट में कार्य की क्षमता में दुगनी वृद्धि हो जाती है। जिस व्यक्ति का घर भी सूर्य के प्राकृतिक प्रकाश से अधिक प्रकाशित रहता है उस घर में कीटाणु-विषाणु नहीं पनपते है। परिवार के सदस्यों में आरोग्यता रहती है।

मकर संक्रान्ति पर्व -

इस पर्व की आध्यात्मिक मान्यता के साथ-साथ यह धार्मिक मान्यता है कि मकर संक्रान्ति के दिन समस्त देवी-देवता पृथ्वी पर अपना स्वरूप बदलकर स्नान के लिये आते है, तीर्थ क्षेत्र में आते है। इस पौराणिक मान्यता के आधार पर ही लोग तीर्थों में स्नान करते है। साधकों को भी उस दिन प्रातः उदियमान उषा रूपी सूर्य के स्नान कर दर्शन अवश्य करने चाहिये और उन्हें जल अर्घ्य अवश्य प्रदान करना चाहिये।

कैसे करें सूर्य प्रबल -

यह प्रश्न ऋषियों ने भी वेदव्यास को पूछा था कि सूर्य क्या है? तब वेद व्यास जी ने कहा यह ब्रह्म के स्वरूप को प्रकट हुआ ब्रह्म का ही उत्कृष्ट तेज है और यह सूर्य ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सब पुरुषार्थों को प्रदान करने वाला है।

शरीर के भीतर बाहर और समस्त विश्व में सूर्य की ही सत्ता है। सूर्य ने ही इस जगत को धारण किया हुआ है। सूर्य से ही रूप और गंध उत्पन्न होते है। रसों में जो स्वाद है वह सूर्य से ही आया है।

सूर्य प्रबल होता है मनुष्य के भाव से, विचार से, दृष्टि से और सत्य से। जिस मनुष्य के विचार सत्य पर आधारित होते है और भाव प्रबल होते है वह सूर्य के साथ अपनी आत्मा को, अपने भीतर को, अपने प्रकाश को जोड़ लेता है। जो मनुष्य सूर्य के साथ अपनी ज्योति को नहीं जोड़ता है उसकी स्वयं की ज्योति धीरे-धीरे मंद होने लगती है क्योंकि वह स्रोत से विमुख हो गया होता है।

देव तो आराधना, साधना से ही प्रसन्न हो है। निरन्तर आराधना, निरन्तर अर्घ्य, निरन्तर उपासना, शरीर और मन में शुद्धि लाती है, इससे प्राण ज्योति पर आई हुई कालिमा समाप्त हो जाती है और जैसे ही यह कालिमा समाप्त होने लगती है। मनुष्य अपने भीतर के सूर्य को प्रबल कर स्वतेज से युक्त हो जाता है।

सूर्य की उपासना की हजारों विधियां है लेकिन सूर्य को अर्घ्य तो नियमित रूप से देना चाहिये और सूर्य को लालिमा प्रसन्न करने वाली होती है इसीलिये जल के साथ लाल पुष्पों का अर्घ्य देना चाहिये।

जो व्यक्ति, सूर्य उपासना नहीं करता है वह तेजहीन हो जाता है, व्याधि ग्रस्त हो जाता है, नेत्र ज्योति मंद हो जाती है, सदैव अप्रसन्न रहने वाला कुण्ठाग्रस्त व्यक्तित्व बन जाता है।

सद्‌गुरु सदैव अपने प्रवचनों में कहते है हे साधक! तुम्हारे भीतर भी एक आत्म ज्योति है उस आत्मज्योति का तुम आह्वान करो, उस आत्म ज्योति को तुम प्रबल करो। संसार की सारी बाधाएं तुम्हारे द्वारा ही तुम से भस्म हो जायेगी।

सूर्य समोहन दीक्षा

सूर्य सम्मोहन दीक्षा एक विशेष दीक्षा है जिसमें गुरु द्वारा शिष्य के नेत्रों में विशेष ज्ञान अग्नि का प्रवाह किया जाता है। इस अग्नि की चिंगारी शिष्य के सारे दोष समाप्त कर देती है, जिसके बाद जीवन की असफलताओं और बाधाओं का अंत हो जाता है और शत्रु विनाश संभव हो जाता है

- सूर्य सम्मोहन दीक्षा से शिष्य चैतन्य हो जाता है और वह अपना प्रत्येक कार्य ज्ञान के प्रकाश में सम्पन्न करने लगता है।
- सूर्य सम्मोहन दीक्षा से साधक को आने वाली बाधाओं का पहले ही ज्ञान हो जाता है। जिससे वह निष्कंटक जीवन में अपने कार्य, अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिये गतिमान हो जाता है।
- सूर्य सम्मोहन दीक्षा से साधक के चेहरे पर एक ओज और प्रभाव आ जाता है, जिससे वह अपनी वाक् शक्ति से दूसरों को प्रभावित कर सकता है।
- सूर्य सम्मोहन दीक्षा से साधक के शरीर में फैल रही व्याधियों का अंत हो जाता है। जैसे - अग्नि घास-फूंस को जला देती है उसी प्रकार गुरु द्वारा सूर्य सम्मोहन शक्तिपात से शिष्य के देह में, चित्त में स्थापित रोग-शोक समाप्त हो जाते है।
- सूर्य सम्मोहन दीक्षा जीवन को युवावस्था की ओर ले जाने की क्रिया है। जिससे उसे अपने जीवन में सदैव ताजगी और जीवन्तता का अनुभव होता है।
- सूर्य सम्मोहन दीक्षा के प्रभाव से साधक के शरीर और मन में जो अग्नि स्थापित होती है, उसके द्वारा उसके शत्रु उसके समक्ष निस्तेज हो जाते है।
- सूर्य सम्मोहन दीक्षा जीवन में शुद्धता प्राप्त करने की क्रिया है, शुद्धिकरण की क्रिया है।
- सूर्य सम्मोहन दीक्षा से साधक के दुर्भाग्य, दारिद्रय, पाप, ताप, संताप आदि समाप्त हो जाते है।

सूर्य सम्मोहन दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-

मनुष्य की प्रवृत्ति है कि उसे परोक्ष से अधिक विश्वास प्रत्यक्ष में होता है और सूर्यदेव से अधिक प्रत्यक्ष अन्य कोई देव नहीं हैं। महर्षि अगस्त्य ने सूर्यदेव की महिमा बताते हुए कहा है कि, अनन्त किरणों से सुशोभित, देवताओं और असुरों द्वारा नमस्कृत, कश्यप ऋषि और अदिति के पुत्र, आदित्य और समस्त संसार के स्वामी सूर्यदेव ही हैं।

मार्कण्डेय पुराण में सूर्यदेव को ब्रह्म का रूप माना गया है। निराकार ब्रह्म शब्दिक रूप में **'ॐकार'** के रूप में अभिव्यक्त होते हैं और सूर्यदेव के रूप में शरीरगत (देह) रूप में अभिव्यक्त होते हैं। सूर्यदेव को आदि-देव कहा गया है और हिन्दू संस्कृति में श्रीगणेश, शिव, शक्ति, विष्णु और सूर्य आदि देव भगवान के ही पांच प्रमुख पूज्य रूप हैं।

सूर्य साधना-उपासना से आरोग्य, प्रखर नेत्र ज्योति, समाज में मान-सम्मान, धन-धान्य की अनवरत आवक व वृद्धि और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। सूर्य साधना के माध्यम से साधक जहां एक ओर अपने दुर्भाग्य का नाश करने में समर्थ हो, वहीं सूर्य साधना की गरिमा को भी आत्मसात कर सके, और कदाचित ऐसे ही गंभीर साधक आगे बढ़ कर गुरु चरणों में अपने जीवन को निवेदित कर इस साधना को संजो लेने का प्रायस करें।

दुर्भाग्य का नाश सूर्य के अतिरिक्त किसी अन्य देवी-देवता के वश की बात ही नहीं है। यह तो पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा अपने शिष्यों को दी गई एक दुर्लभ भेंट है।

इसी कारणवश श्रेष्ठ साधक तो वही हो सकता है जो मकर संक्रान्ति के शुभ मुहूर्त में दुर्भाग्य नाश की सूर्य साधना को सम्पन्न कर लेता है।

मकर संक्रान्ति का दिवस प्राचीन परम्परा से ही सूर्य पूजन का दिवस माना गया है किन्तु इस दिन केवल सूर्य पूजन करने के स्थान पर यदि इस साधना को सम्पन्न कर लिया जाए तो साधक माह भर बीतते - बीतते स्वयं अनुभव कर सकता है कि वास्तव में भारतीय साधना की परम्परा कितनी अधिक प्रखर रही है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर सूर्य-साधना का लोक व्यवहार में सदा से महत्त्व रहा है। अंतर केवल इतना है, कि जहां सामान्य व्यक्ति केवल पूजन के द्वारा अपनी श्रद्धा भावना भगवान सूर्य को निवेदित करते हैं, वहीं साधक उनके वरदायक प्रभाव को किसी विशिष्ट साधना के द्वारा अपने शरीर में उतारने का प्रयास करता है, जिसके फलस्वरूप उसके जीवन के विविध पाप-दोष एवं जड़ताएं समाप्त हो सकें।

साधना विधान

इस साधना को सम्पन्न करने के इच्छुक साधक के लिए आवश्यक है, कि उस दिन प्रातः सूर्योदय से काफी पहले उठ कर स्नान कर लें। फिर लाल वस्त्र पहन, ऊनी आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें तथा अपने समक्ष लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर सर्वप्रथम गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका स्थापित कर लें और दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव निखिल का ध्यान करें –

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

निखिल ध्यान के पश्चात् गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका को जल से स्नान करावें –

ॐ निखिलम् स्नानम् समर्पयामि।।

इसके पश्चात् स्वच्छ वस्त्र से पौंछ लें, निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए कुंकुम, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप-दीप से पंचोपचार पूजन करें –

ॐ निखिलम् कुंकुम समर्पयामि।
ॐ निखिलम् अक्षतान समर्पयामि।
ॐ निखिलम् पुष्पम् समर्पयामि।
ॐ निखिलम् नैवेद्यम् निवेदयामि।
ॐ निखिलम् धूपम् आघ्रापयामि, दीपम् दर्शयामि। (धूप, दीप दिखाएं)

अब तीन आचमनी जल गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका पर घुमाकर छोड़ दें। इसके पश्चात् गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें –

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

गुरु पूजन के पश्चात् मूल साधना-पूजन निम्न प्रकार सम्पन्न करें –

इसके पश्चात् इसी बाजोट पर गुरु चित्र के सम्मुख तांबे के पात्र में **सूर्य यंत्र** स्थापित करें। इसके पश्चात् अपने आसन पर बैठे-बैठे ही एक लोटे में कुंकुम मिश्रित जल लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए 'सूर्य यंत्र' पर अर्घ्य प्रदान करें –

ऐही सूर्यदेव सहस्त्रांशो तेजो राशि जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणार्ध्य दिवाकरः।।
सूर्याय नमः आदित्याय नमः
नमो भास्कराय नमः अर्घ्य समर्पयामि।।

सूर्य यंत्र को अर्घ्य प्रदान करने के पश्चात् यंत्र को स्वच्छ वस्त्र से पोंछकर कुंकुम, अक्षत, पुष्प इत्यादि समर्पित करें। सूर्य यंत्र को दीपक और धूप के दर्शन कराएं।

इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर निम्न सूर्य प्रार्थना करें –

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तर सहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते।।

मन ही मन भगवान सूर्य से प्रार्थना करें, कि वे इस दिवस विशेष पर (जब सूर्य भगवान साधक के मन व शरीर में, साधना के माध्यम से उतर जाने को तत्पर रहते हैं) उसे अपने वरदायक प्रभाव से सिक्त कर, अपनी ऊर्जा से दुर्भाग्य, दारिद्र्य और पाप-ताप-संताप से मुक्त करने की कृपा करें।

इसके पश्चात् **दुर्भाग्य नाशक सूर्य माला** से साधक निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप सम्पन्न करे।

मंत्र

।। ॐ घृणिः सूर्याय नमः।।

मंत्र जप के उपरांत अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही किसी एक पात्र में जल, अक्षत, कुंकुम व पुष्प की पंखुड़ियों को लेकर यंत्र के ऊपर इस प्रकार प्रवाहित करें मानों भगवान सूर्य को अर्घ्य दे रहे हों। सायंकाल यंत्र व माला को किसी पवित्र स्थान पर विसर्जित कर दें।

जिस प्रकार सूर्य की रश्मियों को लेंस के माध्यम से एकत्र करने पर अग्नि उत्पन्न हो जाती है, ठीक उसी प्रकार उपरोक्त मंत्र के संगुफन से जो अग्नि उत्पन्न होती है वह साधक के जीवन की विषमताओं को भस्म कर उसे, दुर्भाग्य मुक्त करने में सहायक सिद्ध होती है।

यह भगवान सूर्य की दुर्भाग्य नाशक साधना, तंत्र का यह तीव्रतम प्रयोग ही वस्तुतः जीवन में सौभाग्य के निर्माण का प्रथम चरण है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 490/-

आद्या शक्ति रुद्रा का क्रिया स्वरूप

शाकम्भरी

जीवन की दुर्गम दुःसाध्य बाधाओं को समाप्त करने की तीव्रतम साधना

यदि जीवन में यश, वैभव, प्रतिष्ठा की कमी हो, चेहरे पर तनाव की रेखाएं पड़ गई हों या प्रेम का अभाव हो, तो साधक को चाहिए कि वह 'शाकम्भरी साधना' को कर अपने जीवन की कमियों को पूरा कर ले।

'शाकम्भरी देवी' अपने आराधक को वह सब कुछ देने में समर्थ हैं, जो उसकी मनोकांक्षा है। यह अत्यंत ही गोपनीय एवं महत्वपूर्ण साधना है, जिसे प्रत्येक को, चाहे वह स्त्री हो, पुरुष हो, सम्पन्न करना ही चाहिए।

गुरुदेव के पास अनेक लोग आते हैं, जो अपने जीवन में समस्याओं से ग्रस्त हैं, दुःखी हैं, पीड़ित हैं; कष्ट में जीवन जीते-जीते जो मृतप्रायः हो गये हैं और एक आशा की, एक उम्मीद की किरण अपने मन में संजोए हैं गुरुदेव से मिलने के लिए, कि शायद ऐसा कोई उपाय प्राप्त हो जाए और उनके जीवन में परिवर्तन आ जाए, उनके कष्ट दूर हो सकें, वे अपनी कमियों को, न्यूनताओं को, अभावों को दूर कर पायें।

अपने भाग्य का रोना रोते हुए, जब वे गुरुदेव से मिल कर वापिस लौटते हैं, तो उनका चेहरा एक सुन्दर मुस्कान से दमक रहा होता है, क्योंकि उन्हें उपयुक्त उपाय, समाधान (साधना) गुरुदेव दे ही देते हैं, जिसे पाकर उनके चेहरे पर प्रसन्नता व्याप्त हो जाती है।

ऐसे ही कुछ व्यक्ति, जिनके चेहरे मुरझाये हुए, नीरस, जड़वत् जैसे अब कुछ शेष रहा ही न हो जीवन में, जो अपनी लाश को अपने ही कंधे पर ढोये चले जा रहे हों। गुरुदेव से मिले; उनकी परेशानियों और दुःखों के कारण को जानकर, उनकी समस्याओं के समाधान के लिए गुरुदेव ने उन्हें **'शाकम्भरी साधना'** सम्पन्न कराया।

एक दिन के इस प्रयोग ने आश्चर्यजनक परिणाम दिये और ऐसा लगा, मानो उनके मृतवत् शरीर में किसी ने प्राण फूंक दिये हों ... जब वे साधक दोबारा गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु पहुंचे, तो उनका रोम-रोम उनकी सफलता का

परिचय देता प्रतीत हो रहा था... उन्हें देखकर यह नहीं लगता था, कि वे वही हैं जो कुछ दिनों पहले गुरुदेव से मिलने आये थे... अब उनके जीवन में खुशियां ही खुशियां थीं, मानो धधकते अंगारों पर बसंत ने पांव रख दिये हों, सूखे बेजान से जीवन के बाद अब सुख और आनन्द जैसे पतझड़ के बाद सावन का मौसम आया हो, ऐसा ही लग रहा था... पहले से भी अधिक दृढ़ता, विश्वास, श्रद्धा और प्रेम झलक रहा था उनके चेहरों से... उन्हें देखकर तो यही लग रहा था, कि उन्होंने जीवन में जो चाहा, वह सब कुछ मिल गया हो।

और साधना का तो मतलब ही यह है कि जो चाहें, वह प्राप्त हो जाय, आवश्यकता है - धैर्य, विश्वास और आस्था की। जब तक मंत्र जप के प्रति पूर्ण एकनिष्ठता का भाव नहीं होगा, तब तक आप अपने आप को वहीं खड़ा पायेंगे, जहां से आपने चलना प्रारम्भ किया है।

जब वे साधक गुरुदेव से मिले, तो गुरुदेव ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, कि यह शाकम्भरी प्रयोग जो आप लोगों ने सम्पन्न किया, वह अत्यन्त ही दिव्य एवं गुह्य प्रयोग है, और जो पहली बार ही आपको सम्पन्न करवाया है, जिससे कि इसका प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर, आप इसकी प्रामाणिकता का अनुभव कर सकें।

गुरुदेव के द्वारा बताई गई हर साधना, हर क्रिया अपने-आप में महत्वपूर्ण है, जीवनोपयोगी है, पूर्णता प्रदायक है।

समय-समय पर साधक की आवश्यकता के अनुसार ही गुरुदेव उन्हें भिन्न-भिन्न प्रयोग सम्पन्न करवाते रहते हैं तथा उसे कुछ ही लोगों तक सीमित न रखकर, प्रामाणिक रूप में समाज के सामने पत्रिका के माध्यम से स्पष्ट कर, जन कल्याण का कार्य करते हैं। शाकम्भरी प्रयोग ऐसा ही अद्वितीय प्रयोग है, जिससे साधक अपने जीवन की न्यूनताओं को दूर कर अपने जीवन में प्रेम, वैभव और प्रसन्नता को हमेशा के लिए स्थापित कर सकेंगे।

साधना विधान

1. प्राणश्चेतना युक्त **'शाकम्भरी यंत्र'** तथा **'सौख्य गुटिका'** को साधना हेतु प्रयुक्त किया जाता है।
2. इस प्रयोग को करने से पूर्व पूजा स्थान को स्वच्छ करें।
3. पीली धोती और गुरु मंत्र से अनुप्राणित चादर को ओढ़ लें, पीले आसन का प्रयोग करें।
4. यह प्रयोग **किसी भी माह की अष्टमी अथवा अमावस्या** को भी कर सकते हैं।

मनुष्य का कार्य ही निरन्तर आगे बढ़ना है और उसे आगे वृद्धि करने हेतु निरन्तर शक्ति की आवश्यकता रहती ही है, जीवन में किसी भी वस्तु को ग्रहण करना और उस वस्तु को अपने उपयोग में लाना शक्ति से ही संभव है।
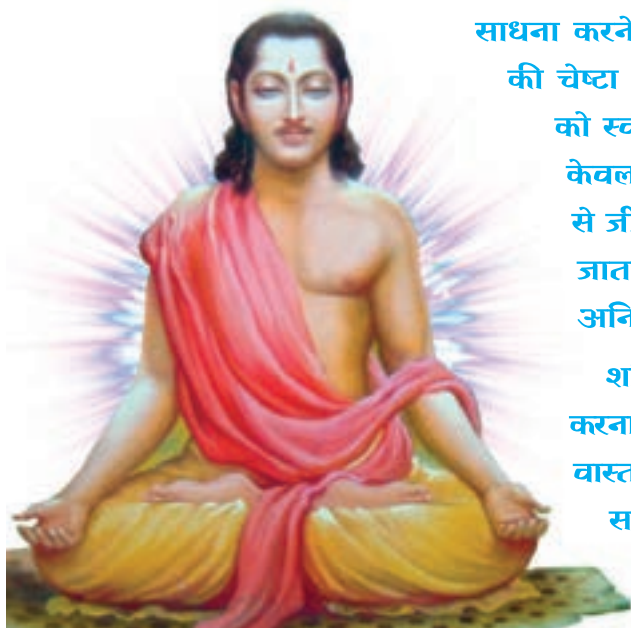
साधना करने का अर्थ है, अपने मनोनुकूल ढंग से परिवर्तन की चेष्टा करना। यह प्रकारान्तर से शक्तितत्व की महिमा को स्वीकार करना नहीं है तो और क्या है? शक्ति की केवल उपासना नहीं की जाती, उसे साधना के माध्यम से जीवन में उतार लिया जाता है, और प्राप्त कर लिया जाता है वह सब कुछ, जो जीवन में आवश्यक हो, अनिवार्य हो।

शक्ति का विकास, विन्यास समझ कर, उसे आत्मसात् करना पड़ता है और शक्ति से सम्बन्धित समस्त साधनाएं वास्तव में समस्या विशेष अथवा मनोकामना विशेष से सम्बन्धित एक विन्यास ही होती है। उनसे सम्बन्धित मंत्र, अक्षरों के एक समूह भर न होकर एक प्रकार से गूढ़ संकेत होते हैं।

जीवन को समझना है तो कहीं दूर भागने की आवश्यकता नहीं है। अपने भीतर ही वही शिव और शक्ति विद्यमान हैं, इसी शरीर में, मन में एक समुद्र मंथन चलता रहता है। जब यह मंथन गलत हो जाता है तो विष की उत्पत्ति होती है और जब यह मंथन श्रेष्ठ हो जाता है तो अमृत की उत्पत्ति होती है।

जीवन में अमृत उत्पत्ति के लिये आस्था और श्रद्धा की आवश्यकता है। श्रद्धा का प्रारम्भ तब होता है, जब आप उन विचारों पर विश्वास करना शुरु कर देते हैं जिन्हें ईश्वर आपके पास भेजता है। इस जीवन की महानता आपके धन, आपके रूप पर निर्भर नहीं करती है, जीवन की महानता इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपने मन में उठे सकारात्मक विचारों का कितना सम्मान करते हैं।

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

5. पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें।
6. एक बाजोट पर पीला आसन बिछाकर अपनी बांयी तरफ जल से भरा कलश स्थापित कर दें तथा उस पर कुंकुम से स्वस्तिक अंकित करें।
7. फिर तांबे की प्लेट में पुष्प से आसन बनाकर उस पर यंत्र स्थापित कर दें तथा यंत्र का कुंकुम, अक्षत, पुष्प से पूजन करें।
8. फिर गुटिका को यंत्र के ऊपर रख दें और उसका भी कुंकुम, अक्षत से पूजन करें।
9. फिर 10 मिनट तक गुरु-मंत्र-जप करें और इसके पश्चात् भगवती शाकम्भरी के निम्न ध्यान मंत्र का उच्चारण उच्च स्वर में करें -

बाणमुष्टिं च कमलं पुष्पपल्लवमूलकान् ।
शाकादीन्फलसंयुक्तननन्तरससंयुतान् ॥
क्षुत्तृङ्जरापहान्हस्तैर्बिभ्रती च महाद्धनुः ।
सर्वसौंदर्यसारं तद्रूपं लावण्यशोभितम् ॥

चतुर्भुजा देवी शाकम्भरी अपने चार भुजाओं से सुशोभित है, एक हाथ में बाण और दूसरे हाथ में कमल पुष्प, अंकुरित धान्य है। तीसरी भुजा में हरित वनस्पति एवं रस से भरे फल हैं और चतुर्थ भुजा में पाश धारण किये हुए है। ऐसी आद्या शक्ति साधक को अभय प्रदान करने वाली, शत्रुओं को पाश में बांधने वाली और भक्तों को उत्तम फल प्रदान करने वाली है। देवी शाकम्भरी को मेरा नमन।

10. ध्यान के पश्चात् निम्न मंत्र का एक घण्टे तक जप करें -

॥ॐ श्रीं शाकम्भर्यै फट्॥

11. मंत्र-जप के पश्चात् फिर एक बार 10 मिनट तक गुरु मंत्र-जप करें, ऐसा इसलिए कि गुरु ही समस्त सिद्धियों को प्रदान करने वाले हैं।
12. मंत्र-जप समाप्त करने के पश्चात् उस गुटिका को जेब में रख दें और ठीक पन्द्रह दिन बाद उस यंत्र एवं गुटिका को नदी या कुंए में विसर्जित कर दें।

इस एक दिवसीय प्रयोग की सफलता तो साधक के चेहरे से खुद ब खुद झलकने लगेगी, क्योंकि यह प्रयोग समस्त जीवन को प्रेम, वैभव और प्रसन्नता से लबालब आपूरित कर देने वाला है, जो कि सरल एवं सफलता प्रदान करने वाला अचूक प्रयोग है; पत्रिका के इन पन्नों पर प्रकाशित होने के बाद से कोई भी प्रयोग गोपनीय नहीं रहा, क्योंकि गुरुदेव अपने ज्ञान को शिष्यों में उड़ेल देना चाहते हैं। इसलिए समयानुसार, वे इन साधना पुष्पों से साधकों का जीवन वसंतमय, उत्सवमय, प्रेममय, आनन्दमय बना देना चाहते हैं।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 390/-

अनंग और रति अग्नि और सोम का मिलन

यही सूर्य, चन्द्र हैं... शिव - शक्ति संयोग ही परम पद प्राप्ति है...

बसंत पंचमी का नाम सुनते ही मन में उल्लास भरी भावनाओं का ज्वार उमड़ पड़ता है और यह स्वाभाविक ही है क्योंकि नर में काम भाव और स्त्री में रति भाव स्वाभाविक रूप से विद्यमान है। सृष्टि का प्रारम्भ ही प्रकृति और पुरुष के सममिश्रण से होता है। वैज्ञानिक शब्दों में प्रकृति को **'रयि'** और पुरुष को **'प्राण'** भी कहा गया है। इसी को **'शक्ति'** और **'शिव'** कहते है। वेदों में इसे **'सोम'** और **'अग्नि'** कहा गया है। सीधी भाषा में इसे **'ऋण विद्युत धारा'** और **'धन विद्युत धारा'** कह सकते है। सामान्य विज्ञान के सभी ज्ञाता जानते है कि जब करन्ट प्रवाहित होता है तो उक्त धाराओं का मिलन, बिछुड़न होता है। नहीं तो विद्युत का उद्भव भी समय नहीं हो सकता है।

यह निरन्तर मिलन और बिछड़न, संघर्ष और उत्कर्ष की क्रिया संचारित करते है। इसी के फलस्वरूप परा और अपरा के नाम से पुकारा जाने वाला सृष्टि वैभव प्रारम्भ हो जाता है।

काम और रति शब्द सुन्दर भाव है, इससे विचलित मत होईये। नर और नारी मिलकर ही स्थूल जीवन को पुरुष और प्रकृति के सहयोग से चलने वाले सूक्ष्म जीवन क्रम की तरह विनिर्मित करते है।

नर और नारी के बीच में पाये जाने वाले प्राण और रयि, अग्नि और सोम, स्वाह और स्वधा तत्वों का महत्व बहुत विशेष है। सृजन और उद्भव की, उत्कर्ष और आह्लाद की असीम संभावनाएं इसमें भरी है।

काम अर्थात् विनोद, उल्लास, आनन्द है। मैथुन को ही काम नहीं कहते। कामक्षेत्र की पद्धति में वह तो एक बहुत छोटा नगण्य माध्यम हो सकता है। पर यह कोई निरन्तर की वस्तु नहीं है क्योंकि काम का अर्थ है - विनोद, उल्लास और आनन्द। मैथुन की उपयोगिता है लेकिन वह आधार नहीं है। शक्ति का आधार है स्नेह, सद्भाव, विनोद, उल्लास। यह उच्चस्तरीय अभिव्यक्तियों, छोटे बालकों, वृद्धजनों सभी में विद्यमान है।

नर की अग्नि उष्मा और नारी की शक्ति को सोम और जल कहा गया है। नर की प्राण शक्ति में पुरुषार्थ, क्षमता और कठोरता का स्थान है। यदि उस पर नारी शक्ति का नियन्त्रण नहीं रहता है तो सृष्टि में क्रूरता और दुष्टता का ताप उग्रतर हो जाता है। नर के श्रम साहस का उपयोग क्रम चलता रहता है और नारी की मधुर भावनाएं इस श्रम और साहस को मर्यादाओं में नियन्त्रित करती है। उसकी स्नेह स्निग्ध मधुर भावनाएं क्रूरता को कोमलता में बदल देती है।

नर अर्थात् काम, नर अर्थात् पुरुष अपने शौर्य, ओज से सम्पदा अर्जित करता है। रति अर्थात् नारी अपनी मधुरता से उसे सौम्य और सहृदय बनाती रहती है। तब काम और रति का सहयोग सृष्टि व्यवस्था को ठीक प्रकार से चलाता रहता है। इसलिये सदैव याद रखें, शौर्य से उपार्जन नर ने किया तो उसका सही उपयोग नारी ही करती है।

पौराणिक कथाओं में यह आता है कि कामदेव भगवान शंकर पर अपना प्रभाव जमाना चाहता है। उन्हें अपने इशारे पर नचाना चाहता है और शिव अपने दूरदर्शी विवेक से अपने तृतीय नेत्र से इसके दुष्परिणाम को समझ कर उसे भस्म कर देते है। यह विवेकशीलता की पशु प्रवृति पर प्रत्यक्ष विजय है। कुविचारों को सद्विचारों से ही निरस्त किया जा सकता है।

कथा बताती है कि काम पत्नी रति अर्थात् सरसता विलाप करती है और भगवान शिव द्रवित हो जाते है और वरदान देते है कि भस्म हुए कामदेव सशरीर तो जीवित नहीं हो सकते है पर सूक्ष्म रूप से सदैव सजीव रहेंगे और सभी व्यक्तियों पर उच्च से उच्चतर व्यक्तियों पर भी अपना अस्त्र छोड़ने की कामना अवश्य पूर्ण करेंगे।

इस वरदान का क्या अभिप्राय है। सीधा अभिप्राय है कि जो कामुकता पशु वृति को भड़काने वाली है। उसे भी भावनात्मक श्रेष्ठ संवेदनाओं से युक्त कर, केवल आकर्षण से, स्थूल यौनाचार से विरक्त किया जा सकता है।

काम और रति तो अजर, अमर है। यह सब में विद्यमान रहते है। तभी तो यह सृष्टि निरन्तर चल रही है। दाम्पत्य जीवन में इन्द्रिय तृप्ति और काम क्रीड़ा द्वारा उत्पन्न होने वाले हर्ष और उल्लास की प्रवृति को नर और नारी दोनों विस्तारित कर सकते है।

जब इस हर्ष और उल्लास का विस्तार किया जाता है तो केवल मैथुन आवश्यक नहीं रहता। जीवन में अनेकोंनेक कामनाएं उपजती है और उन कामनाओं के कारण कर्म शक्ति उपजती है। उस कर्म शक्ति के कारण बालक से लेकर वृद्ध तक सब कामरत रहते है अर्थात् काम और रति, हर्ष और उल्लास जीवन के प्रारम्भ से लेकर जीवन के अन्त तक विद्यमान रहते है।

काम और रति के प्रभाव से, अनंग और रति के प्रभाव से मनुष्य और स्त्री हर समय अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहते है। स्वास्थ्य की रक्षा हेतु विभिन्न प्रयास करते है, क्रियाशील रहते है और अपनी आकर्षण शक्ति में वृद्धि करने का निरन्तर प्रयास करते रहते है।

नर और नारी सहधर्मी

यह अच्छी तरह से समझ लेना चाहिये कि नारी न भोग्या है न रमणी है, न कामिनी है। वह भी मनुष्य ही है, अगणित विभूतियों की धनी है, नर की पूरक है। दोनों हिलमिल कर सहयोगी और सहचर की तरह रहे तो स्वभाविक उचित और न्यायसंगत है। जहां तक यौन सम्पर्क की बात है यह तो एक विशेष प्रक्रिया है। इसके पीछे अग्नि और सोम के मिलन से उत्पन्न विद्युत संचार की विशेष प्रक्रिया सन्निहित है इसलिये इसकी उपयुक्तता और पवित्रता पर सदैव ध्यान रखना चाहिये।

जिस भगवान की हम उपासना करते है, जिनसे हम स्वर्ग, मुक्ति और कामना पूर्ति की बात करते है वे स्वयं सपत्निक है। एकाकी भगवान एक भी नहीं है। राम, कृष्ण, शिव, विष्णु सभी सपत्नीक है। सरस्वती, लक्ष्मी, काली सभी देवियों को दाम्पत्य जीवन स्वीकार रहा है। हर भगवान हर देवता के साथ उनकी पत्नियां विराजमान है। फिर मनुष्यों को अपने इष्ट देवों से आगे निकल कर एकाकी जीवन का विचार क्यों आना चाहिये। स्त्री सदैव सहयोगिनी है।

सप्त ऋषि में महर्षि कश्यप की 13 पत्नीयां थी इसमें भी अदिति और दिति प्रमुख थी। महर्षि अत्रि की पत्नी अनुसुइया, महर्षि वशिष्ठ की अंरुधति, महर्षि विश्वामित्र की पत्नी कुमुधवति, महर्षि गौतम की अहिल्या, महर्षि जमदाग्नि की रेणुका और महर्षि भारद्वाज की सुशीला थी।

इसका सीधा अर्थ हुआ कि रति और काम का सहयोग ही भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति में पूर्ण सहयोग है।

रामकृष्ण परमहंस को भी विवाह की आवश्यकता अनुभव हुई जब वे आध्यात्मिक प्रगति के उच्च स्तर पहुंच चुके थे। योगीराज अरविन्द घोष का साधना स्तर तो बहुत उच्च था, उन्होंने भी अपनी सहधर्मीणी माता जी मीरा को बनाया। जो उनके आश्रम की व्यवस्था संभाला करती।

मनुष्य शरीर में काम और रति का वास मूलाधार चक्र में होता है। मूलाधार चक्र ही मनुष्य के सारे क्रियाकलाप, उत्साह, स्फूर्ति, कोमलता, आकर्षण, दीर्घ जीवन का मूल आधार है।

काम और रति का सहयोग ही विश्व का आधार है, कुण्डलिनी शक्ति का आधार है, मनुष्य जीवन का आधार है, उल्लास का आधार है, हर्ष और प्रेम का आधार है, विकास का आधार है।

'प्रेम' दूसरे को जानना भी है
खुद को पहचानना भी है
गलत को गलत
सही को सही मानना भी है
किसी का दुख-दर्द सुनना
और अपना बताना भी है

'प्रेम' अपना हाथ देकर
किसी को उठाना भी है
पत्थर है कोई रास्ते में
तो उसे हटाना भी है

'प्रेम' जिन्दगी भर का हिसाब है
जोड़कर, उसमें कुछ घटाना भी है
प्रेम जितना जताना भी है
उतना छिपाना भी है
प्रेम में आँसू बहाना भी है
मुस्कराना भी है।

जब साधक में काम और रति का सहयोग उच्चतर स्थिति में होना प्रारम्भ हो जाता है तो उसके जीवन में कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है और वह आत्मानन्द की स्थिति में पहुंच जाता है। उसे ब्रह्म अनुभूति प्राप्त होने लगती है।

सार रूप में कहा जाये तो जीवन में रमण, आध्यात्मिक जीवन में रमण, शिव और शक्ति का रमण, काम और रति का ही रमण है। इसकी पूजा साधना, प्रत्येक साधक को अवश्य ही करनी चाहिये। जिससे वह अपने जीवन को उच्चत्तर स्थिति में ले जा सके। भौतिक जीवन की काम्य कामनाओं को पूर्ण कर सके और आध्यात्मिक जीवन की सकाम्य कामनाओं को पूर्ण कर सके। सदैव याद रखें, आपमें काम भाव भी है, रति भाव भी है और यह सदैव विद्यमान रहेगा।

रति अनंग साधना

प्रेम-आकर्षण-सम्मोहन

प्रेम की उपमा रसधार से की जाती है, जब तक प्रेम रसधार प्रवाहित होती रहती है, तब तक जीवन में आनन्द भी आता रहता है...

अपने आप पर विचार कीजिये, क्या आपके जीवन की प्रेमधार शुष्क हो रही है, क्या जीवन नीरस हो रहा है?

रति सौन्दर्य का उच्चतम स्वरूप है और अनंग पुरुष तत्व का उच्चतम स्वरूप है... दोनों का मिलन, आपके जीवन में निरन्तर रहे... प्रेम प्रवाह कीजीये, अपने जीवन में, प्रेम ही सर्वोत्तम रस है...

आधुनिक विज्ञान कहता है पुरुषों में काम शक्ति हेतु 'टेस्टोस्टेरोन हार्मोन उत्पन्न होता है और स्त्रियों में 'ऐस्ट्रोजन हार्मोन' उत्पन्न होता है तभी उनकी इच्छा शक्ति पर काम क्रीड़ा का उद्भव होता है। समय के प्रभाव से दोनों में हार्मोन कम होने लगता है इसी कारण चेहरे पर झाई, त्वचा का सिकुड़ना और वृद्धावस्था आती है।

ऋषि कहते है, सहस्रार में ही काम कला बिन्दु है जहां सोम और अग्नि का उद्भव होता है। यह सोम तत्व अर्थात् रति और अग्नि तत्व अर्थात् काम का जब उद्भव होता है तब मनुष्य ऊर्जावान, ओजवान और स्फूर्तिवान रहता है। इसलिये प्रत्येक पुरुष को अपने अपने अग्नि तत्व काम और स्त्रियों को सोम तत्व अर्थात् रति भाव को जाग्रत रखना चाहिये। इसी से शरीर की और मन की सारी व्याधियां समाप्त हो सकती है।

इसी कारण हमारे ऋषियों-मुनियों द्वारा दीर्घायु, आनन्द, मस्ती, अह्लाद, यौवन प्राप्ति हेतु अनंग रति साधना सम्पन्न की जाती थी।

इस साधना में **'अनंग यंत्र' 'रति प्रीति सप्तबिन्दु मुद्रिका' 'आनन्द मंजरी माला'** के अतिरिक्त पुष्प मालाएं, कपूर, इत्र, अगर, कुंकुम, आंवला, चंदन, पुष्प, वृक्षों के पत्ते, पीला वस्त्र, सफेद, काला, लाल व पीला रंग अर्थात् गुलाल और अबीर आवश्यक हैं। इस साधना में आठ प्रकार से कामदेव की पूजा सम्पन्न की जाती है जिससे पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो।

वसन्त पंचमी (25 जनवरी 2023) रति अनंग साधना को सम्पन्न करने का श्रेष्ठ मुहूर्त है, इसके अतिरिक्त **किसी भी सर्वार्थ सिद्धि योग** को भी सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना विधान

अनंग उपनिषद ग्रन्थ में कथन है कि साधना से पूर्व ही साधक को वृक्ष के पत्ते, डालियां ला कर उन्हें जल से धो कर निम्न मंत्र से पूजन करना चाहिए।

।।अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्री शोकनाशनः ।।

अर्थात् हे वृक्ष देव! मैं उस कामदेव की पूजा करता हूं, जिनकी पूजा से सब प्रकार के शोक नष्ट हो जाते हैं और
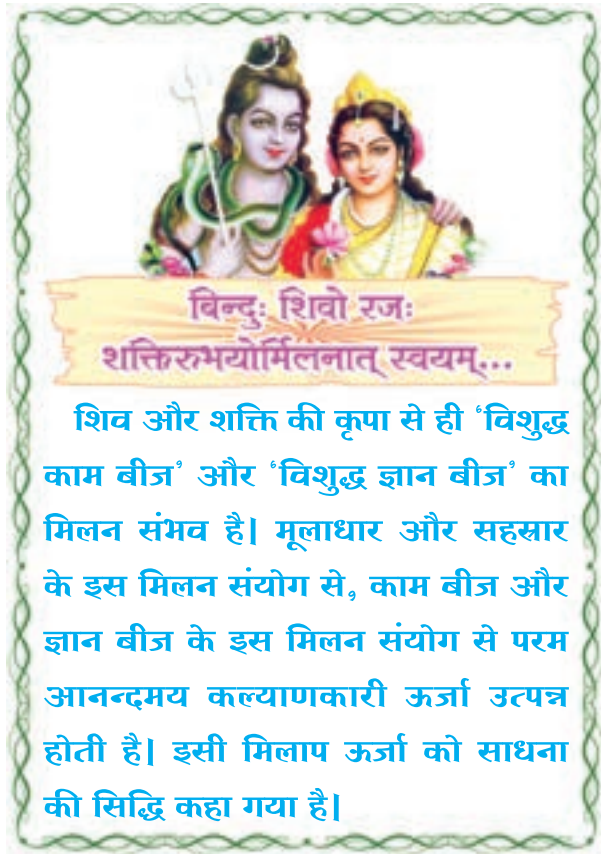
शिव और शक्ति की कृपा से ही 'विशुद्ध काम बीज' और 'विशुद्ध ज्ञान बीज' का मिलन संभव है। मूलाधार और सहस्रार के इस मिलन संयोग से, काम बीज और ज्ञान बीज के इस मिलन संयोग से परम आनन्दमय कल्याणकारी ऊर्जा उत्पन्न होती है। इसी मिलाप ऊर्जा को साधना की सिद्धि कहा गया है।

कामदेव रति उन शोक इत्यादि को नष्ट कर नित्य आनन्द से भर देते हैं।

इसे पीले कपड़े से ढंक कर अपने पूजा स्थान में रखना चाहिए।

अब साधक अपने सामने चावल की आठ ढेरियां बना कर उन पर **'आठ लघु नारियल'** स्थापित कर आठ कामों का पृथक पूजन करें, ये आठ काम हैं - **काम, भस्म शरीर, अनंग, मन्मथ, बसन्तसखा, स्मर, इक्षुधनुर्धर एवं पुष्पबाण** इनका पूजन क्रम निम्न प्रकार से है -

कपूर से - ***ॐ क्लीं कामाय नमः।***
गोरोचन से - ***ॐ क्लीं भस्मशरीराय नमः।***
इत्र से - ***ॐ क्लीं अनंगाय नमः।***
अगर से - ***ॐ क्लीं मन्मथाय नमः।***
कुंकुम से - ***ॐ क्लीं वसन्तसखाय नमः।***
आंवला से - ***ॐ क्लीं स्मराय नमः।***
चंदन से - ***ॐ क्लीं इक्षुधनुर्धराय नमः।***
पुष्पों से - ***ॐ क्लीं पुष्पबाणाय नमः।***

अब अपने सामने रखे हुए **अनंग यंत्र** तथा **'रति प्रीति मुद्रिका'** पर वृक्ष के पत्ते तथा माला निम्न श्लोक पांच बार पढ़ कर चढ़ानी चाहिए।

सर्व रत्नमयी नाथ दमिनीं वनमालिकाम्।
गृहाण देव पूजार्थ सर्वगन्धमयीं विभो।।

इसके साथ प्रसाद और सुपारी भी अर्पित करें तथा घी का दीपक जला कर दायीं ओर रख दें।

इस साधना का आधार - कामदेव गायत्री मंत्र, आकर्षण मंत्र है। ये मंत्र अत्यन्त ही प्रभावशाली हैं इन मंत्रों का जप इस पूरे पूजन क्रम के पश्चात् **'आनन्द मंजरीमाला'** से उसी स्थान पर बैठे-बैठे पांच-पांच माला मंत्र जप करना चाहिए। पहले पांच माला 'कामेदव गायत्री मंत्र' का जप करें। उसके पश्चात् पांच माला 'आकर्षण मंत्र' का जप करें।

कामदेव गायत्री मंत्र

।। कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय
धीमहि तन्नो अनंग प्रचोदयात्।।

आकर्षण मंत्र

।। ॐ कामायै रत्यै अनंगो वद आकर्षण
सम्मोहनाय फट्।।

इस प्रकार मंत्र जप के पश्चात् अपने सामने कामदेव तथा रति को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रणाम करना चाहिए कि जगत को रति प्रीति प्रदान करने वाले, जगत को आनन्द कार्य प्रदान करने वाले देव, आप को प्रणाम करता हूं तथा आप मेरे शरीर में स्थायी आवास करें एवं मेरी वांछित इच्छाओं को फल प्रदान करें। इस प्रकार जीवन में प्रेम, सौन्दर्य, सम्मोहन, आकर्षण की कामना करते हुए रति-अनंग साधना पूर्ण करें।

साधक को चाहिए कि वह प्रतिदिन एक माला कामदेव गायत्री मंत्र का जप अवश्य ही करें।

साधना के पश्चात् साधक यंत्र तथा मुद्रिका को पुष्प के साथ पीले कपड़े में बांध कर पूजा स्थान में रखें तथा किसी विशेष कार्य पर जाते समय इसे (पीले कपड़े सहित) अपने बैग अथवा अपनी जेब में रख सकते हैं।

प्रेम आकर्षण सम्मोहन हेतु रति अनंग साधना ही प्रभावकारी है। जिसमें सफलता निश्चित प्राप्त होती है, नियमित मंत्र जप अवश्य करें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 630/-

☆ गुरु शिष्यों में भेद नहीं करता, शिष्य हो या शिष्या हो, वे गुरु के लिए बराबर हैं।

☆ मैं तुम्हें पहचानता हूं, तुम्हारे शरीर को पहचानता हूं, तुम्हारे प्राणों को पहचानता हूं, तुम्हारी चेतना को पहचानता हूं। ...इसीलिए मैं जानता हूं कि साधना-मार्ग पर कौन सी साधना तुम्हारे लिए श्रेष्ठ है?

☆ यदि मैं तुम्हारा हाथ पकड़ूंगा तभी तुम पूर्णता तक पहुंच पाओगे, नहीं तो तुम भटक जाओगे, बीच रास्ते में ही मार्ग बदल दोगे। इसलिए मुझे तुम्हारा हाथ पकड़ कर रखना पड़ेगा और तुम चाहो भी तो उसे छुड़ा नहीं सकते।

☆ हो सकता है इस संसार के माया जाल में तुम फंस जाओ, मगर फंसने के बावजूद भी तुम्हारे और मेरे प्राणों के सम्बन्ध रहेंगे, उसको तुम भूल नहीं सकोगे क्योंकि हर क्षण, हर ध्वनि में तुम्हें मेरा ही स्वरूप दिखाई देगा। जब तुम दर्पण में अपने चेहरे को देखोगे तो उसमें भी तुम्हें मेरा ही प्रतिबिम्ब दिखाई देगा।

☆ मैं तुम्हें जीवन का वह रास्ता दिखाने आया हूं, जहां ठोकर पर सारी दुनिया को रखा जाता है, जहां संसार को ठोकर मारकर अपने आपको पूर्णता की ओर अग्रसर करने की क्रिया होती है। यह दीनहीन शिष्य बनने की क्रिया नहीं है, तुम्हें तो एक ऐसा विस्फोट करना है कि जीवन अद्वितीय बन सके।

☆ मैं उस प्रकार का गुरु नहीं हूं कि तुम्हें उपदेश देना चाहता हूं। मैं तो तुम्हें सही रास्ते पर अग्रसर करने की क्रिया कर रहा हूं। तुम नहीं भी चाहोगे तो भी मैं तुम्हें घसीट कर उस मार्ग पर खड़ा करूंगा ही, जिस पर अग्रसर होने पर पूर्णता प्राप्त हो सकती है।
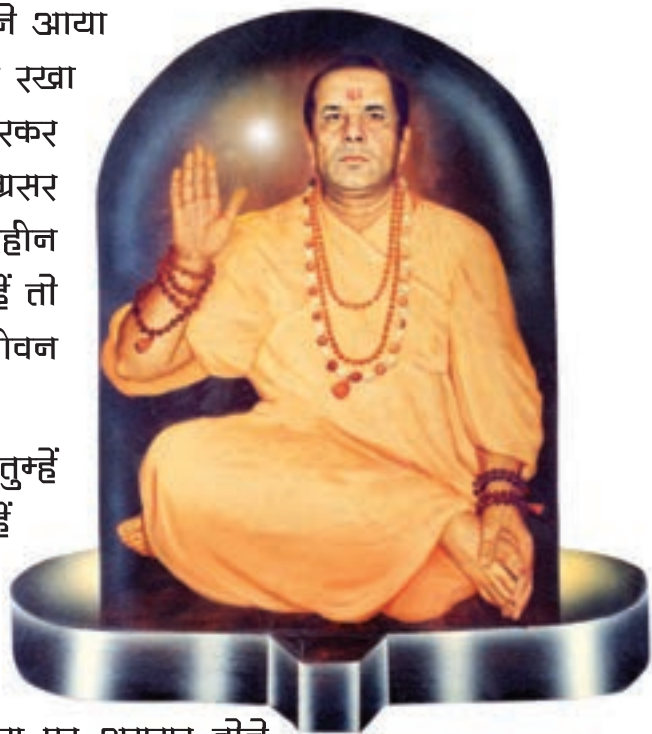
☆ मैं एक नवीन चेतना दे रहा हूं, एक नवीन ज्ञान दे रहा हूं, नवीन भावना दे रहा हूं कि इस बार तुम्हें रुकना नहीं है, मोह में नहीं पड़ना है इस बार तुम्हें पहाड़ से टकराना है, हिमालय से टकराना है। इस बार मैं तुम्हें उस घटिया रास्ते पर बढ़ने नहीं दूंगा, क्योंकि मैं तुम्हारे रक्त को पूर्ण शुद्ध कर रहा हूं।

☆ तुम्हारा, मेरा सम्बन्ध इस जन्म का नहीं है, पूरे पच्चीस जन्मों का सम्बन्ध है, और पिछले पच्चीस जन्मों से तुम्हारी बागडोर मैंने अपने हाथों में पकड़ रखी है।

☆ साथ ही मेरा स्वप्न तो यह भी है कि मेरे शिष्य उस पवित्र भाव भूमि को स्पर्श कर, अपने आध्यात्मिक जीवन को धन्य कर उसकी चेतना से ओतप्रोत होकर, वहां की स्निग्धता में तरल होकर, वहां की पावनता से पवित्र होकर वहां की ज्योत्स्ना से शुभ्र होकर पुनः इस समाज में लौटें और समाज को स्पष्ट और प्रामाणिक विवरण दे सकें। बता सकें कि बिना भौतिकता को छोड़े हुए भी कैसे जीवन के उस सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

☆ शिष्य को यह प्रदर्शन करने की या गुरु को बताने की आवश्यकता नहीं है कि वह कितनी सेवा कर रहा है। गुरु की पैनी दृष्टि तो हर समय शिष्यों पर बनी रहती है और गुरु कहीं भी हो उसे सब ध्यान रहता है कि कौन शिष्य क्या कर रहा है? अगर शिष्य समर्पण भाव से सेवा करता है तो अवश्य ही गुरु के हृदय पटल पर उसका नाम अंकित होता है।

☆ गुरु सेवा, गुरु में आस्था, गुरु के प्रति समपर्ण ये तीन ही माध्यम हैं गुरु के हृदय में उतरने के और जब ऐसा होता है तो गुरु स्वयं अपना सारा ज्ञान शिष्य में उतार देता है। इसलिए शिष्य बिना किसी और बात की चिंता किए निरंतर गुरु में अपनी आस्था दृढ़ करता रहता है।

☆ शिष्य के लिए गुरु आदेश से बड़ा मंत्र नहीं, गुरु सेवा से बड़ी कोई साधना नहीं तथा गुरु चरणों से बड़ा कोई यंत्र नहीं। वह केवल यह प्रतीक्षा करता रहता है कि कब गुरु उसे आज्ञा दें और कब वह उनकी आज्ञा का पालन करते हुए उनके बताए कार्य को पूरा करे।

☆ गुरु के हृदय को व्यर्थ छल, आंडबर, धन, दिखावे से नहीं जीता जा सकता। गुरु को शिष्य से कोई आकांक्षा नहीं होती। शिष्य केवल प्रेम के अश्रु ही अगर गुरु चरणों में अर्पित कर दे तो भी गुरु प्रसन्न हो जाते हैं।

☆ शिष्य गुरु को एक ऐसे दिव्य व्यक्तित्व के रूप में देखता है और उनकी पूजा आराधना करता है जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा आद्या शक्ति पूर्ण रूप से समाहित है।

☆ गुरु चरणों में स्वयं को पूर्णतः तल्लीन करके, गुरु ध्यान में खोकर, निरंतर गुरु मंत्र को जपकर तथा सदा गुरु सेवा में तत्पर होकर ही शिष्य उस अदभुत स्थिति तक पहुंचता है जब वह पूर्णतः उनसे एकाकार हो जाता है। वही ब्रह्मानंद की परम स्थिति है और उसी को प्राप्त करना हर शिष्य का धर्म और लक्ष्य होता है।

☆ शिष्य और गुरु का संबंध देहगत नहीं है, वह तो आत्मा का संबंध है, हृदय का संबंध है। शिष्य के लिए आवश्यक है कि उसके हृदय में सदगुरुदेव का बिम्ब सदा विद्यमान रहे जिससे वह आत्मिक रूप से सदा गुरु के सम्पर्क में रहे।

☆ गुरु चाहे कहीं भी हो शिष्य सदा उनका चिंतन मनन करता ही रहता है और जब वह ऐसा करता है तो स्वयं एक आत्मीय संबंध बनता है और उस तार के जुड़ने से वह सद्गुरुदेव के सूक्ष्म निर्देशों को पकड़ पाता है तथा उन पर अमल कर पाता है।

☆ जब गुरु हृदय में स्थापित हैं तो कुछ अन्य हृदय में प्रवेश कर ही नहीं सकता। फिर बाहर की दूषित वृत्तियां शिष्य पर हावी नहीं हो सकतीं क्योंकि गुरु रूपी अमृत निरंतर उस विष को अमृतमय बनाता ही रहता है। इसलिए शिष्य के हृदय पटल पर एक ही नाम अंकित हो - गुरु... उसके मुख पर एक ही शब्द हो - गुरु...।

शिव के बिना जीवन - 'विष'
शक्ति के बिना जीवन - 'रिक्त'

मनुष्य के भीतर, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, शिव और शक्ति की क्रिया तो अन्वरत ही चल रही है। व्यक्ति कभी भ्रमित हो जाता है, कभी चाहता है पूर्ण शांति और कभी चाहता है पूर्ण क्रिया।

दोनों का सायुज्य स्थापित करने की क्रिया ही जीवन में परमानन्द प्रदान करती है। यही महाशिवरात्रि का मर्म है। वैद्यनाथ धाम में मनोकामेश्वर शिवलिंग क्षेत्र में सद्गुरुदेव द्वारा महाशिवरात्रि के दिन दिया गया यह महान् ओजस्वी प्रवचन जिसका प्रत्येक शब्द शिव और शक्ति को अपने भीतर स्थापित करने के लिये है।

भोले भण्डारी सदाशिव महादेव ही पारमेष्ठि गुरु हैं। गुरु समान शिव और शिव समान गुरु की प्रार्थना से प्रारम्भ करते हैं –

गुरुः शिवो गुरु र्देवो गुरुर्बन्धुः शरीरिणाम्
गुरुरात्मा गुरुर्जीवो गुरोरन्यन्न विद्यते

जैसे शिव गुरु हैं, उसी प्रकार गुरु ही शिव हैं। शिव रूप में गुरु ही देव हैं। शिव रूप में गुरु ही इस शरीर की आत्मा है। गुरु ही बन्धु है। गुरु के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

इसीलिये तो गुरुरूप में पारमेष्ठि शिव विविध-विविध समयों पर जीवन का अन्धकार दूर करने के लिये गुरु रूप में शिष्य के जीवन में, शिष्य के ध्यान में आते हैं, और उन शिव की प्रार्थना में कहा गया है –

नमः शिवाय गुरवे नादविन्दु कलात्मने
निरंजन पदं याति नित्यं यत्र परायणः

शिव निरंजन हैं, दोष रहित हैं। संसार की सारी विद्याओं के स्रोत शिव हैं और सारी विद्याओं के गुरु शिव हैं।

अब साधक को, शिष्य को विद्या चाहिये। विद्या के बिना कल्याण नहीं हो सकता। शक्ति पूछ रही है कि साधक को ज्ञान कैसे होगा? और शिव कहते हैं कि –

गुढ़ विद्या जगन्माया देहे चाज्ञान सम्भवः
उदय स्व प्रकाशेन गुरु शब्देन कध्यते

तो संसार की गूढ़ विद्या ज्ञान को पाने का एक ही स्रोत है, एक ही चाबी है। वह है गुरु। कितनी भी कठिन विद्या हो, यदि कोई व्यक्ति श्रद्धापूर्वक गुरु शब्द का उच्चारण कर लेता है तो उसके समक्ष सारा ज्ञान प्रगट हो जाता है। उसी के लिये शंकराचार्य कह रहे हैं –

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम्।।

मैं श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप उस भवानी सहित शंकर की वन्दना करता हूं, गुरु की वन्दना करता हूं जो श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप हैं। जिनके बिना सिद्धजन भी अपने अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख सकते। ज्ञानमय शंकर रूपी गुरु की मैं वन्दना करता हूं, जिसके आश्रित होने से ही टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वन्दित होता है।

तो भाई, इतना जान लीजिये कि यह शिव वचन हैं, अज्ञान को दूर करने वाली शक्ति गुरु हैं और

यः गुरुः सः शिवः

यह अज्ञान समाप्त करने के लिये ही शिवरात्रि का महोत्सव है कि शिष्य विलीन हो जाये, अपना अभिषेक करे और गुरु के ज्ञान के साथ पूरी तरह जुड़ जाए।

आप शिवरात्रि किसलिये मना रहे हो? कि आज शिव के विवाह की रात्रि है। पर उससे पहले विशेष क्या घटित हुआ, ऐसे ही शिव और शक्ति का मिलन नहीं हो गया। सर्वप्रथम शक्ति तप कर रही है, शिव को पाने के लिये।

यहां राम की तरह शिव कोई पिनाक धनुष नहीं तोड़ रहे हैं। यहां शिव को समझाया, बुझाया जा रहा है। यहां विष्णु शिव को कह रहे हैं कि तारकासुर का वध करना है तो आपको शक्ति से विवाह करना ही पड़ेगा, पाणिग्रहण करना ही पड़ेगा। आपकी संतान से ही तारकासुर का अंत होगा।

अब विचित्र स्थिति हो गई। शिव को यह विवाह मंजूर नहीं। उन्हें एक शंका थी कि यदि उन्होंने पार्वती से विवाह कर लिया तो वह काम, जिसका उन्होंने दहन कर दिया था वह पुनः जाग्रत हो जायेगा। यदि काम जाग्रत हो गया तो सारे ऋषि-मुनि, देवता सकाम हो जायेंगे।

अब शिव कहते हैं कि यह काम ही सब पर अधिकार जमा लेता है और काम से ही क्रोध उत्पन्न होता है। काम से ही मोह बनता है और मोह से तप नष्ट हो जाता है।

अब भगवान तो ऐसा कहकर तप में लीन हो गये लेकिन विष्णु ने कहा कि - प्रभु आपको संसार में आना पड़ेगा। गृहस्थ जीवन से जुड़ना पड़ेगा। तो शिवरात्रि यह संदेश देती है कि काम नरक का द्वार नहीं हैं। काम तो गृहस्थ जीवन के स्वर्ग की ओर ले जाता है। गृहस्थ जीवन से ही संसार का भरण-पोषण, वृद्धि, उन्नति सब संभव होती है।

कथा यह है कि तारकासुर के अन्याय से सारे देवता संत्रस्त हो गये क्योंकि ब्रह्मा ने तारकासुर को वरदान दिया कि - तारकासुर का वध उस संतान से होगा जो शिवा और शिव की है। अब शिव ने कह दिया कि नहीं, मैं तपस्वी हूं, विष्णु समझा रहे हैं कि संसार के कल्याण के लिये आप शिवा से विवाह के लिये सहमत हो जाइये।

तो इस संसार के कल्याण हेतु, जगत के हित हेतु शिव राजी हो गये लेकिन प्रश्न आता है कि पार्वती शक्ति शिव के लिये क्यों तप कर रही है। शक्ति की तपस्या के बारे में भी आपने बहुत सुना है।

शक्ति का स्वभाव ही गतिशील है और कहा गया है कि **शक्ति चलः रजा**। जहां शक्ति है वहां गति है और जहां गति है वहां कामनाएं है। अब शिव का अर्थ है विश्राम, विराम, शांति।

तो फिर शक्ति क्यों बेचेन है? जिसका स्वभाव ही गति है वह विराम और विश्राम के लिये।

चलो इसका भी उत्तर जानेंगे। बचपन में आप एक खेल खेलते थे। एक तालाब के किनारे खड़े होकर तालाब में कंकर फेंकते थे और फिर एक भंवर जाल बनता था। शांत सरोवर में एक पत्थर के कारण लहरें बनने लग जाती थी। कामनाएं इसी प्रकार है। मन के सरोवर में हिलोर आती है, एक कामना उठती, दूसरी उठती है, तीसरी उठती है। जब तक मन को नहीं रोको कामनाएं उठती रहती हैं।

अब कामना में मन भी है, मना भी है, मनाएं भी है। पूरा करो तो नई कामना, नहीं करो तो मन मरता है।

वैसे सबसे महत्वपूर्ण बात है कि कामनाओं के कारण ही यह संसार गतिशील है। कल मैंने बताया था कि ब्रह्मा के चार पुत्र थे। कोई कामना नहीं। फिर रूद्र हुए।

एक बार भगवान ने दुःख से पूछा कि क्यों तू मेरे मनुष्यों के पास जाकर उन्हें सताता रहता है।

दुःख ने कहा कि भगवान मेरी क्या मजाल की आपके भक्तों के पास जा सकूं। अब वो तो स्वयं मुझे बुलाते हैं। वे असंतोष, क्रोध, मोह और ईर्ष्यावश अपना स्वभाव ऐसा बना लेते हैं और ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं कि मुझे जाना पड़ता है।

अब भगवान को लगा कि यह तो बात ठीक नहीं है। मनुष्य का स्वभाव ऐसे कैसे हो सकता है? जिसे मैंने रचा है कि वह खुद दुःख को आमन्त्रित करे?

ध्यान दें, दुःख क्या कह रहा है – मनुष्य अपनी इच्छाओं, कामनाओं और ईर्ष्या के वश मुझे आमन्त्रित कर रहा है।

एक उदाहरण देकर बताता हूं। भगवान और दुःख एक ऑफिस में गये। बड़ी बिल्डिंग, सैकड़ों लोग काम कर रहे थे। दुःख ने कहा कि भगवान ये देखो इस कैबिन में चार लोग बैठे हैं। तीन कर्मचारी और एक उनका बॉस। अब इनसे एक-एक वरदान लेने का वचन दे दीजिये। देखना फिर क्या होता है?

पहले ने कहा कि – मुझे तनखाह सहित एक महीने की छुट्टी मिल जाऐ। तथास्तु...

दूसरे ने कहा कि – मुझे दो महीने की छुट्टी पर विदेश भेज दें। तथास्तु...

तीसरे ने कहा कि – कुछ ऐसा इन्तजाम हो जाये कि मैं गोवा जाकर रहूं। कभी नौकरी के लिये वापिस आऊं ही नहीं। सारे खर्च, पानी का इंतजाम हो जाए।

बॉस से पूछा – बॉस ने कहा कि भगवान आप मुझे वरदान दो कि आधे घण्टे बाद ये तीनों वापिस अपने काम पर आ जाऐ। बहुत हो गये इनके ख्याली पुलाव। अब जो बॉस था अपने लिये कुछ और अच्छा मांग सकता था लेकिन उसने मांगा क्या? तीनों के वरदान नष्ट हो जाएं।

इसीलिये दुःख कह रहा है कि सब त्रस्त हैं। वे अपने दुःख से दुःखी नहीं हैं। दुःखी हैं असंतोष से, दूसरों के सुख से दुःखी हैं।

तो भाईयों शक्ति इसीलिये तप कर रही है कि उसे विश्राम मिल जाए, अनियन्त्रित कामनाओं को विश्राम मिल जाए। अब शांति तो शिव के अलावा और कहीं नहीं मिल सकती है।

तो यह शिवरात्रि कामनापूर्ति और शांति के मध्य समन्वय की रात्रि है। खास बात यह है कि इस समन्वय की रात्रि को काम का, मन्मथ का पुनर्जन्म हुआ। शिवजी ने तो समाप्त ही कर दिया था।

कहते हैं कि शिव और पार्वती का विवाह हुआ तो उनसे मिलने के लिये सरस्वती, लक्ष्मी, रति, सब देवीयां आई और रति ने शिव से प्रार्थना की। जैसे आपको पार्वती मिल गई उसी प्रकार आप काम को पुनः जीवित कर दीजिये।

बस भगवान शिव भोले भण्डारी ने कह दिया तथास्तु और आज शिवरात्रि से ही यह जगत सकाम हो गया। इसलिये आज की रात्रि को शिव से जो प्रार्थना करते हैं उस पर तथास्तु मिलता है, तो गृहस्थों के लिये यह शिवरात्रि का पर्व कल्पवृक्ष के समान है।

आज अभिषेक करो, गुरु के सान्निध्य में सब कुछ प्राप्त होगा क्योंकि आज शिव और शक्ति के एकाकार होने की रात्रि है।

कलियुग में शक्ति की स्तुति से ही सारे प्रयोजन सिद्ध होते हैं।

स्वयं शिव शक्ति से पूछ रहे हैं कि कलियुग में मेरे भक्तों का कार्य कैसे होगा?

देवि त्वं भक्त सुलभ सर्वकार्य विधायिनी
कलौ हि कार्य सिद्धयर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः

हे देवी! तुम भक्तों के लिये सुलभ हो और समस्त कर्मों का विधान करने वाली हो। कलियुग में कामनाओं की सिद्धि हेतु यदि कोई उपाय हो तो उसे अपनी वाणी द्वारा सम्यक् रूप से व्यक्त करो।

दुर्गा सप्तशती में यह उपाय आया है और शक्ति कह रही है कि, शिव आप पूछ रहे हैं तो मैं बताती हूं -

श्रुणु देव प्रवक्ष्यानि कलौ सर्वेष्ट साधनम्
मया तवैव स्नेहानाप्यम्बास्तुतिः प्रकाशयेत

शक्ति कहती है कि मैं तो अपने भक्तों का स्नेहवश ही कार्य सम्पन्न कर देती हूं। किसी के लिये मनाही नहीं है। इसीलिये तो हम शक्ति की मातृ रूप में पूजा करते हैं।

या देवी सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता

लेकिन फिर भी इस संसार में दुःख कायम है। शिव पुनः पूछ रहे हैं कि मनुष्य तो आपके पास असंख्य कामनाओं के लेकर आता है। आप उनकी कामनाएं पूर्ण करते हैं फिर भी सारे मनुष्य त्रस्त हैं, अशांत हैं। जो स्वस्थ है वह भी संतप्त है जो अस्वस्थ है वह तो संतप्त होगा ही। धनी भी दुःखी, निर्धन भी दुःखी, ऐसा कैसे?

शिव पूछ रहे हैं शक्ति से, आपके इस संसार में किसी को विश्राम है या नहीं है? चैन की नींद है या नहीं है?

शक्ति ने जो उत्तर दिया उसे मैं एक कथा के माध्यम से समझाता हूं। कहते हैं कि चन्दनपुर एक विशाल राज्य था और राजा तो अति धनवान होगा ही। जो मनुष्य कल्पना करता है, वे सारे सुख उसके पास थे। पर उसके पास नींद नहीं थी। सारी रात करवटें बदलते बीत जाती।

मेरा क्या होगा?

कहीं पड़ोस वाले ने आक्रमण कर दिया तो क्या होगा? कहीं धन समाप्त होगा तो क्या होगा? कहीं बीमारी आ गई तो क्या होगा?

रोज हजारों प्रश्न उमड़ते, क्या होगा?

एक दिन राजा ने घोषणा की कि -'मेरा क्या होगा?' इस प्रश्न का जो भी उत्तर देगा उसे मैं हजार मोहरें इनाम में दूंगा।

अब सब बुद्धिमान लोगों ने अपने-अपने जवाब दिये। राजा को किसी का जवाब पसन्द नहीं आया।

एक किसान आया और उसने कहा कि - राजा 'क्या होगा?' इसका एक ही उतर है जो 'शिवजी तय करेंगे वहीं होगा'।

आप तो हर स्थिति में शक्ति से प्रार्थना करें कि वह आपको ऊर्जान्वित रखें। आपको ऊर्जा निरन्तर प्राप्त होती रहे।

राजा को यह बात जंची। उसने किसान को इनाम देना चाह। पर विचित्र बात थी कि किसान ने मना कर दिया। पूछा धन नहीं चाहिये? किसान ने कहा कि - नहीं मैं सन्तुष्ट हूं। मैं रोज के चार आने कमाता हूं।

एक आना - कुंए में डाल देता हूं।

एक आना - उधार चुका देता हूं।

तीसरा आना - उधार देता हूं।

चौथा आना - मिट्टी में गाड़ देता हूं।

अब मेरी सब जरूरतें पूरी हो जाती है, कोई आपाधापी नहीं है इसलिये मुझे नींद अच्छी आ जाती है। मेरे पास तो क्या होगा? क्या होगा? ऐसा प्रश्न ही नहीं है, और वह किसान चला गया। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ, उसने अपने सभासदों से पूछा कि किसान क्या पहेली कह कर गया है चार आने की।

सबको समझ में नहीं आया। अब प्रजाजन में एक विद्वान ब्राह्मण ने जवाब दिया - वैसे भी शिव भोलों के यहां ही बसते है। उस भोले ब्राह्मण ने कहा कि चार आने का मतलब क्या है?

पहला आना - कुएं में डालना अर्थात् परिवार का भरण-पोषण करना।

दूसरा आना - उधार चुकाना अर्थात् मां-बाप को देना।

तीसरा आना - उधार देना अर्थात् संतान के भरण-पोषण विद्या पर खर्च करना अर्थात् भविष्य के लिये उधार दे देता है।

चौथा आना - जमीन में गाड़ देना अर्थात् बचा लेना।

तो यह बात समझ मे आ गई कि मनुष्य की कामनाएं पूर्ण होने के बाद भी वह विकल क्यों है? क्योंकि उसकी जिन्दगी में चार आने वाला हिसाब नहीं है। कभी कामनाएं इतनी भारी हो जाती हैं कि भविष्य के लिये बचाने वाले पैसे को वर्तमान में ही खर्च कर देता है। कभी वह इतना स्वार्थी हो जाता है कि उधार चुकाने की बजाय उसे वर्तमान कामनाओं पर खर्च कर देता है।

यह बैलेंस नहीं है, इसीलिये मनुष्य डरा हुआ रहता है। देखो, एक बात तो जान लो कि डर का निदान शिव के पास ही है।

शिवरात्रि को शिव यह आभास दिलाते हैं कि कामनापूर्ति के लिये प्रत्येक क्षण शक्ति मनुष्य के साथ है लेकिन उसे चलाने वाला तो शिव ही है।

आप कितना ही सोच विचार कर लें, लम्बी-चौड़ी योजनाएं बना लें, जो शिव ने तय कर रखा है वही होगा, क्योंकि शिव का अर्थ ही कल्याण है, शुभसंकल्प है।

जहां शिव है वहां कल्याण के अलावा और कुछ नहीं हो सकता है। पर भरोसा तो रखना पड़ेगा शिव पर।

देखो आप गाड़ी में जाते हो, बच्चा जिद करता है कि वह गाड़ी चलायेगा। आप उसे गोद में बिठा लेते हो। वह स्टेरिंग व्हील पर हाथ भी रख देता है। पर गाड़ी तो आपके ही कंट्रोल में रहती है, पिता के कंट्रोल में रहती है।

कभी बच्चा गुब्बारे की जिद करता है, आप गाड़ी उधर मोड़ देते हो। गुब्बारा दिला देते हो। बच्चे को लगता है कि उसने ही गाड़ी मोड़ी है। थोड़ी देर बाद आईसक्रिम देखकर उसकी जिद करता है। मां कहती है उधर गाड़ी घुमा दो, आप घुमा देते हो। कभी खिलौने की जिद करता है। उसे लगता है कि मैं ही चला कर सब जगह जा रहा हूं।

बच्चा मां को कह रहा है, मां-पिता को कह रही है और बच्चे की कामना पूर्ण हो रही है।

थोड़ी देर में पिता जान जाता है कि अब बच्चा घूमते, घूमते थक गया है, इसे सामान नहीं, विश्राम चाहिये। सामान तो ध्यान भटकाने के लिये है।

बस, यही हाल हम सबका है। चाहिये शांति और खरीद रहे हैं सामान।

तो शिवरात्रि विश्राम की रात्रि है, जहां कामनापूर्ति तो होती ही है पर उससे अधिक शांति भी मिलती है।

अब यह शांति और संतोष बाहर से तो मिल नहीं सकते हैं। मिलता तो वह राजा खरीद लेता और चैन से सोता। राजा तो एक दिन में पूरे जीवन का चैन खरीद सकता था लेकिन यह बाजार में थोड़े ही मिलता है।

शांति पाने के अलग-अलग उपाय है।

हम साधक बोलते हैं बम-बम और बुद्ध के शिष्य शांति के लिये मौन हो जाते हैं।

एक बार बुद्ध के पास एक व्यक्ति कई प्रश्न लेकर पहुंचा। बुद्ध ने कहा कि एक साल मौन रहो, तब जवाब दूंगा। यह उत्तर सुनकर बुद्ध के प्रमुख शिष्य सारीपुत्र हंस दिये। उन्होंने कहा कि - सालों पहले मैं भी ऐसा ही आया था। बुद्ध ने यही जवाब दिया। मैं एक वर्ष मौन रहा और उस समय मन में बहुत मंथन हुआ, बहुत मंथन हुआ। इतना मंथन हुआ कि प्रश्न ही समाप्त हो गये।

अब यह मौन रहना तो जबरदस्ती का तरीका है। शिव के यहां तो सब प्रश्नों के उतर हैं। शक्ति पूछ रही है, उसका जवाब है। राम पूछ रहे हैं, उसका उत्तर है। रावण पूछ रहे हैं, उसका उत्तर है और कई बार तो शिव उत्तर देते-देते स्वयं फंस जाते हैं।

अब भस्मासुर ने वरदान प्राप्त कर लिया भोले भण्डारी से और फिर उन्हें ही भस्म करने के लिये तत्पर हो गया।

जैसे रावण ने जिद कर ली कि शिवलिंग को लंका ले जाऊंगा। तब शिव माया करते हैं और यहां देवघर में शिवलिंग स्थापित हो जाता है।

कथा आप सभी जानते हो, फिर भी बताता हूं कि दशानन रावण भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिये हिमालय पर तप कर रहा था और एक-एक कर उसने अपने 9 सिर भगवान के चरणों में अर्पित कर दिये। 10 वां सिर काटने वाला ही था कि शिव प्रकट हुए और उसे वरदान मांगने के लिये कहा -

रावण ने तो **'कामनालिंग'** को ही लंका ले जाने का वरदान मांग लिया। भगवान ने कहा कि तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी। पर एक बात ध्यान रखना कि रास्ते में शिवलिंग को कहीं मत रखना, रख दिया तो मैं वही स्थापित हो जाऊंगा। रावण ने सोचा यह क्या मुश्किल हैं, हां भर दी।

अब शिव तो कैलाश छोड़कर जाने को राजी नहीं थे, तो उन्होंने एक लीला रची और वरूण देव को आचमन के माध्यम से रावण के पेट में घुसने को कहा। अब वरूण के प्रभाव से देवघर के पास रावण को लघुशंका जाग्रत हुई और वहां एक ग्वाले को देकर कहा कि तुम इसे सम्भालो, मैं अभी आता हूं। अब बैजू नाम का जो ग्वाला था वह वास्तव में भगवान विष्णु थे, और बैजू ने शिवलिंग को जमीन पर रख दिया। रावण आया देखा बड़ा क्रोधित हुआ उसे हिलाना चाहा, पर शिवजी जम गये और जम गये। तब से इस स्थान को वैद्यनाथ धाम, रावणेशवर धाम कहा जाता है। रावण को गुस्सा आया और शिव पर अपना अंगूठा गड़ा कर चला गया। इसकी भी एक लम्बी कहानी है। जब उसने शिव ताण्डव स्तोत्र बोला तब वह अपना हाथ निकाल पाया।

वैसे एक बात है तकलीफ में प्रार्थना बहुत जोर-जोर से निकलती है।

अब रावण चाहे तंत्र का कितना भी बड़ा ज्ञाता हो, था तो विद्यार्थी, चेला ही और गुरु कौन? शिव।

देखो, गुरू, गुरु ही होता है। गुरु से तुम जीत नहीं सकते हो, शिव से तुम जीत नहीं सकते हो।

जोर से बोलो हर-हर महादेव, क्योंकि शिव ही हरण करते हैं, जीवन के विष का। इसलिये शिव से प्रार्थना करते हैं।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

हे शिव, हमें बंधनों से मुक्त करो। हे शिव, जीवन को पुष्ट करो। हे शिव, हमें समृद्ध करो। हे शिव, हमें सुगन्धित कर दो। हे शिव, हमें अपने आश्रय में ले लो।

जो शिव के आश्रय में चला गया, वह समझ जाता है कि मेरी जिन्दगी की गाड़ी का स्टेरिंग शिव ने संभाला है। शक्ति उसे सब चींजें दिला देगी लेकिन शांति तो शिव से ही मिलती है। विश्राम शिव से ही मिलता है।

इसलिये शिव भक्त सदैव उत्सव में ही रहता है। बोल बम, बोल बम का जयकारा लगाता रहता है। केदारनाथ हो या अमरनाथ, देवघर हो या रामेश्वरम् यही जयकारा चलता है। शिव अभिषेक के लिये उत्साह से जाते हैं क्योंकि जहां शिव हैं वहां अमृत है और जहां अमृत है वहां जीवन है और जीवन भी कैसा शक्ति से भरपूर अब जहां शक्ति है वहां तो उत्सव ही है।

देखो, शिव योगी हैं और शक्ति के साथ हैं। उनके चरित्र-चित्रण में भी श्रृंगार है। वास्तविक श्रृंगार। शिव रुखे सूखे हैं शक्ति तपस्वीनी है। कभी वह दुर्गा रूप में है, कभी वह काली रूप में है।

विष्णु, लक्ष्मी, राम-सीता के चरित्र चित्रण में प्रेम तो है पर थोड़ा संकुचित है और शिव-पार्वती का प्रेम तो निराला है। अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में दोनों एक हो जाते हैं इसीलिये शिव की एक प्रार्थना में पूरी प्रकृति का वर्णन आया है।

हे शिव, आप महान् हैं, वह शिव जिनकी गोद में हिमालय सुता पार्वती है, मस्तक पर गंगाजी, ललाट पर द्वितीय का चन्द्र, कण्ठ में हलाहल विष, गले में शेषनाग, भस्म से विभूषित, देवताओं के श्रेष्ठ सर्वेश्वर, संकारकर्त्ता, सर्वव्यापक, कल्याण स्वरूप, चन्द्रमा के समान शुभ वर्ण वाले सदाशिव शंकर मेरी रक्षा करें।

और शिव भक्त किस बात से रक्षा की प्रार्थना कर रहा है। वह विष से रक्षा की बात कर रहा है, और वैसे भी विष का उल्टा शिव है। शिव ही विष मिटा सकते हैं। जहां शिव हैं वहां विष कैसे रह सकता है? और विष हमारे जीवन में क्या है? भय, चिन्ता, अवसाद, कामनाओं के पीछे दौड़ते जाना।

ऐसा करते-करते थक जाते हैं।

वैसे भी शिव तो पिता हैं, जो बिन मांगे ही दे देते हैं। पर एक बात यह है कि मां के माध्यम से ही पिता इच्छा पूरी करते हैं। इसीलिये तो शिव अभिषेक में आज हम शिव और शक्ति दोनों का का संयुक्त अभिषेक करते हैं।

एक विचित्र बात बताऊं, शंकराचार्य बड़े ही शिवभक्त थे और शिव स्तुति में बहुत रचनाएं लिखी। आद्या शक्ति की स्तुति में बहुत रचनाएं लिखी। उन्होंने प्रत्येक महाविद्या के सम्बन्ध में भी स्तुति लिखी। उनका शिव के सम्बन्ध में जो श्लोक है –

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिणौ।

मेरे जीवन में शिव और शक्ति विश्वास और श्रद्धा रूप में स्थापित रहे।

जिस प्रकार नारद भगवान विष्णु से विचित्र-विचित्र प्रार्थनाएं करते हैं। कई बार ताने भी देते हैं। यह भी एक प्रेम का स्वरूप है। जैसे आप मुझसे कई बार शिकायत करते हैं कि गुरुजी आप तो मेरी ओर ध्यान ही नहीं देते, मेरा काम ही नहीं करते। ऐसा कहकर आप मुझसे नाराज नहीं होते हो, आप तो एक प्रकार से उलहाना देते हैं और उलहाना भी उसी को दिया जाता है जिससे प्रेम हो। हर एक को थोड़े ही कहते हैं आप।

ऐसे ही शंकराचार्य शिव से कह रहे हैं।

अशनं गरलं फणी कलापो वसनं चर्म च वाहनं महोक्षः
मम दास्यसि किं किमस्ति शम्भो तव पादाम्बुज भक्तिमेव देहि!

हे शिव शंभु, आपसे क्या मांगू? आप तो जहर खाते हैं, मन किया तो भांग भी खा ली। उससे भी आपका मन उब गया तो आपने आग जैसा कड़वा धतूरा चबा लिया। वह फल आपसे मांगू तो मैं तो पागल हो जाऊंगा।

वस्त्र आपसे मांग नहीं सकता, आप दिगम्बर रहते हैं। कभी कभार हाथी की छाल ओढ़ लेते हैं और आभूषण तो क्या? आप सर्प की माला धारण किये हुए हैं। उसे देखकर मनुष्य के होश-हवास कूच कर जाते हैं।

भोजन, वस्त्र, आभूषण के बाद सांड पर सवार होते हैं, अब उसे देखकर सब किनारे हो जाते हैं। क्या पता कब सींग घोंप दे।

हे शिव, आपसे क्या मांगू? और कुछ तो नहीं मांग सकता आपसे, यही कह सकता हूं कि आप मुझे अपने चरण कमलों की भक्ति दीजिये।

क्यों चाहिये शिव की भक्ति?

शिवेति हदक्षरं नाम व्याहरिष्यन्ति ये जनाः
तेषा स्वर्गश्च मोक्षश्च भविष्यति न चान्यथा।

सभी शास्त्र कहते हैं कि जो लोग शिव नाम के दो अक्षर का उच्चारण करेंगे उन्हें भोग और मोक्ष दोनों मिल जायेंगे।

शिव क्या है? आत्म की सर्वोच्च स्थिति।

शिव क्या है? कुण्डलिनी जागरण।

और शक्ति क्या है? कि हमारा जीवन सुगन्धित हो, पुष्टिवर्द्धक हो।

शक्ति शिव से दूर हो ही नहीं सकती है। इसीलिये तो शक्ति तप कर रही है। शिव को पाने के लिये, क्योंकि शिव का अर्थ भोलापन है।

सारी दुनिया को शक्ति चाहिये और शक्ति को चाहिये शिव। अब सांसारिक नियमों के अनुसार चलेंगे तो पति धन-धान्य से युक्त वैभवशाली होना चाहिये लेकिन यहां तो हिसाब बिल्कुल उल्टा है।

शिव विवाह के समय, पाणिग्रहण संस्कार के समय पण्डित द्वारा लड़के की जात, पात, कुल, गोत्र पूछा जाता है।

शिव विवाह में तो सारे देवी-देवता, ब्रह्मा, विष्णु सब आये थे।

शिव से पूछा गया, नाम क्या है - 'शिव'।

पिता का नाम क्या है?, ब्रह्मा ने कहा मैं इनका पिता हूं।

पितामह कौन है? तो विष्णु ने कहा कि विष्णु पितामह है।

अब पूछा गया कि - प्रपितामह कौन है? सारी सभा मौन हो गई। किसी को इसका उत्तर सूझ नहीं रहा था तो हमारे भोले शिव ने कह दिया कि सबके प्रपितामह, दादा के भी बाप तो हम ही है। हमसे ऊपर कौन है?

और यह सत्य है। शक्ति इस सत्य से परिचित थी, कि भई सम्बन्ध बनाना है तो छोटे-मोटे से क्या बनाना, जो टॉप पर है उससे सम्बन्ध बनाया जाए। उससे सम्बन्ध बना लिया तो, बाकी सब से सम्बन्ध तो अपने आप हो जायेगा।

शक्ति ने सीधे शिव से सम्बन्ध बनाया।

एक व्यक्ति था जो बड़ी शेखी बघारता था कि वह फंला मिनिस्टर को जानता है, फंला अफसर को जानता है। एक बार गाड़ी लेकर परिवार के साथ निकला, अब गाड़ी में पेपर पूरे नहीं थे रास्ते में चैंकिंग के लिये रोक लिया। पत्नी ने कहा कि आप इतने मिनिस्टरों, अफसरों को जानते हो, उन्हें फोन करो, यहां हमारा एक ट्रैफिक वाला इन्सल्ट कर रहा है।

पति ने कहा कि भाग्यवान मेरी बात सुनो, क्या मैंने कहा कि - इतने सारे मिनिस्टर अफसर मुझे जानते हैं। अरे! जानना तो दूर मेरा नाम भी नहीं सुना है। मैंने कहा कि मैं उन्हें जानता हूं। मैं कैसे फोन करूं? यह जानना भी कोई जानना है।

इसीलिये आप लोग जो शिव को छोड़कर इधर-उधर हो रहे हो उनका हाल भी ऐसा ही है।

शक्ति को शिव चाहिये, क्योंकि जहां शिव है वहां शांति है। एक अबोध बालपन है, भोलापन है। साथ ही सर्वोच्च सत्ता है और परमात्मा की उपस्थिति का परिचय है, हमारा यह शिवलिंग। जिसका अभिषेक आज आप अवश्य सम्पन्न करेंगे।

तो शिवलिंग अर्थात् ज्योतिलिंग का प्रगटीकरण शिवरात्रि की रात्रि को ही हुआ था। प्रसंग है कि ब्रह्मा और विष्णु के मध्य विवाद हुआ की दोनों में कौन उच्च है। ब्रह्मा अर्थात् जो जन्म देते हैं अथवा विष्णु अर्थात् जो पालन करते हैं, विवाद का कोई अर्थ नहीं। तब दोनों के मध्य एक विशाल प्रकाश स्तम्भ उत्पन्न हुआ। उसकी गहराई और ऊंचाई नापने के लिये दोनों चल दिये। निश्चित हुआ कि जो इसकी ऊंचाई और गहराई नाप लेगा वह श्रेष्ठ है। विष्णु चले पाताल लोक लेकिन गहराई का पता नहीं चला। ब्रह्मा चले आकाश लोक और कह दिया कि मैंने इस ज्योतिलिंग के शिखर पर केतकी पुष्प देखे हैं। ब्रह्मा ने मिथ्या कहा, इस कारण ब्रह्मा की पूजा नहीं होती और केतकी पुष्प देवताओं को अर्पण नहीं किये जाते।

खैर, उस ज्योतिलिंग से शिव प्रकट हुए। जिसके दोनों ओर ब्रह्मा, विष्णु खड़े हो गये और शिवलिंग का पूजन उन वस्तुओं से किया जो दीर्घकाल तक रहती है जैसे - हार, वस्त्र, चन्दन लेप, धूप-दीप, छत्र, ध्वजा, छवर इत्यादि।

उनकी पूजा से स्वयंभू शिव प्रसन्न हुए और आशीर्वाद दिया कि आज का दिन शिवरात्रि कहा जायेगा और जो व्यक्ति शिवरात्रि के दिन शिवलिंग स्वरूप का पूजन, अर्चन और दर्शन करेगा। उसके धर्म में वृद्धि होगी।

यह प्रथम शिवलिंग जो अग्नि के पहाड़ की तरह है। जिस भूमि पर प्रकट हुआ उसे अरुणाचल कहा जायेगा और दवांग अरुणाचल में स्वयंभू शिवलिंग पर सूर्य की पहली किरण पड़ती है।

देखो जहां शिव होते हैं वहां सबकुछ अपने आप शुभ हो जाता है। सब कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। शिव शांत हैं, भोले हैं। पर जहां शिव हैं वहां शक्ति तो सिद्ध होती ही है। कार्तिकेय के रूप में विजय, गणपति के रूप में श्रेष्ठ बुद्धि, ऋद्धि-सिद्धि, शुभ-लाभ सब आ जाते हैं।

इस प्रकार एक गृहस्थ की कामनाओं का सारा संसार साकार हो जाता है।

वैसे एक बात आप ध्यान रखना, शिवलिंग केवल बाहर ही स्थित नहीं है। हमारे मस्तिष्क में शिवलिंग के आकार की एक ग्रंथि होती है जिसे पिनियल ग्रंथि कहा जाता है। बिल्कुल शिव के तीसरे नेत्र की भांति।

यही ग्रंथि मनुष्य में सोने, जागने और सक्रियता को प्रभावित करती है। ध्यान और साधना के माध्यम से, तप और तपस्या के माध्यम से हम इसे सक्रिय कर सकते हैं।

आश्चर्य की बात है कि ज्यादातर लोगों को अपने इस तृतीय नेत्र, पिनियल ग्रंथि की जानकारी ही नहीं होती। ज्ञान ही नहीं होता। जिस प्रकार शक्ति अपनी उपस्थिति की घोषणा नहीं करती, उसी प्रकार एक शिवोऽहम् कहकर मैं शिव हूं, शिव शांत हो जाते हैं।

शक्ति के लिये तो हम सब जानते हैं कि शक्ति सब प्राणियों में चेतना, बुद्धि, निद्रा, क्षुधा, छाया, तृष्णा, जाति, लज्जा, शांति, श्रद्धा, कांति, लक्ष्मी, वृत्ति, स्मृति, तुष्टि, भ्रांति आदि रूपों में है।

अब प्रत्येक प्राणी में शक्ति तो इतनें रूपों में प्रकट हो जाती है लेकिन शिव कहां हैं? शिवोऽहम् शिवोऽहम् कहा गया है। शिव किस रूप में प्रगट होते हैं। शिव परब्रह्म हैं तो यह परब्रह्म शिव क्या हैं?

इस सम्बन्ध में उपनिषद् में एक बहुत सुन्दर कथा आती है। गर्ग गोत्र में एक तेजस्वी बालक हुए जिनका नाम बालाकी था। उन्होंने वेदों का विस्तार से अध्ययन किया और वे अच्छे मीमांसाकार वक्ता भी थे। जगह-जगह शास्त्रार्थ करते, ख्याति बहुत अधिक हो गई थी। एक बार बालाकी काशी नरेश अजातशत्रु के पास पहुंचे और उन्हें कहा कि मैं आपको ब्रह्मज्ञान दूंगा। उस समय ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मचर्चा में राजा जनक का बड़ा नाम था। अजातशत्रु ने सोचा कि मुझे ज्ञान हो जायेगा तो मैं जनक से बड़ा हो जाऊंगा। उन्होंने कहा कि बालाकी आप मुझे ब्रह्मज्ञान दीजिये। पर यह आप बताईये कि आप किस ब्रह्म की उपासना करते हैं और वह ब्रह्म कहा स्थित है।

बालाकी ने कहा कि आकाश में जो सूर्य स्थित है, वह सर्वोच्च है। मैं उसकी ब्रह्म रूप में उपासना करता हूं।

अजात शत्रु ने कहा कि - यह सत्य है कि सूर्य जगत को रोशन करता है पर तपस्या के द्वारा सूर्य से भी उच्चतर स्थिति में जाया जा सकता है तो ब्रह्म और कोई उच्च स्थिति है। तब बालाकी ने कहा कि चन्द्र मण्डल में जो अन्तर्यामी पुरुष है वह ब्रह्म है।

अजात शत्रु ने कहा वह तो सोमराजा है। अन्न की आत्मा है और इसकी उपासना करने वाला तो अन्न आदि से सम्पन्न होता है।

तब बालाकी ने कहा कि विद्युत में ब्रह्म है। अजात शत्रु ने कहा कि नहीं। विद्युत में तो तेज है और इसकी उपासना करने वाला तेजस्वी हो जाता है।

आगे इसी क्रम में बालाकी ने मेघ, आकाश, अग्नि, वायु, जल का उदाहरण दिया और अजात शत्रु ने इनकी उपासना आदि का महत्व, फल और सीमा बता दी। बालाकी को लगा कि यह क्या हो गया? तो अजात शत्रु ने कहा कि मैं आपको एकांत में ब्रह्म से परिचय कराऊंगा और अजात शत्रु बालाकी को लेकर एक व्यक्ति के पास गये जो सो रहा था और कहा कि इसे सूर्य, सोम, मेघ, आदि नामों से पुकारो। वह व्यक्ति नहीं जागा। जब कहा कि - अब इसे इसका नाम लेकर पुकारो। वह व्यक्ति जाग गया।

अजात शत्रु ने कहा कि - अब बताओं कि वह जब सोया हुआ था तब कहां था? जिसे इसका ज्ञान है, वही ब्रह्मज्ञान है।

यही सत्य है। जब व्यक्ति विश्राम में होता है, सोया होता है तो वह शिव के पास होता है। शिव से ही उसे प्राण शक्ति मिलती है और जिसे इस शिवोऽहम् का ज्ञान होता है वही ब्रह्म ज्ञान है।

इसलिये ध्यान देना, यह शिवरात्रि शिव की रात्रि है क्योंकि शिव के आश्रय में ही विश्राम किया जाता है। दिनभर तो हम शक्ति के साथ निरन्तर क्रिया करते हैं। अच्छा, बुरा सब चलता रहता है लेकिन रात्रि में शिव अपने आश्रय में ले लेते हैं और हमारी क्रियाओं को विराम दे देते हैं और इस विराम और विश्राम से ही हम पुनः क्रिया के लिये तरोताजा हो जाते हैं। शिव के आश्रय में ही हम निद्रा युक्त होते हैं। छः घण्टे की निद्रा शिव का आश्रय हमें बाकी 18 घण्टे के लिये ऊर्जायुक्त कर देता है।

यह जो महाशिवरात्रि है यह शिव भक्त के नवीनकरण की रात्रि है।

आज अभिषेक करना, फिर मत कहना कि हमसे नहीं हो पायेगा।

आज मैं तुम्हें कह रहा हूं कि शिव के आश्रय में विराम है, विश्राम है और यही से पुनः नवीन ऊर्जा प्राप्त होती है। इसीलिये तुम दूध, जल, घी, शहद, शक्कर से शिव अभिषेक करते हो। इसीलिये तो हम महामृत्युंजय मंत्र का जप करते हैं हम शक्ति से सुगन्धित हो, पुष्टिवर्द्धक हो -

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

मैं आज इस गुरुपीठ से, व्यासपीठ से घोषण कर रहा हूं कि तुम्हें हारना नहीं है, हराना है। अपनी सभी कठिनाईयों को हराना है।

शक्ति का उपयोग करना है और शक्ति को खोलने की कुंजी तुम्हारे भीतर है। उसका नाम है हिम्मत।

सदैव याद रखना, जीवन में एक द्वार बंद होता है तो दूसरा खुलता है। दूसरा बंद होता है तो तीसरा खुलता है। ऐसी कोई गुफा नहीं है, जिसका कोई द्वार न खुलता हो।

There is always light at the end of tunnel

किस बात से घबरा रहे हो, ठक-ठकाओगे तो मालूम पड़ेगा द्वार है। स्थितियों से समझौता कर लिया तो वहीं के वहीं रह जाओगे।

एक लड़का था उसे जुनून था कि मुझे आगे बढ़ना है। चला भदोई, कानपुर से मुम्बई। छः भाई बहनों में चौथा। क्या कुछ नहीं किया? जीने के लिये। डेयरी की दुकान में काम किया, पानी पुड़ी बेची, फुचका बेचा, गुब्बारे बेचे। नजदीक आजाद मैदान में निरन्तर अभ्यास करता रहता। दुकान से उसे निकाल दिया क्योंकि उसके जुनून को कोई समझ नहीं रहा था, लेकिन उसने अपना जुनून बरकरार रखा, एक कोच ज्वाला सिंह की नजर पड़ी और उसने कहा कि मैं तुम्हारा ध्यान रखूंगा, तुम ऐसे ही मेहनत करते रहो।

जानते हो वह लड़का कौन है? यशस्वी जायसवाल, Under 19 World Cup Player

जीतने के लिए बस जुनून चाहिए
जिसमे उबाल हो ऐसा खून चाहिए
आसमां भी आ जाएगा जमीन पर
इरादों में जीत की जुनून चाहिए

तुम्हारे सारे संकल्पों में शिव स्थिर हो जाएं, आज गुरु रुप में शिव रूप में मेरा आप सब को आशीर्वाद है, आपके सारे प्रयत्न सफल हों, जो चाहोगे वही मिलेगा।

- परम पूज्य गुरुदेव नन्दकिशोर श्रीमाली जी
(महाशिवरात्रि साधना शिविर - 2020, द्वितीय दिवस,
बाबा वैद्यनाथ धाम, देवघर)

एक एव परो बन्धुर्विषमे समुपस्थिते।
गुरुः सकलधर्मात्मा तस्मै श्रीगुरवै नमः।।

जीवन में विषम परिस्थितियां आएं तो मात्र गुरु ही बन्धु हैं। धर्मात्माओं में अग्रणी गुरु हमें हमेशा सही राह दिखाते हैं। सही राह क्या है? वह जहां हार को येन केन प्रकारेण हरा दिया जाए या फिर जहां पर आत्मा की सुरक्षा के लिए, अपनी नीतियों को बनाए रखने के लिए अहंकार को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया जाए।

अहंकार को गलत क्यों माना गया हैं?

'अहं' 'कार' मैं की घोषणा है। 'मैं हूं' इससे बड़ा मेरा सच क्या है? एवं जिसे देखों वह आपके 'मैं' पर आघात कर रहा है। आपको नीचा दिखा कर वह अपनी ऊंचाई बढ़ाना चाहता है। आपके साथ बुरी तरह से बात करके आपको नीचे दिखा रहा है तो ऐसा करके वे अपने कर्म का खाता खोल रहे हैं।

जीवन में सम एवं विषम परिस्थितियां क्यों आती हैं?

दोनों का कारण आपकी जिह्वा है। एक मुहावरा है बत्तीस दांत के बीच जीभ कैसे रहती है?

जीभ बत्तीस दांत के बीच अपनी मुलामियत के कारण रहती है और वह चालाक और सजग है। जब दांत किसी भोजन को चबा रहा होता है, उस समय जीभ उससे दूर रहती है एवं यदि उसकी सजगता में थोड़ी सी भी कम होती है अथवा सजगता कम होती है तब जीभ कट जाती है।

काल हमेशा सबका चर्बण करने को अग्रसर है। कर्म अनुसार काल चुन रहा है किसे चबाएगा। जीभ की तरह सजग और मुलायम रहने से हम काल के हाथों बच सकते हैं, लम्बे समय जीवन का सुख ले सकते हैं। काल से बच कर रहना है। काल के आगमन की शुरूआत विषम समय की शुरूआत है।

अंधेरे में रहने वाले प्राणी को धीरे-धीरे अंधेरे से प्रेम हो जाता है। प्रारम्भ में वह अंधकार से निकलना चाहता है लेकिन धीरे-धीरे वह अंधकार का ही इतना आदि हो जाता है कि उसे प्रकाश से डर लगने लग जाता है...

यह स्थिति गुलामी की स्थिति है... इस परतंत्रता की स्थिति से निकालकर स्वयं को स्वतंत्रता की ओर गुरु ही ले जाते है...

यही अंधकार से प्रकाश की ओर की यात्रा है...

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योर्तिगमय

मृत्योर्मा अमृतगमय...

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

बैसाखियों के सहारे या दूसरों के कंधों पर बैठकर जिन्दगी के पुल पार करने में कोई मजा नहीं है...

साधक-शिष्य तो खुद के पैरों की ताकत से, खुद के ही आत्म विश्वास से जिन्दगी का पुल पार करता है...

''यह विश्वास ही हर सुबह सूरज की किरणों को नया दिन बनाता है...

यह विश्वास ही कामनाओं को हकीकत में बदता है...

यह विश्वास ही जो गिर कर भी उठने का हौसला देता है...''

- सद्‌गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

काल के प्रभाव से बचे रहना तो गुरु के शरण में रहें, महाकाल से गुरु का सीधा सम्पर्क है। गुरु के साथ बने रहिए सुरक्षित रहेंगे।

गुरुमध्ये स्थितं विश्वं विश्वमध्ये स्थितो गुरुः।
गुरुर्विश्वं न चान्योऽस्ति तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

गुरु में जगत है या जगत के बीच गुरु या फिर गुरु ही जगत है, इसलिए गुरु को नमन है।

क्या है जगत? बस मैं और तुम।

या तो जगत में हम सही होते हैं या फिर दूसरे होते हैं जो गलत होते हैं। गुरु बतलाते हैं कि दूसरा कोई है ही नहीं जो है, वह सब ब्रह्म का प्रतिरूप है।

पश्चिम को मसीहा दिखा ईसामसीह में, मसीह ही मसीहा है, परन्तु ईसा को सलीब पर टांग दिया गया। पर पूर्व की ओर मसीहा गुरु में देखा। गुरु को संन्यासी भी कहा गया है। वे भगवा रंग के वस्त्र पहनते है। भगवा पराक्रम का रंग है। गुरु ही संसार हैं। गुरु में सब कुछ है।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव

ब्रह्म का स्वरूप गुरु हैं। पुतली आंख में स्थित है या आंख की रोशनी पुतली से है। कारण कुछ भी हो, आनन्दभाव गुरु देते हैं। आनन्द का कारण गुरु हैं।

भवारण्यप्रविष्टस्य दिङ्मोहभ्रान्तचेतसः।
येन सन्दर्शितः पन्थाः तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

गुरु वह है जो राह दिखाएं...।

लेकिन क्या जरूरत है गुरु की, रायचन्द के देश में? इस देश में जहां लोग और कुछ दे या ना दे, फ्री की राय सबसे पहले देते हैं। एक-मिनट सुनो कह कर सारे मिनट खा जाते हैं। शुभ चिन्तक कहकर वे आपको गलत पथ पर भेज देते हैं क्योंकि वे खुद भटके हुए हैं। रास्ता वही दिखाए जिसे रास्ता मालूम है। जिसे मालूम नहीं वह किस रास्ते पर ले जाएगा?

यह विश्व जंगल की तरह है। जंगल में शेर से खतरा है एवं जगत में काल से। काल निर्मम है। उसके पास दया-माया नहीं है। उससे बचना है तो सिर झुकाकर जीना है। सिर खड़ा करेंगे तो उस सिर को कटने का डर है। गुरु कहते है, **'अहंकार'** देकर **'अहं अस्मि'** अपनाओं। यह मत सोचों **'मैं कर रहा हूं...'**, बल्कि यह सोचों **'मैं हूं...'**। अन्तर है दोनों में, कर्त्ता मान लेने से अपने आप कठोरता आने लगती है, जबकि आपको मुलायम रहना है, जिह्वा की तरह।

जीवन का अर्थ अश्वमेध है। बृहदारण्यक उपनिषद में मृत्यु रूपी ब्रह्म ने जीवन की प्रार्थना की परन्तु जीवन उसे मात्र फलने-फूलने के रूप में नहीं चाहिए था। बल्कि उसे जीवन पवित्रता से पूर्ण चाहिए। अश्व का अर्थ फलना-फूलना भी है, एवं मेध्य का अर्थ पवित्रता, इसलिए अश्वमेध का अर्थ पवित्रता के साथ जीवन का उन्मुक्त भ्रमण है।

जैसे अश्वमेध यज्ञ में एक वर्ष तक घोड़े को घूमने की आजादी है, वैसे ही हर साल मृत्यु रूपी ब्रह्म हम पर दयालु होकर, हमें वर्ष भर विचरण करने की, फलने-फूलने की आजादी देता है अर्थात् चार ऋतुओं के अनुरूप जीने की स्वतंत्रता, बढ़ने की अनुमति एवं वर्ष के बाद हमारे श्रेष्ठ

मेधा से प्रभावित होकर हमारे जीवन को अगले वर्ष पुनः इस चक्र का दोहराव करने देता है, लेकिन जीवन को हमेशा मृत्यु के समक्ष नतमस्तक रहना है, महाकाल के शरण में रहना है। कुछ भी पकड़कर नहीं रखना है क्योंकि जीवन स्वयं स्वल्प है।

काल से बच कर रहना है। सजग रहना है, अपने अस्तित्व को बनाए रखना है।

गुरु चरणों में सिर क्यों नवाया जाता है?

सिर भूमि पर उस अवस्था में होता हैं जब वह धड़ से अलग रहता है या फिर जब व्यक्ति दंडवत होकर नमन करता है। हर युग में काल दंडाधिकारी हैं। काल से बहस नहीं करते हैं। काल के दूत जीवन में विषम समय बनकर आते हैं। उस समय गुरु के चरण में शीश नवाने पर गुरु का आशीर्वाद मिलता है एवं काल से बचा जा सकता है क्योंकि काल तो अपना हिसाब-किताब निपटाने के लिए ऊपर देख रहा है, अभिमानी शीश को। गुरु चरणों में झुका हुआ शीश अहंकार विहीन है।

तापत्रयाग्नितप्तानामशान्तप्राणिनां भुवि।
यस्य पादोदकं गंगा तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

तीन प्रकार के ताप अधिआध्यात्मिक, अधिदैविक एवं अधिभौतिक हर व्यक्ति को तपा रहा है। ये ताप या तो शरीर का रोग है, ईश्वरीय विधान है।

इन तीनों तापों से परेशान व्यक्ति के लिए गुरु का चरण जल गंगा के समान शीतल एवं दुखों का अन्त करने वाला है। संसार में समस्याएं स्वाभाविक हैं। इन समस्याओं से जूझते-जूझते आत्मा तप्त होने लगती है, वह उस लक्ष्य को देख नहीं पाती है जिस हेतु उसका जन्म हुआ है।

आत्मा को शीतलता गुरु छांव में मिलती है क्योंकि गुरु उसके जीवन का भार ले लेते हैं। भार ले लेना आत्मा के लिए मुक्तिदायिनी क्षण है। आत्मा 'करना चाहिए' और 'काश किया होता' की दोनों सीमाओं से स्वतंत्र हो जाती है।

देखा जाए तो जीवन में सारे फसाद का कारण अवसाद है, यह दुख कि जीवन का सदुपयोग पहले कर लिया होता। लेकिन गुरु कहते हैं कि जब आंख खुले तब सवेरा। जो बीत गया, वह बीत गया। अग्नि की झुलस से गुरु का चरणोदक बचा लेता है।

गुरु प्रेम

प्रेम तोड़ता है, जोड़ता भी है
प्रेम उड़ना सिखाता है,
तो जड़े भी उगाता है
प्रेम छल विद्या है,
पर फिर प्रेम सत्य है
प्रेम दर्द देता है,
पर वह दर्द की दवा भी है
प्रेम झुकाता है, पर प्रेम ही उठाता है
ईश्वर का रास्ता प्रेम पथ से जाता है
प्रेम हृदय को तोड़-मरोड़, झकझोर देता है
प्रेम अगर वासना है,
तो उसमें कामना भी है
प्रेम में पाने की अगन है,
तो समर्पण की भी लगन है
दो से एक और एक से चार बनने की कला प्रेम है
रुठना प्रेम में होता है,
मनाने में भी प्रेम है
प्रेम जल की तरह सींचता है,
तो आग की तरह जलाता
परन्तु सच्चा प्रेम हर समय देना सिखाता है
ईश्वर का प्रिय निरंहकार बनाता है
प्रेम प्रार्थना है, प्रेम भजन है
पत्थर को ईश बना दे,
प्रेम में यह लगन है
प्रेम मन की उड़ान है
प्रेम जीवन के जीवित होने की पहचान है

चैत्र और आश्विन महीने की प्रत्यक्ष नवरात्रि को जहां धूम-धाम से मनायी जाती है, वैसा गुप्त नवरात्रि में नहीं होता है। गुप्त नवरात्रि में पूजा पाठ गुप्त रूप से किया जाता है। गुप्त नवरात्रि साधकों और तांत्रिकों के लिए बेहद खास होती हैं।

प्रत्यक्ष नवरात्रि में सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए साधना-पूजन किया जाता है जबकि गुप्त नवरात्रि का महत्व तीक्ष्ण शक्ति जागरण से है।

सही अर्थों में गुप्त नवरात्रि शक्ति साधनाओं द्वारा जीवन में उच्चता प्राप्त करने का मुहूर्त है, जीवन को लघुतम से विराट की ओर ले जाने की पर्व है। माघ गुप्त नवरात्रि **(22 जनवरी 2023 से 30 जनवरी 2023)** में जीवन के अधूरे पड़े पन्नों को साधनात्मक प्रयोग द्वारा नवीन रंगों से भर दें। **अन्तर्मन में छिपी तीक्ष्ण शक्तियों को जाग्रत करने का विशेष समय है, गुप्त नवरात्रि।**

तीक्ष्ण शक्ति : काली

काली का रूप अत्यन्त भयावह है। दरअसल, यह प्रतीक है, जैसे लोहा-लोहे को काटता है, वैसे ही मन में छुपे भय को भगाने के लिए काली की कल्पना एक भयावह रूप में की गई है। काली शक्ति का वह स्वरूप आप्तकाम शिव को सक्रिय करता है, जिसका प्रतीक काली के उस चित्रण में है जहां शिव के हृदय पर महाकाली का पैर है।

महाकाली शक्ति का वह रूप है जो दुखहारिणी हैं, संकट तारिणी हैं। इसलिए तीक्ष्ण शक्ति के रूप में काली का पूजन किया जाता है।

काली की महाकाल शक्ति के रूप में भी प्रार्थना की जाती है; काल के इस स्वरूप की साधना सम्पन्न करने से साधक में शक्ति का संचार होता है। काली अपने दोनों हाथों में अभय और वर मुद्रा धारण की हुई हैं अर्थात् वे अपने शुद्ध-सात्विक साधक को निर्भयता और वर प्रदान कर उसकी अभिलाषाओं को पूर्ण करती हैं। काली से वर प्राप्त कर साधक में दृढ़ता, निर्भयता, साहस और संकल्प शक्ति का उद्‌भव होता है।

प्रत्येक साधक के लिये अति आवश्यक है कि यदि वह तंत्र साधना में किसी भी प्रकार की उन्नति चाहता है तो उसके लिये काली साधना परम आवश्यक है। शक्ति का उपासक ही साधक है।

बाधाएं मनुष्य के जीवन में ही आती हैं। उन बाधाओं को समाप्त करने के लिये संकल्प, दृढ़ इच्छा शक्ति और साधना बल आवश्यक है। **गुह्य काली शक्ति के प्रहार से शत्रुओं, बाधाओं को समाप्त किया जा सकता है।**

इस प्रकार व्यक्ति के जीवन में पग-पग पर ऐसी तीक्ष्ण शक्ति की आवश्यकता होती है जिसके बल पर वह लोगों को अपनी आज्ञा अनुसार कार्य करने के लिये मनवा सके। इस गुप्त नवरात्रि में **सम्मोहन-आकर्षण-वशीकरण की तीव्र शक्ति प्राप्ति हेतु भद्रकाली साधना** सम्पन्न करनी ही है। जिससे आपके व्यक्तित्व का तेज तो बढ़े ही साथ ही साथ लोग आपकी आज्ञानुसार कार्य करें।

याद रखिये अगली नवरात्रि चैत्र में आयेगी। इसलिये इस गुप्त नवरात्रि में महाकाली की इन साधनाओं को करना आवश्यक है जिससे आपका यह नववर्ष और आने वाला विक्रमी नववर्ष श्रेष्ठ हो सके।

गृहस्थ जीवन का स्वरूप केवल पति-पत्नी का सम्बन्ध ही नहीं है, गृहस्थ जीवन का स्वरूप एक परिवार का स्वरूप है। जिसमें पति-पत्नी, बच्चे सभी सम्मिलित हैं। भगवान शिव का स्वरूप जहां आता है वहां स्वयं भगवान शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय यहां तक कि शेर, मोर, चूहा, नंदी सबको स्थान दिया गया है।

बच्चों का अस्वस्थ रहना, संतान की अकाल मृत्यु होना, बार-बार बीमार पड़ना, विद्या प्राप्ति नहीं होना, आकस्मिक चोट लगना, कार्य के प्रति एकाग्रचित्त नहीं होना ये सब क्रियाएं जब होती हैं तो गृहस्थ जीवन सुखमय नहीं, दुःखमय कहा जाता है। ऐसी स्थिति में एक ही उपाय है, वह है **'गुह्यकाली साधना'** करना। इसमें साधना करने वाले व्यक्ति को अपने बच्चों के नाम से संकल्प लेना चाहिये।

गुह्य काली कलियुग में कल्पवृक्ष के समान शीघ्र फलदायक एवं साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक हैं, जो साधक इस साधना एवं सिद्धि को प्राप्त कर लेता है, उसके जीवन में फिर किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। भोग और मोक्ष दोनों में सम्पन्नता प्राप्त कर, वह सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

वस्तुतः गुह्य काली तंत्रात्मक साधना होने के कारण साधकों के लिए एक अद्‌भुत एवं आश्चर्यचकित कर देने वाली साधना मानी गई है।

साधना विधान

- साधनात्मक दृष्टि से साधक को इसे **नवरात्रि** के किसी भी दिन अथवा नवरात्रि में संकल्प लेकर किसी भी **रविवार या मंगलवार** के दिन सम्पन्न करना चाहिए, यह एक रात्रिकालीन साधना है, तथा इसे रात दस बजे से एक बजे के बीच सम्पन्न करना चाहिए।
- इसके लिए प्राण-प्रतिष्ठित **सिद्ध काली यंत्र, पूर्ण चैतन्य काली हकीक माला** और **गुह्य काली गुटिका** का होना आवश्यक है।
- गुह्यकाली साधना में साधक लाल स्वच्छ वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा की ओर मुंह करके लाल आसन पर बैठ जाए।
- सामने गुरु चित्र स्थापित कर उनके साक्ष्य में इस साधना को सम्पन्न करे। साधक को चाहिए कि वह सर्व प्रथम गुरु पूजन कर हकीक माला से एक माला गुरु मंत्र जप सम्पन्न करे।
- उसके पश्चात् अपने एक गोल घेरे में 11 दीपक तेल के प्रज्वलित कर दें, तथा मन ही मन गुह्य काली का चिन्तन कर श्रद्धापूर्वक इस प्रयोग को सम्पन्न करें।
- साधक अपने बायें हाथ में **गुह्य काली गुटिका** और **काली यंत्र** को रखें तथा दायें हाथ में **काली हकीक माला** से निम्न मंत्र का 25 मिनट तक निरन्तर जप करें -

मंत्र

॥ ॐ क्रीं क्रीं गुह्य काल्यै क्रीं क्रीं फट्॥

- और इस प्रकार मंत्र-जप समाप्त कर गुरु आरती सम्पन्न करें। इसके पश्चात् उस समस्त सामग्री को किसी नदी, कुंए या मंदिर में विसर्जित कर दें।

इस साधना को सम्पन्न करते समय साधक जो भी इच्छा लेकर इस साधना में बैठता है तथा मंत्र-जप करता है, उसके मन की वह इच्छा निश्चित ही पूरी होती है।

वस्तुतः यह मंत्र अपने-आप में अद्वितीय, महत्वपूर्ण, शीघ्र सिद्धिप्रद और साधक की समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति में सहायक है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 450/-

गुप्त नवरात्रि - 22 जनवरी 2023 से 30 जनवरी 2023

भद्रकाली उच्चाटन साधना

सम्मोहन एवं वशीकरण

सम्मोहन और वशीकरण सिद्धि के बिना जीवन पशु की भांति है। आप अपने जीवन में किसी को प्रभावित नहीं कर सकते, अपनी बात को मनवा नहीं सकते, अपनी इच्छानुसार संचालन नहीं कर सकते तो व्यापार, गृहस्थी, नौकरी किसी में भी उन्नति नहीं हो सकती है। हम जीवन में सही मार्ग पर चलें लेकिन गधे की भांति बोझ ढोते हुए सिर झुकाए हुए जीवन नहीं जीएं। घर में, गृहस्थ जीवन में एक प्रभाव होना चाहिए, उसी प्रकार कार्यक्षेत्र में अपना एक विशेष आकर्षण तथा तेज होना चाहिए। इसीलिये काली के भद्र स्वरूप अर्थात् उत्तम स्वरूप की साधना श्रेष्ठ मानी गई है। **भद्रकाली का विवेचन शुभांगी रूप में आया है अर्थात् जो शुभ, कांतिवान अंग, आभा से युक्त हो। नवरात्रि में एकाग्रचित्त होकर शक्ति चक्र स्थापित कर भद्रकाली साधना से नेत्रों में तेजस्विता आ जाती है।**

गृहस्थ जीवन की समस्याओं में, विशेषकर आज के आधुनिक युग में एक विकटतम समस्या है पुत्र अथवा पुत्री का बुरी संगति में फंस जाना। जिसके कारण पारिवारिक मर्यादाओं को त्याग, अपनी पढ़ाई-लिखाई को भुलाकर वे व्यर्थ के क्रियाकलापों बुरी संगति आदि में संलिप्त हो जाते हैं।

ऐसी संगति से अगर उनका मोह भंग न कराया जाए, तो उनका जीवन ही बरबाद हो सकता है। इसी उद्देश्य को सिद्ध करता है, यह तीव्र भद्राकली उच्चाटन प्रयोग। रात्रि के दस बजे के बाद काले आसन पर दक्षिण की ओर मुखकर बैठ जाएं, सामने एक बाजोट स्थापित कर उस पर गुरुचित्र स्थापित करें और पंचोपचार गुरु पूजन सम्पन्न करें। उसके पश्चात् गुरुचित्र के सम्मुख ही चौकी पर **भद्रकाली गुटिका** को स्थापित करें तथा सामने तेल का दीपक जलाकर संकल्प करें। तत्पश्चात् **भद्रकाली उच्चाटन माला** से निम्न मंत्र का 15 माला मंत्र जप करें -

॥ ॐ क्लीं ऐं क्लीं उच्चाटनं कुरु कुरु फट्॥

मंत्र जप के पश्चात् गुटिका एवं माला दोनों को उस व्यक्ति अर्थात् पुत्र/पुत्री के सिरहाने, तकिये के नीचे अथवा उसकी किसी वस्तु के साथ रख दें। आप स्वयं अनुभव करेंगे, कि कुछ दिन बाद मां काली की कृपा से बालक/बालिका सही मार्ग पर लौट आये हैं। प्रयोग समाप्ति के सात दिन पश्चात् **'भद्रकाली उच्चाटन माला'** एवं **'भद्रकाली गुटिका'** को दक्षिण दिशा में घर से दूर जाकर फेंक दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 330/-

आपको याद दिलाने के लिये

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह नवम्बर 2022 में प्रकाशित है

बौद्ध तंत्र - वज्रयान वशीकरण साधना

(किसी भी शुक्ल पक्ष की अष्टमी और पूर्णिमा पर)

साधनात्मक क्षेत्र में वशीकरण क्रिया अत्यधिक महत्वपूर्ण क्रिया है। वशीकरण सम्बन्धी साधनात्मक प्रयोग बन्दूक की गोली से भी तीव्र प्रभाव करने वाले अचूक प्रयोग होते है। सामान्य शब्दों में कहा जाये तो वशीकरण किसी को अपने वश में कर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करने की एक असाधारण विद्या है, जिसे साधना, मंत्र जप द्वारा प्राप्त किया जाता है। बौद्ध तंत्र में वशीकरण सम्बन्धित गूढ़ एवं अचूक साधनाओं का वर्णन आता है। बौद्ध तंत्र अनुसार वशीकरण जीवन का एक अभिन्न भाग है, जिससे भौतिक संसार के सुखों की पूर्णता प्राप्त हो सकती है। वशीकरण से ही आन्तरिक आनन्द की पूर्ण अनुभूति होती है जो इच्छाएं होती है वह पूर्ण होकर भीतर ही भीतर आनन्द रस प्रवाहित करती है।

बौद्ध तंत्र के अनुसार वशीकरण क्रिया वज्रयान साधना, अष्टांगिक मार्ग की साधना है। वशीकरण साधना की पूर्णता होती है तो वशीकरण मंत्र के शब्द 'बीज', साधक के सामने मूर्तिमान होकर उपस्थित होते है और साधक के जीवन में विशेष प्रकार की देव शक्तियों का अविर्भाव होता है। साधक की मानसिक क्षमता और उसके साधनात्मक स्तर के अनुसार ये देव शक्तियां साधक में एक प्रभा मण्डल की सृष्टि करती हैं।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 485/- (नवम्बर 2022 पृष्ठ सं. 12)

सूर्य सम्मोहन दीक्षा

सूर्य सम्मोहन दीक्षा एक विशेष दीक्षा है जिसमें गुरु द्वारा शिष्य के नेत्रों में विशेष ज्ञान अग्नि का प्रवाह किया जाता है। इस दीक्षा से साधक के व्यक्तित्व का विकास होता है -

☆चैतन्यता में वृद्धि होती है। ☆ज्ञान-चेतना स्तर में वृद्धि होने से आने वाली बाधाओं को पहले ही भांप लेता है। ☆चेहरे पर एक ओज और प्रभाव आ जाता है, अपनी वाक् शक्ति से दूसरों को प्रभावित कर सकता है। ☆शरीर में फैल रही व्याधियों का अंत हो जाता है। सूर्य सम्मोहन शक्तिपात से शिष्य के देह में, चित्त में स्थापित रोग-शोक समाप्त हो जाते है। ☆जीवन में सदैव ताजगी और जीवन्तता का अनुभव होता है। ☆शरीर और मन में जो अग्नि स्थापित होती है, उसके द्वारा उसके शत्रु उसके समक्ष निस्तेज हो जाते है। ☆सूर्य सम्मोहन दीक्षा जीवन में शुद्धिकरण की क्रिया है। ☆दुर्भाग्य, दारिद्रय, पाप, ताप, संताप आदि समाप्त हो जाते है।

- सूर्य सम्मोहन दीक्षा (प्रति चरण) - 3100/- (नवम्बर 2022 पृष्ठ सं. 15)

आद्या शक्ति त्रिपुर भैरवी साधना

(मार्गशीर्ष पूर्णिमा - 8 दिसम्बर 2022 अथवा किसी भी शुक्ल पक्ष की तृतीया)

संहार और सृजन एक वर्तुल में सुचारु रूप से चलते रहते हैं और जहां भी संहार शक्ति की बात आती है, वहां देवी त्रिपुर भैरवी का जिक्र अवश्य होता है। सृष्टि के मूल में तीन शक्तियां इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति है। क्रिया शक्ति आद्याशक्ति त्रिपुर भैरवी का क्षेत्र है।

देवी त्रिपुर भैरवी रुद्र कालभैरव की शक्ति हैं। संहार करना रुद्र का कार्य है और भैरव भय का हरण करते हैं। तीनों लोकों में त्रिपुर भैरवी की सत्ता दुःखों और कष्टों का अन्त करती है। सभी को जीवन में संहार शक्ति की आवश्यकता है और यह शक्ति सकल ब्रह्माण्ड में देवी त्रिपुर भैरवी के अतिरिक्त अन्य किसी में नहीं है। देवी त्रिपुर भैरवी की उपासना से सभी बंधन कट जाते हैं। बंधनों को ही बाधा भी कहा गया है। जीवन में काम, सौभाग्य और आरोग्य सिद्धि के लिए देवी त्रिपुर भैरवी की साधना की जाती है। देवी का साधक कभी दुःखी नहीं रह सकता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 490/- (नवम्बर 2022 पृष्ठ सं. 22)

त्रिपुर भैरवी दीक्षा

त्रिपुर भैरवी दस महाविद्याओं में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं तीव्र स्वरूपा हैं, त्रिपुर भैरवी साधक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुरक्षा प्रदान करती हैं और इनकी कृपा से समस्त बाधाएं समाप्त हो जाती हैं। त्रिपुर भैरवी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है, कि वे प्रबल रूप से तंत्र बाधा का निवारण करती हैं। कैसा भी वशीकरण प्रयोग करवा दिया गया हो, कैसा भी भीषण तांत्रिक प्रयोग कर दिया गया हो, दुर्भावनावश वशीकरण प्रयोग कर दिया गया हो, गृहस्थ या व्यापार बन्ध प्रयोग हुआ हो तो उस पर प्रभावशाली नियन्त्रण 'त्रिपुर भैरवी दीक्षा' द्वारा ही संभव है।

बाधाओं, विपत्तियों, समस्याओं का समूल नाश करने तथा जीवन में नवनिर्माण हेतु गुरुदेव से महाविद्या त्रिपुर भैरवी दीक्षा सात चरण में अवश्य ग्रहण करें। शक्तिपात युक्त त्रिपुर भैरवी महादीक्षा साधक एक साथ 7 चरण में भी ग्रहण कर सकता है अथवा एक-एक कर भी ग्रहण कर सकता है।

- त्रिपुर भैरवी दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (नवम्बर 2022 पृष्ठ सं. 23)

मूलतः राहु ग्रह परिश्रम, शक्ति, हिम्मत, साहस, शौर्य, पापकर्म, व्यय, शत्रुता, विलासिता, चिन्ता, दुर्भाग्य, संकट के अलावा आकस्मिक धन, राजनीति, उच्च पद, विदेश यात्रा और तीक्ष्ण बुद्धि का भी कारक ग्रह है। आकस्मिकता राहु का विशेष गुण है। किसी कार्य को अचानक गति प्राप्त होना और किसी कार्य का अचानक गतिहीन हो जाना राहु प्रभाव का सूचक है जिसके कारण व्यक्ति घबराहट तथा असमंजस का शिकार होता है। राहु ग्रह प्रचण्डता, उत्तेजना, आवेश को भी प्रकट करता है।

मूलतः प्रभावी राहु ग्रह श्रेष्ठ योग अवश्य बनाता है, इस कारण राहु को अनुकूल बना लेना आवश्यक है। राहु से सम्बन्धित दो विशेष साधनाएं दी जा रही हैं। राहु का प्रभाव रोग नाश के लिए और शत्रुनाश के लिए विशेष प्रभावकारी रहता है और ये दोनों साधनाएं इसी से सम्बन्धित हैं।

शत्रुमर्दन राहु साधना

जीवन में तिल-तिल करके जीना नरक के समान है। एक ही शत्रु जीवन को विषाक्त बनाने के लिए काफी है इसलिए निरन्तर ऐसा प्रयास करना चाहिए कि हमारे सामने जब भी शत्रु प्रहार करें, उससे पहले ही हम सतर्क हो जाएं चाहे वह रोग रूपी शत्रु हो या कोई अन्य शत्रु हो, क्योंकि आज समाज में अकारण ही स्वार्थ के वशीभूत होकर जीवन के किसी भी मोड़ पर आप पर शत्रु आघात कर सकता है। इसलिए अपनी सुरक्षा के लिए प्रयास करते रहना चाहिए।

शत्रुमर्दन राहु साधना सम्पन्न करने के पश्चात् शत्रु कितना भी दुर्दान्त हो, उसकी पराजय निश्चित है। इसीलिये वर्ष में कम से कम 4 बार प्रत्येक साधक को राहु साधना अवश्य करनी चाहिये। जिस प्रकार दस महाविद्याओं में बगलामुखी, धूमावती और महाकाली हैं उसी प्रकार ग्रहों में राहु शत्रु निस्तेज करने और शौर्य का है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (नवम्बर 2022 पृष्ठ सं. 28)

रोगनाशार्थ राहु साधना

नौ ग्रहों में राहु एक मात्र ऐसा ग्रह है, जो मानव जीवन के समस्त रोगों को शांत एवं समाप्त करने में सक्षम है, चाहे वह रोग किसी भी वजह से हुआ हो, चाहे कोई ग्रह बाधा हो, और चाहे दैहिक अथवा भौतिक किसी भी प्रकार का रोग हो, रोगनाशर्थ राहु साधना से रोग समाप्त हो सकता है।

स्वास्थ्य सम्बन्धी चाहे मानसिक बाधा हो या शारीरिक बाधा हो, रोगनाशार्थ राहु साधना से स्वास्थ्य सम्बन्धी बाधाओं से साधक को छुटकारा अवश्य प्राप्त होता है।

...और यह स्पष्ट है, कि इस साधना को सम्पन्न करने से आने वाली विपत्ति, और बीमारियां पहले से ही समाप्त हो जाती हैं। एक प्रकार से देखा जाय तो यह आने वाले अशुभ समय को नियंत्रण में लेने की साधना है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 490/- (नवम्बर 2022 पृष्ठ सं. 30)

काल निर्णय

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं, और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक	श्रेष्ट समय
रविवार (दिसम्बर 4, 11, 18, 25) (जनवरी 1)	दिन 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 04:30 तक रात 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 02:00 तक
सोमवार (दिसम्बर 5, 12, 19, 26) (जनवरी 2)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:00 से 10:48 तक 01:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
मंगलवार (दिसम्बर 6, 13, 20, 27) (जनवरी 3)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
बुधवार (दिसम्बर 7, 14, 21, 28) (जनवरी 4)	दिन 06:48 से 11:36 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 04:24 तक
गुरुवार (दिसम्बर 1, 8, 15, 22, 29) (जनवरी 5)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:48 से 12:24 तक 03:00 से 06:00 तक रात 10:00 से 12:24 तक
शुक्रवार (दिसम्बर 2, 9, 16, 23, 30) (जनवरी 6)	दिन 09:12 से 10:30 तक 12:00 से 12:24 तक 02:00 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 02:00 तक
शनिवार (दिसम्बर 3, 10, 17, 24, 31)	दिन 10:48 से 02:00 तक 05:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
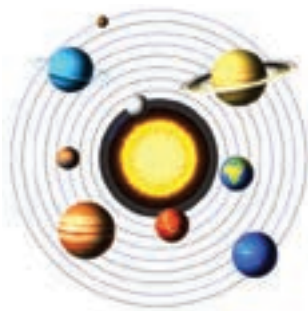
मेष

नवग्रहों की गणना से पता चलता है कि वर्तमान समय आपके लिए मिश्रित फलकारक है, समाज में जहां आपके मान सम्मान में बढोतरी होगी, लोग आपके कार्य का मान सम्मान करेंगे। वहीं दूसरी और परिवार में भाई-बहिनों, पारिवारिक सदस्यों से आपका मतभेद हो सकता है। मतभेद, विवाद, कलह आपके लिये अनुकूल नहीं हैं अतः परिवार में शांति बनायें रखें और आपसी सलाह, परामर्श से समस्याओं का समाधान करें। अनुकूलता सद्गुरुदेव से **'सूर्य सम्मोहन दीक्षा'** (नवम्बर 2022) ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 4, 6, 8, 18 हैं।

वृषभ

ज्योतिष की दृष्टि से पता चलता है कि इस माह आपका आर्थिक पक्ष मजबूत होगा जिससे आपके पारिवारिक और सामाजिक स्तर में सुधार होगा किन्तु आप अपने कार्य के प्रति दृढ़ इच्छा शक्ति रखकर कर्म करें और आलस्य को अपने से दूर रखे। संतान के भविष्य के लिए कोई महत्वपूर्ण निर्णय करना पड़ सकता है जिसका आपकी सन्तान को लाभ होगा, यात्रा इत्यादि पर जा सकते है। जो सुखद और मन को प्रसन्नता प्रदान कर सकती है। आप गुरुदेव से **'कमला महाविद्या दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 8, 13, 19, 20 हैं।

मिथुन

आर्थिक दृष्टि से यह माह अनुकूलता प्रदायक है। सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद हल होने से आपको मानसिक शांति और संतोष प्राप्त होगा। अपने व्यर्थ के खर्च को नियन्त्रित करें अन्यथा बाद में आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। माह के अन्त में समय की चाल प्रतिकूल रहेगी जिससे शत्रु पक्ष से परेशानी, स्थान परिवर्तन इत्यादि की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है, वाणी और क्रोध पर नियंत्रण रखे। गुरु कृपा प्राप्ति हेतु **'शक्तिमय गुरु साधना'** (अक्टूबर 2022) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 3, 7, 26, 31 हैं।

कर्क

परिवर्तन संसार का नियम है, इसलिए इस सत्य को आप स्वीकार कर ले और सकारात्मक सहयोग के साथ, सामंजस्य के साथ कर्तव्य पथ पर क्रियाशील रहे। आपके व्यक्तित्व और कार्य की लोग मुक्त कंठ से सराहाना करेंगे। जिससे समाज में आपके मान सम्मान में बढ़ोतरी होगी। साथ ही प्रेम प्रसंगों से अपने आप को दूर रखे अन्यथा मानसिक तनाव का सामना करना पड़ सकता है। जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रखें, लाभ प्राप्त होगा। आप अनुकूलता हेतु गुरुदेव से **'मातंगी दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां 8,17,24,31 हैं।

सिंह

नवग्रहों की गणना से पता चलता है कि आप वर्तमान में सकारात्मक सोच के साथ अपने आप को ऊर्जावान महसूस करेंगे। गृहस्थ जीवन के साथ-साथ बिजनेस व्यापार में भी आप सांमजस्य बैठाकर कार्य करेंगे, जिसका आपको लाभ भी प्राप्त होगा किन्तु कार्य स्थल पर आपको अपने अधीनस्थ कर्मचारी से सावधान रहना होगा क्योंकि वह अपने फायदे के लिए आपका बड़ा नुकसान कर सकते हैं। आप लाभ प्राप्ति हेतु इस माह **'भैरव साधना'** (अक्टूबर 2022) अवश्य सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 5, 12, 17, 28, 30 हैं।

कन्या

आप अपनी कार्य कुशलता और मेहनत से अपने आय के संसाधनों में वृद्धि करेंगे जिससे आपका आर्थिक पक्ष मजबूत होगा, और भविष्य के लिए आप निवेश करेंगे किन्तु एक विशेष बात का ध्यान आप रखे कि जिस शीघ्रता से धन आता है उतनी शीघ्रता से समाप्त भी हो जाता है, इसलिए आप व्यर्थ के खर्च को तत्काल नियन्त्रित करें। विद्यार्थी वर्ग को अपने लक्ष्य के प्रति लापरवाही नुकसान दायक हो सकती है। आप गुरुदेव से **'भगवती जगदम्बा दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 1, 12, 13, 30 हैं।

तुला

व्यक्ति को व्यापार अथवा कार्य विस्तार करना चाहिए किन्तु परिवार और अपने स्वयं की उपेक्षा करना उचित नहीं है, इसलिए आप कार्य स्थल और परिवार के बीच सामंजस्य बैठाकर क्रियाशील रहें, अन्यथा जीवन साथी के साथ व्यर्थ का तनाव हो सकता है। लम्बे समय से चले आ रहे विवाद के हल होने से आपको मानसिक शान्ति का अनुभव होगा। परिवार में मित्रों एवं परिचितों का आगमन होगा, मंगलकार्य सम्पन्न हो सकता है। आप **'भैरव साधना'** (अक्टूबर 2022) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 3, 12, 15, 28 हैं।

वृश्चिक

क्रोध वह अग्नि है जिससे सफलता भी असफलता में बदल जाती है, इसलिए आप अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखते हुए शान्त और संयमित रहे। सोशल मीडिया में ज्यादा व्यस्त न रहते हुए अपने कार्य पर ध्यान दें अन्यथा अपने उच्च अधिकारी के गुस्से का शिकार होना पड़ सकता है। शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए खान-पान को नियन्त्रित रखे। दूसरों के वाद-विवाद अथवा किसी समझौते से स्वयं को दूर रखें। आप **'शुक्र साधना'** (अक्टूबर 2022) साधना सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 5, 15, 21, 22 है।

धनु

सफलता प्राप्त करना हर व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए किन्तु कार्य और परिवार के बीच सामंजस्य बना कर कार्य करें अन्यथा मन और शरीर दोनों रूप से आप अस्वस्थ महसूस करेंगे। आप कोई भी निर्णय करते समय सावधानी रखे अन्यथा किसी साजिश अथवा षडयंत्र का शिकार हो सकते है। विद्यार्थी वर्ग को उनके परिश्रम के अनुरूप सफलता प्राप्त होगी। आर्थिक रूप से यह माह आपके लिये अनुकूलता प्रदायक रहेगा। आप अनुकूलता हेतु **'शत्रुमर्दन राहु साधना'** (नवम्बर 2022) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 14, 15, 18, 24 हैं।

मकर

नवग्रहों की गणना से पता चलता है कि वर्तमान समय मिश्रित फल कारक है आपके द्वारा किये गये प्रयासों का पूर्ण फल आपको प्राप्त होगा, भविष्य के लिए यदि निवेश की योजना है तो उसे क्रियान्वित करें समय आपके पक्ष में है, भविष्य में उसका आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा। परन्तु जीवन साथी के साथ व्यर्थ की बात को लेकर मानसिक तनाव होगा, गृहस्थ जीवन में तनाव कम करने का प्रयास करें। जीवन में अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'भुवनेश्वरी महाविद्या दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 2, 14, 19, 31 हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योग - 3, 4, 6, 7, 11, 12, 13, 18, 21, 25, 26, 30 दिसम्बर/1, 3, 4, 6, 8, 10 जनवरी ☆ **अमृत योग**- 3, 18, 21, 30 दिसम्बर ☆ **त्रिपुष्कर योग**- 20, 24, 25 दिसम्बर/ 3 जनवरी ☆ **रविपुष्य योग**- 11 दिस./8 जन. ☆

कुम्भ

नकारात्मक ऊर्जा व्यक्ति की सकारात्मकता को, उसके सोचने समझने की शक्ति समाप्त कर देती है, इसलिए आप जितना संभव हो नकारात्मक विचारों से दूर रहे। आर्थिक पक्ष को लेकर भी आपको सावधानी रखने की आवश्यकता है। व्यर्थ के खर्च को नियन्त्रित करें अन्यथा आर्थिक रूप से स्थिति डगमगा सकती है। संतान एवं जीवन साथी से प्राप्त सहयोग आपके आत्मविश्वास में वृद्धि करेगा। आप अनुकूलता हेतु **'त्रिपुर भैरवी साधना'** (नवम्बर 2022) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 13, 14, 20, 31 हैं।

मीन

व्यक्ति के साथ धोखा अथवा विश्वासघात तब ही होता है, जब आंख बंद कर किसी पर विश्वास किया जाए इसलिए आप इस विषय में सावधानी रखे। परिवार में भाइयों के साथ व्यर्थ की बात को लेकर तनाव हो सकता है, साथ ही अत्यधिक अनावश्यक खर्च आपकी चिन्ता को बढ़ा देगा। माह के अन्त में परिवार के साथ किसी धार्मिक यात्रा पर जा सकते है। साझेदारी में कार्य करने से पूर्व शुभचिन्तकों से विचार-विमर्श कर लें। आप पूज्य सद्गुरुदेव से **'बगलामुखी दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 2, 15, 22, 31 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

03	दिसम्बर	मार्गशीर्ष शु.-11	शनिवार	मोक्षदा एकादशी
05	दिसम्बर	मार्गशीर्ष शु.-13	सोमवार	सोम प्रदोष
08	दिसम्बर	मार्गशीर्ष शु.-15	गुरुवार	पूर्णिमा
19	दिसम्बर	पौष कृ. -11	सोमवार	सफला एकादशी
21	दिसम्बर	पौष कृ. -30	बुधवार	प्रदोष
23	दिसम्बर	पौष कृ. -30	शुक्रवार	अमावस्या
01	जनवरी	पौष शु. -10	रविवार	नववर्ष
02	जनवरी	पौष शु. -11	सोमवार	पुत्रदा एकादशी

आज क्या करना है - वराहमिहिर वचन

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जाएंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाए। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जनवरी - 2023

1. भगवान सूर्य को दूग्ध मिश्रित जल से अर्ध्य दे, मनोकामना पूर्ण होगी।
2. प्रातः 51 बार **ॐ ह्रौं जू सः** मंत्र का जप करें।
3. सरसों के तेल का दीपक लगाकर 5 बार **बजरंग बाण** का पाठ करें, विघ्न समाप्त होगा।
4. तीन कन्याओं को भोजन करवा कर, दक्षिणा प्रदान करें।
5. प्रातः गुरुदेव के चित्र पर पीले पुष्प अर्पित करें।
6. पौष पूर्णिमा **शांकम्भरी जयन्ती** के विशेष मुहूर्त में **'शांकम्भरी साधना'** (पृष्ठ सं. 26) सम्पन्न करें।
7. घर से बाहर कदम रखते हुए **'हुं फट'** का उच्चारण करें विजय प्राप्त होगी।
8. प्रातः 15 मिनट **'शिवोऽहं... शंकरोऽहं...'** का जप करें।
9. शिवलिंग पर 5 बिल्व पत्र अर्पित करें।
10. प्रातःकाल हनुमान मन्दिर में सरसों के तेल का दीपक प्रज्ज्वलित करें।
11. भगवान गणपति का पूजन मे दुर्वा अर्पित करें तथा लड्डु का भोग लगायें, मंगल होगा।
12. गाय को रोटी खिलाने के पश्चात ही भोजन करें।
13. आज चीटियों को चीनी और सफेद तिल अर्पित करें, ग्रह दोष समाप्त होगा।
14. मकर संक्रान्ति पर सद्गुरुदेव से **'सूर्य सम्मोहन दीक्षा'** प्राप्त कर **'सूर्य साधना'** (पृष्ठ सं. 24) सम्पन्न करें।
15. आज गुरुदेव से **'श्री महालक्ष्मी दीक्षा'** ग्रहण करें।
16. **'महाकाल गुटिका'** (न्यौ. 200/-) का पूजन कर शिव मंदिर में अर्पित कर दें, बाधा समाप्त होगी।
17. प्रातःकाल हनुमान चालीसा का सात पाठ सम्पन्न करें, मनोकामना पूर्ण होगी।
18. प्रातः **'गं' बीज मंत्र** का 108 बार उच्चारण करते हुए प्रत्येक बार एक अक्षत गुरु चित्र पर अर्पित करें।
19. तुलसी के पौधे का पूजन अवश्य करें।
20. अपने इष्ट का स्मरण कर दिन का प्रारम्भ करें।
21. गुरु जन्म दिवस पर विशेष गुरु पूजन कर गुरु सेवा का संकल्प करें।
22. **गुप्त नवरात्रि** (22 से 30 जनवरी) में **'महाकाली दीक्षा'** प्राप्त कर, **'गृह्य काली साधना और भद्रकाली उच्चाटन साधना'** (पृष्ट सं. 53) सम्पन्न करें।
23. प्रातः **श्रीप्रद** (न्यौ. 150/-) को चावल की ढेरी पर स्थापित कर पूजन करें, धन लाभ होगा।
24. हनुमान जी को मिष्ठान अर्पित करें।
25. बसंत पंचमी पर सद्गुरुदेव से **'सरस्वती ज्ञान दीक्षा'** (पृष्ठ सं. 14) ग्रहण कर **'सरस्वती साधना'** (पृष्ठ सं. 14) सम्पन्न करें तथा जीवन में रस प्राप्ति हेतु **'अनंग रति साधना'** (पृष्ठ सं. 32) सम्पन्न करें।
26. पांच घी के दीपक जलाकर गुरु आरती सम्पन्न करें।
27. दूध और सफेद मिठाई का दान करें।
28. अदरक खाकर घर से निकले कार्य सिद्धि होगी।
29. **सूर्य तेजस्विता कवच** (न्यौ. 5100/-) धारण करें, हर कार्य सफल होगा।
30. दर्पण में मुख देखकर घर से निकले कार्य पूर्ण होगा।
31. पांच लौंग एक पीले कागज में बांध कर दिन भर अपने साथ रखें, सफलता प्राप्त होगी।

2-3-4 दिसम्बर 2022

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

9-10-11 दिसम्बर 2022

जोधपुर दीक्षा कार्यक्रम, जोधपुर

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

24-25 दिसम्बर 2022

चिदानन्द सम्भूति गुरुत्व महादीक्षा, दिल्ली

शिविर स्थल: आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, दिल्ली-34

आयोजकः निखिल मंत्र विज्ञान - सम्पर्क - मनोज भारद्वाज - 9799988970, 011-27029044, 011-27029045○ 9799988915, 9799988930 ○

व्यस्थापक मण्डल : गोपाल सैनी-8607403300, 98961 87061○ अशोक खुराना-9416084960○ मनु शर्मा-9899161641○ एम.के.तिवारी-9891604043○ राकेश गुप्ता-9899654971○ इन्द्रपाल सिंह-9818383931○ दिल्लीः- शैलेन्द्र शर्मा-8527802323○ शैलेन्द्र शैली-9953280193○ राम आधार यादव-9810997021○ रामचंद्र शर्मा-9212522367○ राधेश्याम सिंह-9873592220○ नागेन्द्र प्रशाद-99906 25040○ अनिल पाण्डे-9953089533○ राज कटारिया-9971580278○ संजय डोगरा-9910259117○ रमेश मौर्या -99684970120 लालु यादव-9999436075○ मिथिलेश शर्मा-9536520110○ भगतरामजी-9958895646○ राधेश्याम शर्मा-9250659484○ श्याम भारद्वाज-98103 44041○ विनित शर्मा-9711500671○ अंकित शर्मा-8287909227○ **सिद्धाश्रम साधक परिवार सेवादल (दिल्ली):** शिवकुमार वन्टु-9210813418○ रामधन मौर्या-9990434929○ रामकिशोर मौर्या-9350970270○ मोहित-9811242975○ संदीप-90153561110○ हरियाणाः- सुरेश भारद्वाज-9416031474○ सत्यनारायण पटवारी-94674 48515○ सुभाष पहलवान-7404176431○ ओमपाल पंडित-8708809399○ डॉ. संजय (तरावडी)-89501 33383○ कमल गुप्ता-9416292576○ नरेन्द्र फौजी-97179 57482○ मंगल फौजी-7869994364○ बलवान मान-9034434711○ मुकेश कून्दू-9467043510○ सुनील जांगडा-9466271904○ बलवान सैनी-8930025465○ राजवीर-9813390032○ हरि भगवान सैनी-8930624624 ○ सुभाष सैनी-8053107799○ रमेश-90506 68957○ समसेर-89501411930○ विकास सिन्धवानी-79884 69049○ वेदप्रकाश वत्स-9466080005○ सतपाल रोहिल्ला-9541186056○ हरिश काकू-8708812336○ मदन धीमान-9991104688○ मानचन्द-9991104688○ ओमप्रकाश-7206060473○ कर्ण-9671320501○ सुभाष बन्सल-9896024196○ दयानन्द मितल-9416133059○ अशोक वर्मा-8708851436○ विकाश कुन्डु-9466541733○ सत्यवीर-9911191298○ सन्दीप सैनी-9813236354○ रामवीर शर्मा-9813265725○ ओमप्रकाश-8607110977○ महेन्दर-9991619506○ विक्रम सैनी-9255267415○ सोनिया-8708183226○ नवीन-8307002155○ कृष्णलाल खुराना-9416545994○ राहुल शर्मा-9034520932○ देवेन्द्र-9729707449○ विकाश सैनी-8950300643○ दीपक कून्डु-8930049627○ अंकुश सैनी-7248186494○ रणवीर निखिल○ **फरिदाबादः** दलवीर सिंह-9313733404○ भीखम सिंह○ एन.सी. सिकरवार-8920121618○ **पंजाबः** अशोक शर्मा-9888839585○ दीपक नन्दा○ दिनेश कपुर (अमृतसर)○ **जम्मु कश्मीरः** तिलकराज -7006488482○

विजय शर्मा-9417060121○ **हिमाचलः** शैलेन्द्र शर्मा (शैली) -9736050900○ ज्ञानचन्द रतन-9418090783○ जगरनाथ नड्डा-9418255835○ अनन्तराम शास्त्री-98166 93447○ डॉ. यशपाल चन्देल-9418156701○ संजय महाजन-9816110257○ राम कुमार-9816862834○ अतुल चौधरी (मनाली)-9736751155○ गौरव कश्यप-9459815508○ शिवओम नड्डा-9418005016○ गोवर्धन शर्मा-9816093510○ डॉ. सुमन रत्न-9418257738○ चैन सिंह-9805650078○ संध्या(धर्मशाल)-9805668100○ आशीष वशिष्ठ (नूरपुर)-8894043472○ रिंकू ठाकुर-941877184○ उत्तम सिंह-8219738150○ धर्मदेव-9805820830○ राजेश-8219200398○ राजकुमार सेन (बल्द्वाधार)-98829660596○ राजेन्द्र शर्मा (हमीरपुर)-9418103439○ निखिल सैज (कुल्लु)-9816432441○ संजीव शर्मा (शिमला)-9816297663○ अयोध्या प्रसाद-9418180707○ जीवन लता-9418046965○ अजय शर्मा एस.डी.ओ.○ **उत्तरप्रदेशः** फौजदार सिंह-9450731922○ कैलाश सिंह-8948100959○ एच.एन सिंह बिसेन-94153 18363○ दिनेश मिश्रा-9307637084○ शक्तिप्रताप सिंह-9838925957○ प्रेमचन्द चौरासिया-8960692053○ संजय मिश्रा-7417401235○ वी. के. श्रीवास्तव-9005160009○ उदय सिंह-9795405047○ शिवओम वाजपेयी-99562 17431○ साधना सिंह-8009962319○ हरिओम वाजपेयी-9936064764○ तरुणेन्द्र मुन्ना पाण्डे-7860190328○ गजराज सिंह-9935699073○ रामबाबु सक्सेना-92081 78719○ वीरेन्द्र शाही-9936858949○ रामसिंह यादव-9455505925○ उषा शर्मा-9005440235○ मांगेराम उपाध्याय (सहारनपुर)○ **सिद्धाश्रम साधक परिवार उत्तराखण्डः** हरिश बलोनी-9412382620○ उमर उपाध्याय-9319034214○ लक्ष्मण सिंह भण्डारी-9557184336○ **राजस्थान- झुन्झुनुः** शीशराम निखिल-9982477513○ कैलाश मलजी-9950456359○ अजय स्वामी-77348 66902○ विमलेश कंवर-9783622600○ विजेन्द्र सिंह-9887917475○ विकाश-9928874627○ जितेन्द्र सिंह-9887917475○ भरत सिंह-7850927697○ प्रकाश जांगिड -9694595266○ बनवारी लाल वंजी-9672173921○ कृष्ण निखिल○ विरेन्द्र सिंह○ जयपुरः- लोकेन्द्र सिंह-9783875328○ प्रकाश-9887647389○ मुकेश-98292 40713○ **चुरूः** शर्मिला सहारण-9602591054○ दुर्गाराम-9636712029○ आशाराम-9667175564○ नरेन्द्र-98287 82819○ **सीकरः** जय भगवान बाटू-9413011823○ पंकज शर्मा-9001995797○ संजय टेलर-9829731283○ **बांदाः** धीतरलाल प्रजापति-7597475117○ **मध्यप्रदेश-बैतुलः** एस.एल. ध्रुर्वे-9993155686○ आई.डी. कुमरे-94253 04226○ जनकलाल मवासे-9425361761○ राजश्री निखिल-7869380172○ हर्षा मनोज अग्रवाल-96694 32694○ **सागरः** उर्मिला सोढ़ी-9407264037○ **विदिशाः** राज कुमार अरोडा-8827509809○ देवना अरोडा-9406917770○ विष्णु पाटिदार-9826231345○ अशोक प्रजापति-9425074794○ विजय गुप्ता-94250584119○ गणेश मोदिया○ कौशिक श्रीवास्तव-9425183471○ धर्मेन्द्र जैन○ **छत्तीसगढ़ः** के.के. तिवारी-8319536266○ सुदामा चन्द्रा-9425528381○ संतोष सोनी-9826516245○ बबला उपाध्याय-9301480008○ अमृत साहू-9575030512○ ध्रुव चंद्राकर-9981133056○ अर्जुन नापित-7000892411○ मंजुला शंकरराव शिंदे-83198316005○ रविकांत धीवर-9399992946○ खेमराज पटेल-9300432171○ ताराचन्द साहु-7389687194○ खेमराज वर्मा○ टोषण साहू-8120885555○ हेम कामरे-9826542537○ **उडिसाः** सुभ्रांषु दास-9437146388○ दीपक जोशी○ सुधीर पधि○ राजेश पुरोहित○ टुटु साहु○ प्रदीप पटजोशी○ पंचानन नायक○ अचुला घोस○ गिरधारी पुरोहित○ बासुदेव परिधा○ प्रताप मांझी○ सर्वेश्वर पानीधर○ लिंगराज साहू○ विकास अग्रवाल○ अरविंद प्रुसेठ○ उदयसिंह मांझी○ केसरी साहू○ रामचंद्र साहू○ सुधरी पाठी○ घनश्याम बगर्ती○ स्मिता घीवेला○ बासुदेव रथ○ राजलक्ष्मी○ भीमसेन बेहेरा○ प्राणबन्धु प्रधान○ विकाश अग्रवाल○ लिंगराज साहु○ रमाकांत साहू○ संजय पंडित○ पंचानन नायक○ **बिहारः** गणेश कुमार-9334753839○ राधा मोहन-

9113772042○ **हाजीपुरः** रंजीत कुमार-9472986040○ उमाशंकर सिंह-6206237800○ **समस्तीपुरः** शैलेन्द्र दास-9939989400○ शोभा○ सुनील भट्टाचार्य-9006341081○ **कटिहारः** नरेश निखिल-8935971688○ **मधुबनीः** राजेन्द्र कुमार लाल-6201795387○ मुरलीप्रसाद यादव-9934493085○ **दरभंगाः** पुरुषोत्तम सिंह-9472422946○ **मोतिहारीः** ललन कुमार-8809243897○ **सिद्धाश्रम साधक परिवार झारखण्डः** वाई.एम. मुर्ती-7461066316○ अभय वर्मा-9835563288○ भगवान दास-99341167533○ अमृत दिगार-9934825748○ पी.एन. पाण्डे-9431127345○ विजय कुमार झा-9431379234○ मदन मोहन अग्रवाल-6207127487○ हरिकिशोर मण्डल-9431275415○ अमर कुमार बाउरी○ प्रताप बाउरी-7667465013○ **सिद्धाश्रम साधक परिवार महाराष्ट्रः** राजेन्द्र सेंगर-9823019750○ मधुकर उरकुडे○ के.एन.मोहाडीकर-9518571899○ अशोक लडके-9422150848○ प्रदीप चौधरी○ खुशाल दखने○ गजानन मांगझलकर○ शुक्राचार्य ठाकरे-9423606893○ देवीदाश पारधी○ प्रशांत परसोडकर-9372762957○ गुणवंत खोवागडे-9922278882○ हरीहर गाबडे, सतीस गीवागडे○ केवलराम काले-9767389694○ प्रकाश नंदवंशी○ विजय मंडले○ भावराव ठाकरे○ सुरेश गुरव○ भारतचन्द्र बघेल-7972157240○ पद्माकर युटे○ रूपचन्द्र रावत○ **कनार्टक -बैंगलौरः** चन्दर दामोदरन-9845041395○ **तमिलनाडु-चैन्नईः** बालाजी श्रीनिवासन-9789090679○ बाला विश्वनाथ - 9884684689○ बालाजी रंग नाथन○ **नेपालः-** गोपीकृष्ण कोइराला-977-9841305182○ वेदप्रसाद धिमिरे-977-9611068912○

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

6-7-8 जनवरी 2023

जोधपुर दीक्षा कार्यक्रम, जोधपुर

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

14-15 जनवरी 2023

सूर्य सिद्धि मकर संक्रान्ति महोत्सव

शिविर : कौशल कला मण्डल मैदान, बलांगीर, उड़ीसा

आयोजकः सुभ्रांशु कुमार दास-9437146388○ दीपक जोशी-9437194898○ पंचानन नायक-9556087755○ सुधीर पाढ़ी-9437708805○ घनश्याम बगर्ती-9438642786○ स्मिता घिवेला-9861344093○ बासुदेव रथ-9337274632○ भिक मेहेर-7978263834○ सेशदेव मेहेर-8249797279○ टूटू साहू-9937244073○ भीमसेन बेहेरा-9437487391○ अरबिंद प्रुसेठ-9437051506○ अच्युता घोसी-8328981665○ राजेश पुरोहित-9178545558○ प्रदीप पटजोशी-8249280419○ राजेंद्र पात्र-9337058855○ मुना पुरोहित-9437362692○ मुकेश अग्रवाल-7008932073○ सुधांसु बराड़-7008414553○ गिरिधारी पुरोहित-9777822139○ अशोक प्रधान-8018740844○ दीपक भोई-9938567969○ राम चंद्र साहू -9178403086○ बुलु मेहेर-9938856291○ प्रेमा नंद साहु-8093476746○ सुशांत पाणीग्राही-7978994436○ सुकृ बाग़ -9777204200○ देब दत्त जोशी-9556011999○ जदुमणि पाणीग्राही-7750019619○ सरबेस्वर पाणीग्राही-9668603088○ उदय सिंह माझी-9078412413○ चरण सिंह माझी-789431 5763○ भास्कर राव सिंधे-9938595727○ सोहन कुमार साहू-9438000561○ भबानी धरुआ-7749862523○ अन्नपूर्णा साहू-9938072929○ राज लक्ष्मी नायक-943734 8215○ बिकाश अग्रवाल-9438845935○ प्रताप माझी-8658595367○ देवेंद्र पंडा-8260622747○ दुर्गा नायक-9178222555○ बासुदेव परीडा-9437001098○ अनिल महापात्र-9438525977○ देबदत्त रॉय-

9776635097○ संजय पंडित-8895342930○ शिव बिरंचि नारायण त्रिवेदी-9668554683○ सिनु सुंदर पाढ़ी-9437105178○ बुद्धि वंत साहु-9348047210○ बिकाश बगर्ती-9668269064○ भीष्म साहु-8895571301○ ज्योति रंजन नायक-7683912645○ शिशिर महाकुर-9827346841○ संतोष साहु-008048707○ कामदेव बारीक-9178294019○ सुशील कुमार तांडी-9437330687○ तापस रंजन पाण्ड्या-9861281829○ गोपाल पधान-9437330904○ गोपाल रणा-7681882456○गजिंद्र साहु-7008594414○ धीरेन्द्र पटेल -9937388182○ अजय त्रिपाठी-7852971429○ मनोज माइती-7008282977○ सुबिन चंद्र भोई-9668462269○ सुब्रत बोहिदार-7978047344○ वरून थानापति-8895966805○ प्रकाश पाढ़ी-7008279278○ आर्त रणा-9437513743○ देवाशीष पाणीग्राही-6370906597○ त्रिबिक्रम जोशी-9937547046○ श्रद्धाकर पाणीग्राही-9438454626○ आनंद कुमार जोशी-97772 21494○ शिव राम साहू-9937304628○ नरेंद्र नेगी-97772 24519○ अमित अग्रवाल-6370959552○ आनंद कुमार पुटा-9437707147○ लिंगराज साहु-9437240341○ देबेस बाग़-8455892664○ मनोज कुमार मिश्र-7008384740○ तपन दास-9437330392○ चैतन्य माझी-9668792823○ बिजयामाला बाग़-9439506456○ रंजीत सुना-96681 48917○ कामभू चरण बाग़-7978370873○ रमा कान्त साहू-9777468778○ कुंज साहु-9583302626○ अनिल अग्रवाल-7873506051○ सेशदेव माझी-7894687814○ मिना गहिर-7735705441○ सोभा लाकरा-9437647362○ स्वप्नेस्वर पाणीग्राही-9777040689○ उत्कल केशरी साहू-7008810511○ अनिल नायक-9777055103○ सूर्य साहु-8658525244○ भविष्य हाती-9777662903○ खुमान लाल साहु-9938121888○ भागीरथी बाग-7873449523○ गोपमणि पाणीग्राही-9437220597○ मीनाक्षी दास-8763531968○ उपेंद्र भोई-8249989740○ रघु नाथ हंस-8018362403○ प्रदीप कुमार नाथ-8917365471○ हेमंत कुमार कांटा-9938884196○ अनंत कुमार पटजोशी-7978956515○ दिव्य रंजन पंडा-8884164492○ दुष्मंत नायक-9668363996○ श्रीधर ठाकुर-9938629787○ मानस रंजन बेहेरा-8917691522○ अभिषेक पटजोशी-9937674721○ अजित अग्रवाल-9668462269○ सुजीत कुमार राउत-7682809888○ रमेश पंडा-8249580839○ आकाश मुंड-7008405464○ सनंत जोशी-8917540251○ चंद्र शेखर बानूआ-8917540251○ दुष्मंत नायक (जूनागढ़)-7008564026○ मुना सतपथी-7008732100○ डम्बरू घर नाग-7853825524○ प्रमोद देवता-9437054469○ कुमार मणि महापात्र-9937710573○ गोपाल अग्रवाल-9937514800○ सरोज पुरोहित-9658427924○ प्राण बंधू पधान-9937993770○ अमन मल्लिक-9777216764○ प्रमोद साहू-6372113530○ संतोष बेहेरा-9853375256○ भवानी शंकर पधान-9938621657○ दुर्योधन धल-9861342106○ विद्या विनोद देउरा-9178441513○ विरेन सेठी-9938770772○ रमेश सिंह-8908940647○ जमुना सिंह-9556949329○ बुलु माहार-9658128544○ रमेश रॉय-9937634179○ प्रशांत प्रधान-9938991886○ राजेंद्र महापात्र-9439335311○ डोलमानी पधान-8917540097○ विजयानन्द पधान-9437489479○ मिलु महार-7978850324○ सुबल साहु-7894994557○ राहस साहु-8249152854○ शिवाराम साहु-9853085123○ बासुदेव बेहेरा-9437353332○ राजू पोढ़-9439173677○ कुना बैठारू-700802394○ भागीरथी गरतीया-985327 6929○ विजय कुमार पानी-9178534850○ गोलकबिहारी प्रधान-8018129394○ राजकिशोर गिबिला-7205209207○ परमानन्द प्रधान-8018187464○

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

27-28-29 जनवरी 2023

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

यह प्रकृति तुमसे निरन्तर काम तो करवाती रहेगी, बिना कर्म के तो किसी भी प्रकार की गति नहीं है तो फिर क्यों न हम ऐसे श्रेष्ठ कर्म करें, जिससे हमारी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और आध्यात्मिक उन्नति हो। क्यों न हम उस श्रेष्ठ मार्ग का चयन करें जिस मार्ग पर चलने से हमें सन्तुष्टि प्राप्त होती हो, श्री और यश में वृद्धि होती हो।

गुरु जब जीवन में आते है तब वे अपने शिष्य के जीवन के आर-पार देखते है और उसे बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी बनाते है। वे ज्ञान देते है कि तुम्हें अपनी प्रवृत्तियां अन्तर्मुखी करनी है। तब साधक प्रवृत्ति से निवृत्ति के मार्ग की ओर अग्रसर होता है। बाह्य संसार में बिखरा हुआ, भौतिक सुख उसे लोलुप नहीं बनाता। उसकी लालसाओं में वृद्धि नहीं करता। गुरु सम्भूति उसे आत्मानन्द की ओर ले जाती है। इसीलिये गुरु कहते है -

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत...

गुरु जड़ से चेतन और चेतन से आत्मसुख चिदानन्द - आनन्द मग्न भाव की ओर ले जाने की क्रिया सम्पन्न करते है। यही सद्गुरु का शक्तिपात होता है।

- जो साधक स्वयं आरोग्यधाम दिल्ली नहीं आ सकते है वे साधक चिदानन्द सम्भूति गुरुत्व महादीक्षा प्राप्त करने हेतु अपना नवीनतम फोटो WhatsApp 9602334847 के माध्यम से जोधपुर कार्यालय भेज दें।
- दीक्षा न्यौछावर 2100/- रुपये आप 'निखिल मंत्र विज्ञान' के SBI A/c. No. - 32677736690 अथवा UBI A/c. No. - 310001010036403 में जमा करा कर Pay-In-Slip की छाया प्रति जोधपुर कार्यालय को WhatsApp कर दें।
- दीक्षा के सम्बन्ध में विशिष्ट निर्देश आपको व्यक्तिगत रूप से जोधपुर कार्यालय (9799988915, 9799988930) और दिल्ली कार्यालय (9799988970) द्वारा प्रदान किये जाएंगे।

RNI No. RAJBIL/2010/34824
Postal Registration No. Jodhpur/329/2022-2024
Licensed to Post without Prepayment
License No. RJ/WR/WPP/13/2024
Monthly Posting Date 23-24 Nov 2022
Printing Date 16-17 Nov 2022
Posting office at Jodhpur RMS
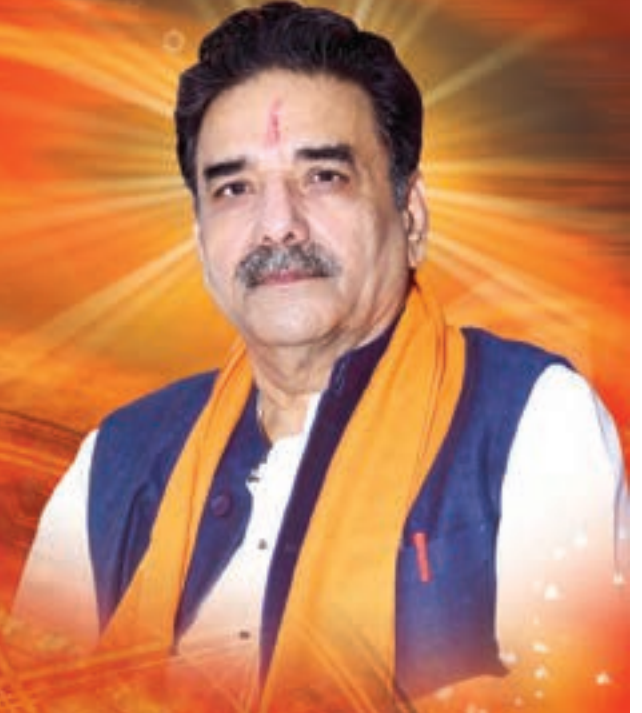
माह : दिसम्बर और जनवरी में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

स्थान जोधपुर

9-10-11 दिसम्बर

6-7-8 जनवरी

पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंचकर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान आरोग्यधाम (दिल्ली)

2-3-4 दिसम्बर

27-28-29 जनवरी

प्रेषक -

निखिल मंत्र विज्ञान

14 A, मेन रोड हाई कोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर - 342001 (राज.)
फोन: 9799988915, 9799988930
9799988937, 9799988938
SMS & WhatsApp - 9602334847
Web Add. - nikhilmantravigyan.org
facebook.com\nikhilmantravigyan.org

Email - nmv.guruji@gmail.com

दिल्ली कार्यालय - आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34,
फोनः 9799988970, 011-27029044, 011-27029045, टेलीफैक्सः 011-27025184